हमारे महान लोग

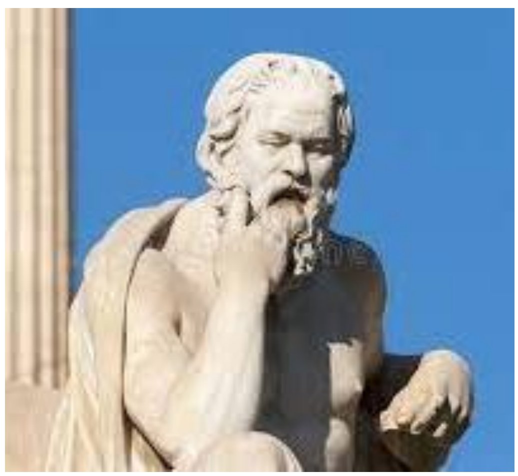

चयन सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Hamare Mahan Log (Our Great People)
Cover Page picture : Socrates
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read more such stories : www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

इतिहास सीरीज़ 5

हमारे महान लोग 7

1 कनफ्यूशियस की एक कहानी 9

2 सौकिटीज़ 13

3 राजा उदयन 18

4 वासवदत्ता 22

5 यॉगटिसीकियॉग का एक साधु 49

6 चाणक्य 64

7 अलैक्ज़ैन्डर दी ग्रेट 72

8 जूलियस सीज़र 82

9 क्लियोपैट्रा 7 88

10 अकबर दी ग्रेट 93

11 बादशाह जहॉगीर 110

12 महारानी अहिल्या बाई 116

13 जौर्ज वाशिंगटन 121

14 अब्राहम लिंकन 126

15 ईश्वर चन्द्र विद्यासागर 130

16 पंडित मोतीलाल नेहरू 134

17 जौर्ज बर्नार्ड शा 136

18 पंडित मदन मोहन मालवीय 137

19 स्वामी विवेकानन्द 140

20 महात्मा गॉधी 153

21 कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी 155

22 आचार्य विनोबा भावे 157

इतिहास सीरीज़

प्रारम्भ में हमने एक सीरीज़ प्रारम्भ की थी "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिसके अन्दर हमने संसार के कई देशों की लोक कथाऐं और दंत कथाऐं प्रकाशित की थीं। ऐसा करते समय देखा गया कि एक तरह की कहानी कई देशों में कही जा रही है तो एक और सीरीज़ बनायी गयी "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कहानियाँ शामिल की गयी थीं जिनकी तरह की कहानियाँ और दूसरे देशों में भी उपलब्ध थीं। इस सीरीज़ में **20** से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। इसके बाद लोक कथाओं की कुछ क्लासिक पुस्तकों का भी अनुवाद किया गया। इनकी संख्या भी **30** से ऊपर पहुँच गयी।

अब यह एक नयी सीरीज़ प्रारम्भ की जा रही है "इतिहास" नाम की सीरीज़। यह बहुत ही मजेदार सीरीज़ है। इस पुस्तक में दी गयी कहानियाँ लोक कथाऐं नहीं हैं और न ही कहानियाँ हैं बल्कि सच्ची घटनाऐं हैं। इतिहास हमारे उस आधुनिक जीवन शैली की नींव डालता है जिस पर आज हम खड़े हुए हैं और जिस पर हमारा भविष्य बनता है। इतिहास हमारी पृथ्वी का भूगोल बनाता है। इतिहास हमारा समाज बनाता है। इतिहास हमारी भाषा बनाता है। इतिहास हमारी सभ्यता और संस्कृति बनाता है।

पर यह पुस्तकें इतिहास की भी नहीं है क्योंकि इसमें ऐसी एतिहासिक घटनाऐं भी नहीं दी गयीं हैं जो आपको इतिहास की पुस्तकों में मिलें। यहाँ केवल वही विषय सामग्री दी गयी है जो इधर उधर मिलनी कठिन है या नहीं भी मिल सकती है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब पुस्तकें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो इसलिये ये कहानियाँ यहाँ सरल बोलचाल की हिन्दी भाषा में लिखी गयी है। कहीं कहीं विदेशी विषय सामग्री भी है तो उनमें उनके चरित्रों और स्थानों के नाम सही उच्चारण जानने के लिये अंग्रेजी में फुटनोट्स में दिये गये हैं। इसके अलावा भी बहुत सारे शब्द भारतीयों के लिये नये होंगे वे भी चित्रों द्वारा समझाये गये हैं।

ये सब पुस्तकें "इतिहास सीरीज़ं" के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में आप सबके ज्ञान के घेरे को बढ़ायेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

हमारे महान लोग

इतिहास सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक हमने प्रकाशित की थी "तेरह महीनों का अकेला देश"। इस सीरीज़ की दूसरी पुस्तक है – "हमारे महान लोग"। इस संग्रह में अपने पुराने या नये समय में हुए बड़े बड़े जाने पहचाने लोगों के बारे में उनकी अपनी ज़िन्दगी में हुई कुछ ऐसी घटनाऐं संकलित की गयी हैं जो बहुत सारे लोग नहीं जानते और जो आसानी से नहीं मिलतीं। जिन्होंने शायद उनको बड़ा आदमी बनने में भी सहायता की जिन्होंने आज उन्हें बड़ा आदमी बनाया।

बड़ा आदमी केवल अपने आकार से या अपने पैसे से या अपनी शिक्षा से या किसी ऊँचे कुल में पैदा होने से ही नहीं होता बड़ा होता है आदमी अपने कर्मों से। यह पृथ्वी कर्मप्रधान लोक है। यहाँ केवल कर्म ही प्रधान है। अच्छे और असाधारण कर्म करो और बड़ा आदमी बनो और शताब्दियों तक याद रखे जाओ। लोग अपनी आगे आने वाली पीढ़ी को तुम्हारा उदाहरण देंगे जिससे तुम अनन्त काल तक लोगों के दिलों में ज़िन्दा रहोगे।

इस पुस्तक में देश विदेश के **22** लोगों के विषय में ऐसी ही कुछ घटनाऐं दी गयी हैं जिन्हें सुन कर या पढ़ कर तुम्हें लगेगा कि सचमुच ही ये लोग कितने बड़े थे। तुम्हें भी उनसे वैसे ही बड़े बनने की प्रेरणा मिलेगी।

इस प्रकार ये कुछ ऐसी ऐतिहासिक कथाऐं हैं जो बच्चों के ज्ञान की सीमा को बढ़ायेंगी और उनको संसार के बड़े बड़े लोगों के व्यक्तिगत जीवन के बारे में जानने और समझने में सहायता करेंगी। आशा है कि ये ऐतिहासिक कहानियाँ बच्चों को मज़ेदार लगेंगीं और उनको भी संसार में बड़ा बनने की प्रेरणा देंगी। ये ऐतिहासिक कहानियाँ संसार के विभिन्न भागों से एकत्र की गयी हैं।

1 कनफ्यूशियस की एक कहानी[1]

यह ऐतिहासिक कहानी हमने तुम्हारे लिये 480 बीसी से भी पहले वाले चीन देश के इतिहास से ली है। बच्चो तुमने चीन देश का नाम तो सुना ही होगा। यह भारत का पड़ोसी देश है और दुनियाँ का सबसे ज़्यादा जनसंख्या वाला देश है।

यहाँ कनफ्यूशियस[2] नाम के एक बहुत बड़े संत हो गये हैं। इनकी कही हुई बहुत सारी बातें बहुत मशहूर हैं। और इतनी ज़्यादा मशहूर हैं कि इनके बहुत सारे मानने वाले हैं।

जब कनफ्यूशियस ने धरती पर जन्म लिया तो किलिन[3] ने उस बच्चे को ढूँढा और एक जेड अपने मुँह से बाहर फेंका जिस पर लिखा हुआ था "ओ पानी के क्रिस्टल[4] के बेटे, तुम दुनियाँ के बेताज बादशाह बनने के लिये पैदा हुए हो।"

यह किलिन चार पैरों वाले जंगली जानवरों का राजा था और केवल तभी प्रगट होता था जब धरती पर कोई बड़ा आदमी पैदा होता था।

---

[1] A Legend of Confucius – a folktale from China, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/Asian_folktales/Chinese_Folktale_34.htm
Taken from the Book "Chinese Fairy Book". Edited by R Wilhelm. NY, Frederick A Stikes Company. 1921. (74 Chinese folktales)

[2] Confucius was a great thinker and philosopher of China. Confucianism is on his name.

[3] Kilin – the king of the four-footed beasts. The Kilin is an okapi-like legendary beast of the most perfected kindness, prince of all the four-footed animals.

[4] The "Watercrystal" is the dark Lord of the North, whose element is water and wisdom, for which last reason Confucius is termed as his son.

और इस प्रकार कनफ्यूशियस बड़ा हुआ, पढ़ा लिखा और अक्लमन्द बना। उसके बाद वह एक बहुत बड़ा संत बन गया। उसने धरती पर बहुत अच्छे अच्छे काम किये।

अपने मरने के बाद तो वह एक बहुत बड़ा और मशहूर टीचर और मास्टर बन कर मशहूर हो गया। उसको बहुत सारी विद्याएं आती थीं। इस सबका लोगों को उसके मरने के बाद ही पता चला।

यहाँ कनफ्यूशियस की ऐसी ही एक कहानी दी जाती है जिसमें उसने अपने मरने के बाद अपनी ताकत का प्रदर्शन किया। कैसे? यह तुम यहाँ पढ़ो।

एक बार एक बहुत ही नीच बादशाह सीन शी हुआँग[5] ने अपने आस पास के सारे राज्य जीत लिये थे। अब वह उनमें से हो कर अपने जीते हुए राज्यों को देखने के लिये उनकी यात्रा कर रहा था।

यात्रा करते करते वह उस जगह आ पहुँचा जहाँ कभी कनफ्यूशियस रहता था। वहाँ उसने कनफ्यूशियस की कब्र देखी।

कब्र देख कर उसकी इच्छा हुई कि देखा जाये कि उस कब्र में क्या है। उसके साथ जो उसके औफीसर आये हुए थे उन्होंने उसको बहुत मना किया कि उसको ऐसा नहीं करना चाहिये किसी की कब्र नहीं खोदनी चाहिये पर उसने उनकी एक न सुनी।

[5] Tsin Schi Huang (200 BC) is the burner of books and reorganizer of China famed in history.

सो उस कब्र में जाने के लिये उस कब्र तक एक रास्ता खोदा गया। जब वे उस रास्ते से कब्र के अन्दर गये तो उसके मुख्य कमरे

में उनको एक ताबूत मिला जिसकी लकड़ी बिल्कुल ताज़ा लग रही थी। अगर उसके ऊपर हाथ मारा जाये तो उसमें से धातु पर मारने की सी आवाज आती थी।

जहॉ वह ताबूत रखा था उसके बॉयी तरफ एक दरवाजा था जिसमें से हो कर अन्दर एक और कमरे में जाते थे।

इस अन्दर वाले कमरे में एक पलंग बिछा हुआ था, एक मेज थी, कुछ किताबें थीं और कपड़े थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे किसी ज़िन्दा आदमी के इस्तेमाल के लिये वहॉ रखे हों।

सीन शी हुऑग जा कर उस पलंग पर बैठ गया और उसके नीचे देखने लगा तो वहॉ उसको दो जूते दिखायी दिये जो लाल सिल्क के थे। उनके आगे के हिस्से पर बादलों की शक्ल बुनी हुई थी। उसके एक तरफ बॉस का एक डंडा दीवार के सहारे खड़ा हुआ था।

बादशाह ने हॅसी हॅसी में वे जूते पहन लिये और वहॉ से बॉस का वह डंडा ले कर चल दिया। पर जैसे ही वह वहॉ से चलने लगा कि पत्थर का एक टुकड़ा वहॉ प्रगट हुआ जिस पर लिखा था –

छह राज्य पार कर के सीन शी हुआॅग अपनी सेना के साथ यहॉ आया मेरी कब्र खोदने
जिसको मेरा पलंग मिला, जिसने मेरे जूते चुराये और मेरा डंडा चुराया
शकीयू[6] जाने के लिये इस धरती पर यह उसका आखिरी दिन है

यह देख कर तो सीन शी हुआॅग चौंक गया। उसने वह कब्र तुरन्त ही बन्द करवा दी। पर जब वह शकीयू पहुॅचा तो उसको बहुत ज़ोर का बुखार आ गया और उसी बुखार में वह मर गया।

तो ऐसा था कनफ्यूशियस का असर उसके मरने के बाद भी।

[6] Schakiu (Sandhill) was a city in the western part of the China of that day.

2 सौक्रिटीज़[7]

ईसा से 400 साल से भी ज़्यादा पहले की बात है कि यूरोप महाद्वीप के यूनान देश में एक बहुत बड़े दार्शनिक का जन्म हुआ था जिसका नाम था सौक्रिटीज़, या हिन्दी में सुकरात। ये अक्सर लम्बे बाल रख कर, नंगे पॉव, बिना नहाये धोये ही लोगों में घूमते थे पर ये सुन्दर बहुत थे।

इनके बारे में इनके अपने लेखों आदि से तो कुछ नहीं मिलता पर हॉ इनके बारे में इनके दो शिष्यों प्लेटो और ज़ैनोफोन की रचनाओं से ही थोड़ा बहुत पता चलता है।

ज़ैनोफोन के अनुसार सौक्रिटीज़ बिल्कुल सीधी बात करते थे और बजाय बहुत सारे सवाल पूछने के सलाह देने के लिये हमेशा तैयार रहते थे।

जबकि प्लेटो की बाद की लिखी हुई रचनाओं में उनके बारे में लिखा है कि वह प्लेटो के विचारों को ही ज़्यादा बोलते थे पर उसकी पहली रचनाओं से लगता है कि वह अपनी राय कम से कम देते थे बल्कि वह आने वाले के विचारों को अक्लमन्दी से विश्लेषण कर के उसकी सहायता करने की कोशिश करते थे।

---

[7] Socrates – a world famous philosopher, 470-399 BC, born in Greece whose life account is little known except through his two disciples, Plato and Xenophone, and a few classical writers.

सौक्रिटीज़ को ऐथैन्स के नौजवानों को भटकाने के जुर्म में मार देने की सजा दी गयी थी। जब उन्होंने यह वायदा किया कि वे वहाँ से भागेंगे नहीं तभी उनको जहर का रस्मी प्याला पीने से पहले के अपने कुछ आखिरी दिन अपने दोस्तों के साथ बिताने की इजाज़त दी गयी थी।

सौक्रिटीज़ को यह बात बहुत अच्छी तरह से मालूम थी कि आदमी का ज्ञान बहुत ही सीमित है।

जब उनको यह पता चला कि डैलफाई[8] के भविष्यवाणी करने वाले[9] ने यह कहा है कि वह ऐथैन्स का सबसे ज़्यादा होशियार आदमी है तो उन्होंने कहा कि वह ठीक नहीं बोल रहा था क्योंकि वह खुद जानते थे कि वह बिल्कुल भी अक्लमन्द नहीं थे।

वह ऐथैन्स के दूसरे लोगों के पास गये जिनको वह अक्लमन्द समझते थे और जो खुद को अक्लमन्द समझते थे। उनसे उन्होंने कुछ सवाल पूछे पर वे भी अक्लमन्द नहीं निकले। जबकि खुद वह यह जानते थे कि वह अक्लमन्द नहीं थे।

तब उनको यह मानना पड़ा कि वह जादूगर ठीक कह रहा था क्योंकि उन सब लोगों में केवल वही एक थे जो यह जानते थे कि वह बहुत सारी बातें नहीं जानते।

---

[8] Delphi – an important city of Greece.

[9] Translated for the word “Oracle”. Delphi of Greece was famous for its oracle. He or she used to lead blameless life and was consulted on many important topics.

इस बारे में उनकी ज़िन्दगी की एक घटना यहाँ दी जाती है। इस घटना से ऐसा लगता है कि यह घटना उनकी ज़िन्दगी के शुरू के दिनों में घटी होगी —

एक बार की बात है कि सौक्रिटीज समुद्र के किनारे टहल रहे थे। उन्होंने देखा कि एक बच्चे के हाथ में एक प्याला है। वह उस प्याले में समुद्र में से बार बार पानी भरता है और फिर वहीं उसके किनारे पर बिखेर देता है।

सौक्रिटीज़ को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह बच्चा क्या कर रहा है और क्या करना चाह रहा है। उनको कुछ मजा भी आया और कुछ उत्सुकता भी हुई तो वह उसको एक जगह खड़े हो कर देखने लगे। कुछ देर बाद वह बच्चा रोने लगा।

यह देख कर उनका मजा और उत्सुकता तो दोनों चली गयीं पर आश्चर्य बढ़ गया क्योंकि उनको बच्चे के रोने की वजह समझ में नहीं आयी।

वह उस बच्चे के पास पहुँचे और उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए पूछा — "बेटा तुम क्यों रोते हो।"

बच्चा रोते हुए बोला — "मैं अपने हाथ के प्याले में इस समुद्र का पानी भरना चाहता हूँ। और इसका पानी मेरे प्याले में आता ही नहीं।"

सौक्रिटीज़ ने जब बच्चे की ऐसी इच्छा सुनी तो वह बहुत दुखी हुए और वहाँ से कुछ दूर जा कर बैठ कर खुद भी रोने लगे। जब

बच्चे ने उनको रोते देखा तो बच्चे को तो यह बिल्कुल ही समझ में नहीं आया कि वह क्यों रो रहे थे।

उसको अपना रोना तो समझ में आ रहा था कि वह क्यों रो रहा था पर उस आदमी का रोना उसकी बिल्कुल समझ में नहीं आया सो वह उनके पास पहुँचा और उनसे पूछा — “अरे आप भी रोने लगे पर आपका प्याला कहाँ है और आप उसमें क्या भरना चाह रहे हैं जो आपसे भरा नहीं जा रहा। आप क्यों रो रहे हैं?”

सौक्रिटीज़ बोले — “बेटा तुम तो इसलिये रो रहे हो क्योंकि तुम अपने इस छोटे से प्याले में इस पूरे समुद्र का पानी भर लेना चाहते हो और वह उसमें नहीं समा रहा। और मैं इसलिये रो रहा हूँ कि मैं अपने इस छोटे से दिमाग में सारी दुनियाँ का ज्ञान भर लेना चाहता हूँ और वह इसमें नहीं समा पा रहा।

आज तुमको देख कर पता चला कि जैसे समुद्र का पानी इस छोटे से प्याले में नहीं समा सकता उसी तरह से सारी दुनियाँ का ज्ञान भी किसी एक आदमी के दिमाग में नहीं समा सकता। मैं इसी लिये रोता हूँ बेटा।”

यह सुन कर बच्चे ने अपना प्याला ज़ोर से घुमा कर समुद्र में फेंक दिया और बोला — “ओ समुद्र के पानी, अगर तू मेरे इस छोटे से प्याले में नहीं समा सकता तो मेरा छोटा सा प्याला तो तुझमें समा सकता है।”

सौक्रिटीज़ यह सुन कर उस बच्चे के पैरों में गिर पड़े और बोले — "आज तो एक बहुत ही कीमती बात मेरे हाथ लग गयी कि हे भगवन आप तो सारा का सारा मेरे अन्दर नहीं समा सकते पर मैं तो सारा का सारा आप में समा सकता हूँ।"

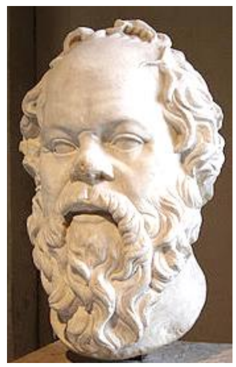

3 राजा उदयन[10]

यह ईसा से लगभग **450** साल पहले की बात है कि भारत के एक वत्स राज्य की राजधानी कौशाम्बी[11] में एक बहुत ही गुणी राजा राज करते थे। उनका नाम था राजा उदयन। कहते हैं कि ये पांडव वंश में पाँचवीं सन्तान थे।

राजा उदयन अपनी वीणा बजाने के लिये बहुत मशहूर थे। उनको वीणा बजाने का इतना शौक था कि उसकी वजह से वह अपने रोजाना के राज काज पर भी ठीक से ध्यान नहीं दे पाते थे सो धीरे धीरे उनका राज्य कमजोर होता चला जा रहा था।

राजा उदयन को तो इस बात की बिल्कुल चिन्ता नहीं थी पर इनके पास इनके मन्त्रियों की टीम का प्रधान मन्त्री बहुत अच्छा था। उस प्रधान मन्त्री का नाम था अमात्य यौगन्धरायन।

वह राज्य के लिये बहुत वफादार था और इसी लिये वह उसकी बहुत अच्छे तरीके से देख भाल भी करता था। वह हमेशा ही उसकी देख भाल में लगा रहता। पर बदकिस्मती से राजा उदयन उस समय किसी दूसरे मामले में फॅस गये।

---

[10] The King Udayan – a historical story from India. Kathaa Sarit Saagar gives several accounts of his conquests.

[11] Present Kosam, a small town in UP – 35 miles South-West of Allahabad.

एक दिन उन्होंने अपनी वीणा बजाने पर एक प्रयोग किया। उस दिन वह उसको अपने साथ शिकार पर ले गये। जब उनको वहाँ हाथी का शिकार करने का मौका आया तो उन्होंने उनका शिकार न कर के अपनी वीणा पर एक खास धुन बजायी।

उनके उन खास स्वरों ने उन जंगली हाथियों को अपने वश में कर लिया था जिनका वह शिकार करने गये थे। वे हाथी उनकी वीणा की धुन पर मस्त हो रहे थे।

यह देख कर राजा उदयन बहुत खुश हुए। उनको अपनी वीणा बजाना सफल लगा। उनको लगा जैसे किसी ने उनकी वीणा बजाने की तारीफ कर दी हो।

और यहीं से राजा उदयन का कला के लिये प्यार और यौगन्धरायन का राज्य के लिये वफादारी के बीच झगड़ा शुरू हो गया।

करीब करीब उन्हीं दिनों की बात है कि राजा उदयन ने हस्ति शिक्षा[12] नाम की एक पुस्तक पढ़ी जिसमें उन्होंने एक बहुत बड़े नीले रंग के हाथी नील कुवलयातनु के बारे में जाना।

हस्ति माने हाथी और शिक्षा माने उसको सिखाना – सो हस्ति शिक्षा माने हाथी को सिखाना।

[12] Hasti means elephant and Shikshaa means education – so Hasti Shikshaa means "how to train elephants".

इससे पहले भारत में ऐसे हाथी को देखना तो दूर उसका नाम भी किसी ने नहीं सुना था सो राजा उदयन ने फैसला कर लिया कि वह उस नील कुवलयातनु हाथी को ढूँढ कर ही रहेंगे और उसको अपने संगीत के जादू से अपना पालतू बनायेंगे।

एक दिन उन्होंने अपने कुछ विश्वास के आदमी लिये और बिना किसी को बताये हुए नील कुवलयातनु हाथी की खोज में चले गये। बहुत जल्दी ही यह खबर चारों तरफ फैल गयी कि राजा उदयन एक खास हाथी की खोज में बाहर गये हैं।

उनकी यह खबर उनके दुश्मन राजा राजा प्रद्योत तक भी पहुँची। राजा प्रद्योत उस समय उज्जयिनी[13] के राजा थे। उस समय उज्जयिनी को अवन्ती भी कहते थे। वह उस नील हाथी को ढूँढते ढूँढते राजा प्रद्योत के राज्य तक पहुँच गये।

राजा प्रद्योत का राज्य बहुत बड़ा था पर राजा उदयन खुद भी एक बहुत बहादुर आदमी थे इसलिये वह किसी से डरते भी नहीं थे। इसके अलावा क्योंकि उनकी राजा प्रद्योत से दुश्मनी एकतरफा थी इसी लिये उन्होंने प्रद्योत की अपने खिलाफ राजनीतिक चालों को अनसुना कर रखा था।

इसके आगे की कहानी अगली कहानी "वासवदत्ता" में पढ़ें जो इसके बाद दी गयी है।

[13] Modern day Ujjain, in MP.

उदयन का बेटा

बच्चों तुम लोगों ने शायद कथा सरित सागर[14] का नाम सुना होगा। यह भारत की लोक कथाओं का एक बहुत बड़ा खजाना है इसी लिये इसका नाम सागर है।

हो सकता है कि तुमने इसमें लिखी हुई कई कथाओं में से कोई कथा पढ़ी या सुनी भी हो जैसे पंचतन्त्र की कोई कथा जो इसके 10वीं किताब में है या फिर बैताल पच्चीसी की कोई कथा जो इसकी 12वीं किताब में है।

इसकी मुख्य कहानी नरवाहनदत्ता की है जो इसी उदयन का बेटा था। इस किताब की बहुत सारी कथाऐं इसी मुख्य कथा के चारों ओर घूमती रहती हैं।

कहीं कहीं उस समय के वर्णन में ऐसा भी लिखा है कि उस समय मगध में राजा बिम्बिसार राज करता था और उसकी सबसे बड़ी बेटी पदमावती कौशाम्बी के राजा उदयन की एक पत्नी थी। पदमावती की मॉ का नाम वसावी था। बिम्बिसार का सबसे बड़ा बेटा अजातशत्रु था। इस समय अवन्ती का राजा चन्ड महासेन था और उसकी बेटी वासवदत्ता उदयन की एक पत्नी थी जबकि कुछ दूसरे स्रोतों के अनुसार वासवदत्ता अवन्ती के राजा प्रद्योत की बेटी थी।

[14] Katha Sarit Sagar. Written in Sanskrit language by Somdev, consisting of 18 books, divided in 124 chapters containg 22,000 Shloks. It is the largest collection of tales. “How Was It Started” is given in my e-book “Itihas-3-Beginning of the Books” free for interested people.

4 वासवदत्ता

वासवदत्ता भारत के **450** बीसी के लगभग के इतिहास का एक बहुत ही मुख्य और लोकप्रिय चरित्र है। भारत में इसका जिक्र चार जगहों पर आता है। दो वासवदत्ता तो ज़िन्दा लड़कियाँ हैं और दो वासवदत्ता पुस्तकें हैं। हम यहाँ चारों वासवदत्ता के बारे में दे रहे हैं।

पहली वासवदत्ता भारत के इतिहास के मशहूर राजा प्रद्योत की बेटी और मशहूर राजा उदयन की पत्नी है।

दूसरी वासवदत्ता एक मशहूर वेश्या है जो बुद्ध जी के समय में उनके शिष्य उपगुप्त से प्यार करती थी।

तीसरी वासवदत्ता महाकवि भास का लिखा हुआ एक नाटक है "स्वप्नवासवदत्तम" या "स्वप्न वासवदत्ता" जिसमें उदयन अपनी वासवदत्ता के वियोग में दुखी है।

और चौथी वासवदत्ता सुबन्धु के उपन्यास "वासवदत्ता" की नायिका है।

रानी वासवदत्ता[15]

यह ईसा से लगभग **450** साल पहले की बात है कि भारत के एक शहर उज्जयिनी[16] में एक बहुत बड़े और भले राजा राज करते थे। उनका नाम था राजा प्रद्योत। उनकी रानी का नाम था अंगारवती और उनके एक बहुत सुन्दर बेटी थी जिसका नाम था वासवदत्ता।

एक बार राजा प्रद्योत अपने बागीचे से घूम कर वापस आ रहे थे कि उन्होंने अपने मन्त्री से पूछा — "मन्त्री जी, क्या हमसे भी बड़ा कोई राजा है?"

मन्त्री बोले — "क्षमा करें महाराज, एक राजा तो हैं जो आपसे बड़े हैं।"

राजा प्रद्योत को यह सुन कर कुछ आश्चर्य हुआ वह बोले — "मन्त्री जी, वह कौन है?"

मन्त्री जी बोले — "वह हैं कौशाम्बी देश के राजा उदयन[17]।"

राजा प्रद्योत कुछ नाखुश से हो कर बोले — "मुझे मालूम था कि तुम उन्हीं का नाम लोगे।"

---

[15] Vaasavdattaa – a historical story from India. Taken from Wikipedia "Vasavadatta" https://en.wikipedia.org/wiki/Vasavadatta - this is the synopsis of a novel written by Subandhu, a courtier in Kumargupt and Skandgupt's court during 414-467 BC

[16] Present Ujjain in Madhya Pradesh. In those times it was called Avantee too.

[17] Raja Udayan was the King of Kaushambi, which was near Allahabad, UP in olden times (presently it is an independent district). Gautam Buddha has visited Udayan several times in his lifetime – 5th century BC. Raja Udayan was the 5th king in the lineage of Paandav Dynasty.

मन्त्री बोले — "अगर मेरे इस जवाब से महाराज नाखुश हुए हों तो मुझे बहुत अफसोस है पर यह सच है।"

राजा प्रद्योत ने उस समय इसका कोई जवाब नहीं दिया और महल वापस चले आये।

अगले दिन जब राजा प्रद्योत अपने दरबार में आये तो उन्होंने अपने मन्त्री जी से कहा — "मन्त्री जी, हम चाहते हैं कि राजा उदयन को बन्दी बना कर हमारे दरबार में पेश किया जाये।"

मन्त्री जी कुछ सकुचा कर बोले — "महाराज, यह तो नामुमकिन है। उनको बन्दी नहीं बनाया जा सकता।"

राज प्रद्योत बोले — "क्यों मन्त्री जी? हमारी सेना तो बहुत ताकतवर है। हम लोग तो अपनी उस सेना से किसी को भी जीत सकते हैं फिर हम उनको बन्दी क्यों नहीं बना सकते?"

मन्त्री जी बोले — "महाराज उनमें एक बहुत बड़ी ताकत है जिसकी वजह से उनको जीता नहीं जा सकता।"

"वह क्या?"

"वह यह महाराज कि उनको हाथियों को सम्मोहित[18] करने की कला आती है।"

"पर इस बात का लड़ाई से क्या मतलब?"

[18] To mesmerize

"इस कला से वह अपनी वीणा[19] बजा कर हाथियों पर जादू फेंकते हैं और दुश्मन के हाथी लड़ाई का मैदान छोड़ कर भाग जाते हैं।

इस तरह से अगर वह हमारे हाथियों पर भी जादू डालेंगे और उनको लड़ाई के मैदान से भगा देंगे तो हम उनको कैसे हरा पायेंगे और फिर कैसे उनको बन्दी बना पायेंगे।"

राजा प्रद्योत यह सुन कर चुप हो गये और साथ में चिन्तित भी। उसी दिन शाम को मन्त्री जी राज प्रद्योत के महल में गये और राजकुमारी वासवदत्ता से कहा कि वह राजा से मिलना चाहते हैं।

राजकुमारी बोली — "मन्त्री जी, इस समय तो उनसे मिलना मुश्किल है क्योंकि वह बहुत चिन्तित हैं और आराम कर रहे हैं।"

मन्त्री जी बोले — "मैं भी उनकी इसी चिन्ता के सिलसिले में आया हूँ। आप उनसे जा कर कहें कि मेरे पास उनकी चिन्ता का बोझ हल्का करने का एक प्लान है।"

राजकुमारी अन्दर गयी और राजा को उनके मन्त्री का सन्देश दिया तो राजा ने मन्त्री को अन्दर बुलवा लिया। राजा ने उनसे पूछा — "मन्त्री जी, क्या आपको मालूम है कि मुझे क्या चिन्ता सता रही है?"

---

[19] Veena – an Indian musical string indtrument. See its picture above. Udayan used to play it very well — a beautiful design of Veena

मन्त्री जी बोले — “जी महाराज, मुझे अच्छी तरह मालूम है। आप चाहते हैं कि राज उदयन को किसी भी तरह से बन्दी बना कर आपके सामने हाजिर किया जाये, यही न? मैंने इसके लिये एक उपाय सोचा है।”

और उन्होंने अपना उपाय राजा को बता दिया। राजा प्रद्योत तो वह उपाय सुन कर बहुत खुश हुए।

राजा प्रद्योत और राजा उदयन के राज्यों के बीच में एक बहुत बड़ा और घना जंगल पड़ता था। एक दिन उस जंगल में रहने वाले एक आदमी ने उस जंगल में एक सफेद हाथी देखा तो सोचा कि यह तो बहुत ही बढ़िया हाथी है इस हाथी को तो हमारे राजा के पास होना चाहिये। मुझे इसके बारे में राजा को जा कर बताना चाहिये।”

सो वह राजा उदयन के दरबार में गया और जा कर उसने राजा से कहा कि उसने जंगल में एक बहुत ही शानदार सफेद हाथी देखा है।

सुनते ही राजा का मन उसको हासिल करने के लिये करने लगा। उन्होंने उस आदमी से पूछा — “कहाँ देखा है तुमने उसको? तुम उसकी ठीक ठीक जगह बताओ तो फिर हम उसको पकड़ लायेंगे।”

उस आदमी ने उनको उस हाथी की ठीक ठीक जगह बता दी कि उस हाथी को उसने कहॉ देखा था। बस राजा उदयन तुरन्त ही अपने हाथी पर सवार हुए और उस हाथी को पकड़ने चल दिये।

"मुझको तो वह सफेद हाथी चाहिये।"

वास्तव में वह हाथी राज प्रद्योत के मन्त्री के उपाय के अनुसार उस जंगल में छोड़ा गया था सो राजा के आदमी भी उस जंगल में उसके ऊपर सावधानी से साथ नजर जमाये बैठे थे।

जैसे ही उन्होंने राजा उदयन को आते देखा तो बोले — "देखो वह राजा उदयन आ रहे हैं हमको इस बात को मन्त्री जी को बता देनी चाहिये।" सो उनमें से कुछ लोग राजा प्रद्योत के दरबार में गये और जा कर मन्त्री जी को इस बात की सूचना दी।

राजा प्रद्योत यह खबर सुन कर बहुत खुश हुए और उनको इस खबर को लाने के लिये इनाम देने का वायदा किया। फिर उन्होंने अपनी सेना के कमान्डर से कहा — "अपने आदमियों को वहॉ तुरन्त भेजो और दुश्मन को चारों तरफ से घेर लो। और हॉ ध्यान रखना कि राजा उदयन को इस बात की भनक भी न पड़ने पाये।"

जंगल में जब राजा प्रद्योत के आदमियों ने धूल के बादल उड़ते देखे तो बोले — "लगता है कि राजा उदयन आ गये। लोगों सावधान।"

उधर उदयन ने जब वह शानदार सफेद हाथी देखा तो अपना हाथी और भी ज़्यादा तेज़ी से दौड़ा दिया। उनके साथ में जो लोग आये थे वे उनसे पीछे रह गये।

सफेद हाथी को देख कर राजा उदयन बहुत खुश हुए। उनके मुँह से निकला — "ओह कितना सुन्दर हाथी है। मैं बहुत ही किस्मत वाला हूँ जो मुझे इस हाथी को पकड़ने का मौका मिला।"

यह सोचते हुए उन्होंने अपना जादू उस हाथी के ऊपर चलाया पर यह देख कर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनका जादू तो उस हाथी पर चल ही नहीं रहा था कि अचानक राजा प्रद्योत के आदमी उस हाथी में से बाहर निकल पड़े और वे राजा उदयन को पकड़ कर उज्जयिनी ले गये।

राजा उदयन के आदमी जो पीछे रह गये थे वे भी अब तक वहाँ आ पहुँचे थे। उन्होंने जब यह सब देखा तो बोला "लगता है कि किसी दुश्मन ने हमारे राजा को फँसाने के लिये यह जाल बिछाया था और हमारे राजा उसमें फँस गये हैं।"

पर राजा उदयन का प्रधान मन्त्री इतनी जल्दी हार मानने वालों में से नहीं था। वह बोला — "हमको उज्जयिनी के बाहर एक कैम्प लगाना चाहिये और वहाँ से अपने राजा को आजाद करवाने की कोशिश करनी चाहिये।"

सो उज्जयिनी के बाहर एक कैम्प लगाया गया और वहाँ से राजा उदयन के प्रधान मन्त्री ने अपने कुछ आदमी राजा उदयन की कुछ खबर लाने के लिये उज्जयिनी भेजे।

इस बीच राजा उदयन राजा प्रद्योत के बन्दी बने रहे। चौथे दिन राजा उदयन ने जेल के गार्ड से पूछा — "मुझे यहाँ आये हुए तीन दिन हो गये हैं। मैं तुम्हारे राजा से मिलना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे राजा से कब मिल सकता हूँ?"

गार्ड बोला — "पता नहीं। क्योंकि राजा साहब तो अभी आपके ऊपर जीत की खुशी मनाने में लगे हुए हैं।"

"क्या? क्या तुम इसको जीत कहते हो? अरे, उसने तो एक कायर की तरह बर्ताव किया है। तुम्हारे राजा ने तो क्षत्रियों के नाम को भी धब्बा लगाया है। उससे कहो कि या तो वह मुझे छोड़ दे और या फिर मार दे।"

जेल के गार्ड ने यह सब जा कर राजा प्रद्योत को बताया तो वह बहुत गुस्सा हुआ और बोला — "एक कैदी की यह हिम्मत कि वह मेरे बारे में ऐसा कहे। तुम मुझे उसके पास ले कर चलो।"

सो वह गार्ड राजा प्रद्योत को राजा उदयन के पास ले कर आया। राजा प्रद्योत ने राजा उदयन से पूछा — "क्या यह गार्ड सच कह रहा है कि तुमने मेरे बारे में ऐसा कहा है कि मैं कायर हूँ और मैंने क्षत्रियों के नाम को धब्बा लगाया है?"

"यकीनन यह सब मैंने ही कहा है। तुम खुद सोचो कि जो कुछ भी तुमने मेरे साथ किया क्या वह क्षत्रियों के लायक काम था?"

राजा प्रद्योत को यह सुन कर अपने किये पर बहुत ही पछतावा हुआ। वह बोले — "मैं तुमको छोड़ तो दूँगा पर एक शर्त पर।"

"क्या शर्त है वह?"

"कि तुमको मुझे हाथियों को पालतू बनाना सिखाना होगा।"

"वह तो मैं तुमको सिखा दूँगा पर तुमसे ठीक से इज़्ज़त पाने के बाद।"

"क्या तुम सचमुच में ही यह चाहते हो कि मैं तुमको ठीक से इज़्ज़त दूँ?"

"हाँ बिल्कुल। वैसे तुम इस बात को सुन कर आश्चर्य में क्यों पड़ गये? क्या अपनी रीति रिवाजों में अपने गुरू को इज़्ज़त देना नहीं है?"

राजा प्रद्योत बोले — "मै तुमको इज़्ज़त भी नहीं दूँगा और अगर तुमने मुझे वह सब नहीं सिखाया जो मैं तुमसे सीखना चाहता हूँ तो मैं तुमको मरवा भी दूँगा।"

राजा उदयन बोले — "तुम जैसा चाहो वैसा करो। तुम मेरे शरीर के मालिक हो सकते हो पर मेरे दिमाग के नहीं।"

राज प्रद्योत गुस्से में भर कर वहाँ से चले गये। दरबार में जा कर उन्होंने कहा — "आज मैं कुछ नहीं कर सकता। मुझे अकेला छोड़ दो। मैं अकेला रहना चाहता हूँ।"

राज प्रद्योत के प्रधान मन्त्री जी ने सोचा कि राजा प्रद्योत राजा उदयन की बात से बहुत परेशान हैं इसी लिये ऐसा कह रहे हैं सो उन्होंने उनसे उनके निजी कमरे में मिलने की इजाज़त माँग ली।

जब वे राजा से मिलने जा रहे थे तो रास्ते में उनको राजकुमारी वासवदत्ता मिली।

मन्त्री जी को लगा कि राज प्रद्योत की परेशानी का एक हल यह भी हो सकता है कि अगर राजकुमारी जी राज उदयन से हाथी को पालतू बनाने का भेद सीख लें तो राजा प्रद्योत एक कैदी से माफी माँगने के अपमान से बच जायेंगे। और यह भेद परिवार में ही सुरक्षित रहेगा।

उधर राजा प्रद्योत के दिमाग में भी यही आ रहा था तो जब मन्त्री जी राजा उदयन से मिलने के लिये उनके निजी कमरे में पहुँचे तो उन्होंने अपने मन्त्री जी से कहा — “मन्त्री जी आप क्या सोचते हैं कि अगर वासवदत्ता राजा उदयन से हाथियों को पालतू बनाने की कला सीख ले तो कैसा रहे।”

मन्त्री जी तुरन्त बोले — “यह तो बहुत ही अच्छी बात है। सच तो यह है कि मैं भी यही सोच रहा था।”

पर राजा प्रद्योत ने इसके साथ यह भी सोचा कि राजकुमारी वासवदत्ता राजा उदयन हाथियों को पालतू बनाने की कला सीखे तो पर दोनों एक दूसरे को देखें नहीं। सो वह एक बार फिर जेल गया।

वहाँ जा कर उसने राजा उदयन से पूछा — "क्या तुम मेरे किसी रिश्तेदार को भी यह कला सिखाओगे?"

"हाँ हाँ क्यों नहीं।"

"हमारे पास एक कुबड़ी औरत है, क्या मैं उसको तुम्हारे पास भेज दूँ?"

"हाँ हाँ क्यों नहीं। चाहे वह कुबड़ी हो या फिर अपंग हो। जो भी मुझे इज़्ज़त देगा मैं उसी को यह कला सिखा दूँगा।"

यह सुन कर राजा प्रद्योत अपनी बेटी वासवदत्ता के पास गये और उससे कहा — "बेटी, एक कोढ़ी है जिसके पास एक बहुत ही कीमती जादू है। क्या तुम मेरे लिये उससे वह जादू सीख लोगी?"

वासवदत्ता सकुचा कर बोली — "क्या पिता जी एक कोढ़ी से?"

राजा प्रद्योत उसको समझाते हुए बोले — "मुझे मालूम है कि यह काम बहुत मुश्किल है पर मैंने उसकी भी एक तरकीब सोच ली है। तुम परदे के पीछे बैठ जाना तब तुमको उसका बदसूरत चेहरा दिखायी नहीं देगा।"

वासवदत्ता ने अपने सब हथियार अपने पिता के सामने फेंकते हुए कहा — "अगर आपकी यही इच्छा है पिता जी तो मैं ऐसा ही करूँगी।" और वासवदत्ता ने राजा उदयन से परदे के पीछे बैठ कर हाथी को पालतू बनाने की कला सीखनी शुरू कर दी।

एक बार राजा उदयन ने वासवदत्ता से कहा — "जैसे मैं गा रहा हूँ तुम इसको ठीक वैसे ही दोहराओ।"

वासवदत्ता बोली — "ठीक है, मैं कोशिश करती हूँ।"

पर जब उसने गाया तो वह वैसा नहीं था जैसा राजा उदयन चाहते थे सो राजा उदयन कुछ नाराजी से बोले — "ओ कुबड़ी क्या तेरे होठ भी मोटे हैं?"

इस पर वासवदत्ता बोली — "अरे ओ कोढ़ी, तेरी मुझे कुबड़ी कहने की हिम्मत कैसे हुई?"

राजा उदयन ने यह सुन कर यह देखने के लिये परदे का किनारा थोड़ा सा ऊपर उठाया कि देखूँ तो परदे के उस पार कौन है। पर वह तो यह देख कर आश्चर्य में पड़ गए जब उन्होंने वहाँ एक कुबड़ी औरत की बजाय एक सुन्दर सी राजकुमारी को बैठे पाया।

उन्होंने तुरन्त पूछा — "आप कौन हैं?"

वासवदत्ता बोली — "मैं वासवदत्ता हूँ राजा प्रद्योत की बेटी, और आप?"

राज उदयन कुछ सकुचाते से बोले — "मुझे अफसोस है कि आपके पिता ने मुझे आपके बारे में यह बताया कि आप कुबड़ी हैं तो मैंने आपको कुबड़ी कह कर पुकारा।"

फिर वासवदत्ता ने राजा उदयन को बताया — "और मुझे भी अफसोस है कि मैंने आपको कोढ़ी कहा क्योंकि मुझे आपके बारे में यही बताया गया था कि आप कोढ़ी हैं।"

राजा उदयन बोले — "मैं राजा उदयन हूँ।"

और फिर वह हो गया जो दोनों के ही रोके से नहीं रुक सका। दोनों को एक दूसरे से प्यार हो गया और वे राजा प्रद्योत की नजर बचा कर चोरी छिपे मिलने लगे।

एक दिन राजा प्रद्योत अपनी बेटी वासवदत्ता के कमरे में आये और उससे पूछा — "बेटी, क्या तुमको वह जादू आ गया जिससे हाथी को काबू में किया जा सकता है?"

"अभी नहीं पिता जी।"

"अगर तुमको किसी चीज़ की जरूरत हो तो मुझे बता देना।"

"जी पिता जी।"

अगले दिन जब राजकुमारी वासवदत्ता राजा उदयन से मिलने गयी तो उसने उनको उदास पाया तो पूछा — "क्या बात है आज आप इतने उदास क्यों हैं? क्या हुआ है?"

राजा उदयन बोले — "मैं यहाँ इस तरह से कब तक बन्दी बना रहूँगा? और फिर अगर तुम्हारे पिता को हमारे प्यार के बारे में पता चल गया तो वह तो मुझे वैसे ही मार देंगे।"

वासवदत्ता बोली — "मैं इस मामले में आपकी क्या सहायता कर सकती हूँ?"

राजा उदयन ने उसको समझाया — "तुम्हारे पिता हर मुमकिन कोशिश करेंगे कि तुम हाथियों को पालतू बनाने की कला को ठीक से सीख लो। सो तुम उनसे कहो कि तुमने वह कला सीख ली है और अब तुमको एक हाथी की जरूरत है ताकि तुम अपनी पढ़ाई की जाँच कर सको। फिर मैं देख लूँगा।"

"ठीक है मैं ऐसा ही करती हूँ।"

उसने जा कर अपने पिता से कहा कि उसकी पढ़ाई पूरी हो गयी है और अब उसको एक हाथी की जरूरत है ताकि वह अपनी पढ़ाई की जाँच कर सके। और पिता से एक हाथी माँगा। राजा को यह ठीक लगा सो उसने एक हाथी अपनी बेटी को दे दिया।

राजा उदयन ने फिर वासवदत्ता से कहा कि उसको रात को उसके पिता के शहर का एक दरवाजा भी खुला चाहिये। वासवदत्ता बोली "यह तो शायद पिता जी न मानें।"

राजा उदयन बोले — "मैंने इसके बारे में भी सोच लिया है। उनसे कहना कि हाथी को पालतू बनाने के लिये कोढ़ी को एक खास पत्ता चाहिये। और वह पत्ता क्योंकि अपनी चमक से पहचाना जाता है इसलिए वह रात में ही पहचान कर तोड़ा जा सकता है।"

वासवदत्ता बोली — "ठीक है, मैं उनको राजी करने की पूरी कोशिश करूँगी।"

सो वासवदत्ता ने अपने पिता से जा कर यही कहा। यह अजीब सी माँग सुन कर राजा प्रद्योत भाँप गया कि यह तो राजा उदयन का

यहाँ से निकल भागने का प्लान लगता है पर फिर भी उसने अपनी बेटी से कह दिया कि वह रात को अपने शहर का एक दरवाजा खुला रखेगा।

इसके बाद राजा ने अपने जासूस बुलाये और उनसे कहा — “देखो मुझे लगता है कि राजा उदयन यहाँ से भागना चाहता है। उसको इस बात का बिल्कुल पता नहीं चलना चाहिये कि उस पर कड़ी नजर रखी जा रही है पर अगर वह यहाँ से भागने की कोशिश करे तो तुम लोग उसको तुरन्त ही पकड़ लेना।”

“जो हुक्म महाराज।”

रात को राजा उदयन हाथी पर सवार हुए और जंगल की तरफ चल दिये। उनको पता चल गया कि उन पर पहरा रखा जा रहा है सो वह सावधान हो गये।

इस पहरे की वजह से वह भाग नहीं सके। लगातार तीन रातों तक वह उस चमकीले पत्तों को ढूँढने की झूठी कोशिश कर के उन जासूसों को बहकाते रहे।

वे जासूस उनके बहकावे में आ गये कि वह वाकई वे चमकीले पत्ते ही ढूँढ रहे थे सो वे अब पहले जितने सावधान नहीं रहे।

चौथी रात को राजा प्रद्योत अपने महल के बागीचे में आनन्द मना रहे थे कि राजा उदयन को यह अच्छा मौका मिल गया। उन्होंने वासवदत्ता से कहा — “चलो राजकुमारी, भागने का यह अच्छा मौका है।”

सो राजकुमारी भी राजा उदयन के हाथी पर सवार हो गयी और दोनों महल से निकल चले। रास्ते में राजा उदयन ने वासवदत्ता को कुछ थैलियाँ दी और कहा कि वे थैलियाँ किसी ने उनको छिपा कर ला कर दी हैं और वह उनको सँभाल कर रख ले।

वासवदत्ता ने वे थैलियाँ उठायीं तो बोली — "ये थैलियाँ तो काफी भारी हैं क्या है इनमें?"

राजा उदयन बोले — "इस थैली में चाँदी के सिक्के हैं और इस थैली में सोने के सिक्के हैं।"

वासवदत्ता ने पूछा — "आप इन थैलियों का क्या करेंगे?"

"देखना अभी कि मैं इन थैलियों का क्या करता हूँ।"

कुछ देर बाद एक दासी वासवदत्ता के कमरे में गयी तो उसने उसको वहाँ नहीं देखा तो सोचने लगी कि वह कहाँ गयी होगी। इधर उधर शोर मचा तो लोग उसको ढूँढने के लिये इधर उधर दौड़े पर वह तो उनको कहीं नहीं मिली तो उन्होंने इस बात को राजा से कहना ठीक समझा।

राजा को पता चला तो गुस्से में भर कर बोला — "वे लोग कहीं भी हों उनको ढूँढ कर ले कर आओ – ज़िन्दा या मुर्दा।" सो सारे लोग उन दोनों को ढूँढने के लिये दौड़ पड़े।

राजा उदयन और वासवदत्ता दोनों रात भर चलते रहे। जब सुबह हुई तो राजा उदयन ने वासवदत्ता से कहा — "तुम्हारे पिता ने हमको ढूँढने के लिये लोगों को हमारे पीछे भेज दिया है। अब हमारे

यह पैसे काम आयेंगे।" कह कर उसने एक थैली खोली और उसमें से चॉदी के सिक्के निकाल कर बाहर फेंकने शुरू कर दिये।

राजा प्रद्योत के लोगों ने जब वे सिक्के देखे तो आपस में पूछा "यह सब क्या है?"

"ये तो चॉदी के सिक्के हैं। चलो इनको उठा लेते हैं।"

सो कुछ लोग तो वे सिक्के उठाने में लग गये पर कुछ अपने काम के लिये बहुत वफादार थे सो वे राजकुमारी और राजा उदयन की खोज में आगे बढ़ते रहे।

कुछ देर बाद चॉदी के सिक्के खत्म हो गये तो राजा उदयन ने सोने के सिक्के फेंकने शुरू किये तो जो लोग आगे निकल आये थे उन्होंने वे सोने के सिक्के देखे।

वे बोले — "अरे, ये तो असली सोने के सिक्के हैं।" और उन्होंने वे सिक्के उठाने शुरू कर दिये।

बस उसके बाद तो वे उज्जयिनी की सीमा तक पहुॅच ही चुके थे। राजा उदयन के मन्त्री ने इन सब दिनों तक राजा से सम्बन्ध बनाये रखा था सो वह इन दोनों के आने का इन्तजार ही कर रहा था। उसने राजा उदयन का स्वागत किया।

राजा प्रद्योत के आदमी अब तक थक चुके थे सो राजा उदयन के सिपाहियों ने उनको बहुत जल्दी ही काबू कर लिया।

कौशाम्बी पहुॅच कर राजा उदयन और राजकुमारी वासवदत्ता का ज़ोरदार स्वागत हुआ और वहॉ उन दोनों की शादी हो गयी।

वेश्या वासवदत्ता और उपगुप्त[20]

एक वासवदत्ता मथुरा की एक वेश्या थी। गौतम बुद्ध का एक बहुत ही मशहूर शिष्य था उपगुप्त। उपगुप्त लम्बा था और देखने में सुन्दर था।

वह उपगुप्त को अक्सर देखा करती थी। देखते देखते वह उससे बहुत प्यार करने लगी। एक दिन उपगुप्त को उसने अपने घर बुलाया तो उपगुप्त ने जवाब दिया — "अभी उपगुप्त का तुम्हारे घर आने का मौका नहीं आया है वासवदत्ता। जब मौका आयेगा तब वह अपने आप तुम्हारे पास आ जायेगा।"

यह सुन कर वासवदत्ता को बहुत आश्चर्य हुआ। पर उसने उपगुप्त को यह कहते हुए फिर से बुलाया — "वासवदत्ता को उपगुप्त से केवल प्यार चाहिये, सोना नहीं।" पर उपगुप्त ने फिर से वही जवाब दिया और वह नहीं आया।

कुछ महीने बाद वासवदत्ता को कारीगरों के एक सरदार से प्यार हो गया पर उसी समय मथुरा में एक धनी व्यापारी आया और वह खुद वासवदत्ता के प्यार में पड़ गया।

उसके पैसे को देखते हुए और अपने दूसरे प्रेमी की जलन को ध्यान में रखते हुए उस धनी व्यापारी ने कारीगर के सरदार को मारने

[20] Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/bud/btg/btg81.htm

की योजना बनायी। योजना के अनुसार कारीगर के सरदार को मार कर उसने उसकी लाश को एक गोबर के ढेर के नीचे छिपा दिया।

बहुत दिनों तक जब वह कारीगरों का सरदार लोगों को दिखायी नहीं दिया तो उसके दोस्तों और रिश्तेदारों ने उसको ढूँढना शुरू किया। ढूँढते ढूँढते उनको उसकी लाश एक गोबर के ढेर में मिल गयी।

वासवदत्ता को अदालत ले जाया गया और उसको सजा हुई कि उसके नाक कान और हाथ पैर काट दिये जायें और उसको किसी शमशान में फेंक दिया जाये।

वासवदत्ता अपने नौकरों के साथ बहुत ही अच्छा बर्ताव करती थी सो जब उसके नाक कान और हाथ पैर काट कर उसको शमशान में फेंका गया तो उसकी एक दासी भी उसके साथ गयी।

अपनी मालकिन के प्यार की वजह से वह उसको उस दर्द के समय में तसल्ली देती रही और उसके ऊपर आने वाले कौओं को उड़ाती रही।

अब वह समय आ गया था जब उपगुप्त को वासवदत्ता से मिलने के लिये आना था। वह वासवदत्ता के पास आया तो वासवदत्ता ने अपनी दासी को अपने नाक कान और हाथ पैर सबको एक कपड़े से ढक कर छिपाने के लिये कहा।

उपगुप्त ने आ कर उसको नमस्ते की तो वह कुछ दुखी हो कर बोली — "एक दिन था जब मेरा यह शरीर कमल के फूल की तरह

से खिला हुआ और खुशबूदार था। उस समय मैं तुमको अपना यह शरीर देने को तैयार थी।

उन दिनों मेरा यह शरीर मोतियों और बढ़िया रेशमी कपड़ों से ढका रहता था। आज तो मेरा यह शरीर सजा देने वाले ने गन्दा कर दिया है और खून से भर दिया है।"

उपगुप्त बोला — "बहिन, इस समय मैं अपनी खुशी के लिए तुम्हारे पास नहीं आया हूँ। मैं इस समय तुम्हारी सच्ची सुन्दरता को तुम्हें दिखाने आया हूँ जो तुम इस समय खो चुकी हो।

मैंने तथागत[21] को इस धरती पर घूमते हुए और नियम सिखाते हुए अपनी आँखों से देखा है पर तुमने उनके शब्दों को नहीं सुना क्योंकि तुम अपने इस दुनियावी वातावरण के लालच में लगी हुई थीं।

उस समय तुम उनको सुन भी नहीं सकती थीं क्योंकि तुम लालच से घिरी हुई थीं। तुम अपनी उसी शारीरिक सुन्दरता पर ही विश्वास करती थीं जिसकी वजह से तुम मुझे बुला रही थीं।

पर एक सुन्दरता है जो कभी फीकी नहीं पड़ती अगर तुम बुद्ध जी के नियमों को सुनोगी तो वे तुमको इस बेचैन पापी दुनियाँ में भी शान्ति देंगे।"

---

[21] Another name of Gautam Buddha

यह सुन कर वासवदत्ता शान्त हो गयी और एक अनोखी शान्ति उसके शरीर के सारे दर्द पर छा गयी। वह बुद्ध जी की शरण में आ कर अपने पाप की सजा भुगतते हुए मृत्यु को प्राप्त हो गयी।

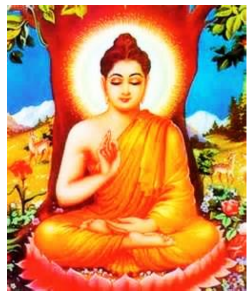

भास का नाटक स्वप्नवासवदत्तम[22]

हालाँकि यह नाटक इतिहास की किसी घटना में नहीं आता पर फिर भी यहाँ यह वासवदत्ता के सन्दर्भ में दिया जा रहा है।

स्वप्नवासवदत्तम एक संस्कृत नाटक है जो महाकवि भास[23] का लिखा हुआ है। यह शायद उनकी सबसे अच्छी पुस्तक है।

यह नाटक ईसा से चार सदी पहले के समय के वत्स राज्य के राजा उदयन और अवन्ती के राजा प्रद्योत की बेटी वासवदत्ता की प्रेम कहानी पर आधारित है। यह नाटक उदयन का अपनी रानी वासवदत्ता के लिये दुख के ऊपर लिखा गया है।

राजा उदयन उसके लिये दुखी इसलिये हैं कि वह सोचते हैं कि उनकी वासवदत्ता आग में जल कर मर गयी है जबकि यह केवल एक अफवाह ही है और यह अफवाह राजा उदयन के अपने मन्त्री अमात्य यौगन्धरायन ने फैलायी है ताकि राजा उदयन मगध के राजा बिम्बिसार की बेटी पदमावती से शादी कर लें।

यह नाटक छह अंकों में है। इस नाटक के बाद उन्होंने "प्रतिज्ञा यौगन्धरायन" नाम का एक नाटक लिखा जो इस क्रम के आगे की कड़ी है। यह पूरा नाटक सबसे पहले सन् **1912** में भारत के केरल प्रदेश में मिला था।

---

[22] Swapn Vaasavdattam drama has been written by Bhaas, an ancient poet.

[23] Great Poet Bhaas (275-335 AD)

सुबन्धु का उपन्यास वासवदत्ता[24]

यह रचना भी केवल एक उपन्यास है जो इतिहास से सम्बन्ध नहीं रखता पर फिर भी इसको भी वासवदत्ता के सन्दर्भ में यहॉ दिया जा रहा है।

वासवदत्ता भारत के इतिहास के ईसा से पहले की पॉचवीं सदी के गुप्त काल का एक चरित्र है जिसके बारे में कवि सुबन्धु ने संस्कृत में एक उपन्यास लिखा था। कवि सुबन्धु राजा कुमारगुप्त और उसके बेटे स्कन्दगुप्त[25] के दरबार में एक दरबारी थे। उनका यह उपन्यास कुछ इस तरह से है —

राजा चिन्तामणि का बेटा राजकुमार कन्दर्पकेतु एक बहुत ही सुन्दर और आकर्षक राजकुमार था। एक बार उसने सपने में एक बहुत ही सुन्दर लड़की को देखा जिसको देखते ही वह उसकी तरफ आकर्षित हो गया और वह उस लड़की को ढूढने के लिये निकल पड़ा।

उसके दोस्त मकरन्द ने उसको बहुत समझाया कि इस तरह से उसको सब जगह ढूढने में कोई अक्लमन्दी नहीं है। पर कन्दर्पकेतु ने उसे बताया कि वह लड़की उसकी जन्म जन्म की साथी है और इस

[24] It seems that this Vasavdatta is different from the usual Vasavdatta, the daughter of King Pradyot, the King of Ujjayini. This seems just a story.

[25] Kumargupt reigned during 414-455 BC and Skandgupt reigned during 455-467. Subandhu was in both the Kings' courts

जन्म में भी वे दोनों मिल कर ही रहेंगे। और इस जन्म में ही नहीं बल्कि वे लोग अगले जन्मों में भी मिलते रहेंगे।

सो उसको उस लड़की को ढूँढने के लिये निकलना ही चाहिये। किस्मत उसको जरूर ही ठीक रास्ता दिखायेगी।

मकरन्द अपने दोस्त को अकेला नहीं जाने देता और उसके साथ वह भी उस लड़की की खोज में निकल पड़ता है। बहुत जल्दी ही उनको अपने काम में सफलता मिल जाती है।

एक दिन दोनों दोस्त नर्मदा नदी के किनारे एक पेड़ की छाया में लेटे हुए थे कि कन्दर्पकेतु उस पेड़ पर बैठे हुए चिड़िया के एक जोड़े में हुई बात सुनता है।

चिड़ा बैठा बैठा वासवदत्ता की जो कुसुमपुर के राजा श्रंगार शेखर की बेटी है सुन्दरता की तारीफ करता रहता है। फिर वह यह भी कहता है कि उसने अपने सपने में एक सुन्दर राजकुमार को देखा है जिसने उसका दिल चुरा लिया है और वह उस राजकुमार को अपना साथी बताती है।

राजकुमारी ने अपनी एक विश्वास वाली सखी तमालिका को उसके बारे में बहुत अच्छी तरह से बताया पर उसकी सखी ने उस राजकुमार से मिलने की कोशिश उसे कुछ नामुमकिन सी बतायी।

उस चिड़े ने उस राजकुमारी की ये बातें सुनी तो वह भी एक प्रेमी चिड़ा होने की वजह से उसकी सहायता करने के बारे में सोचने

लगा। वह वहाँ से उड़ चला ताकि वह वैसे राजकुमार को ढूँढ कर राजकुमारी के पास ला सके।

उड़ते उड़ते उस चिड़े को वह राजकुमार एक पेड़ के नीचे लेटा हुआ मिल गया तो वह उस राजकुमार को ले कर तमालिका के पास पहुँचा और फिर वे तीनों वासवदत्ता के पास कुसुमपुर जाते हैं।

वहाँ तमालिका कन्दर्पकेतु को वासवदत्ता से मिलाने का इन्तजाम करती है। देखते ही दोनों एक दूसरे को तुरन्त ही पहचान लेते हैं क्योंकि दोनों ने एक दूसरे को सपने में बहुत अच्छे तरीके से पहले से ही देखा हुआ है।

पर वहाँ जा कर कन्दर्पकेतु को पता चलता है कि वासवदत्ता के पिता ने तो उसकी शादी विद्याधरों के सरदार विजयकेतु के बेटे पुष्पकेतु से तय कर रखी है और उसकी शादी अगले दिन सुबह ही होने वाली है।

कन्दर्पकेतु और वासवदत्ता तभी एक जादुई घोड़े पर सवार होकर विन्ध्य पर्वत की तरफ भाग लेते हैं। वहाँ वे लोग सुरक्षित पहुँच जाते हैं और थके होने की वजह से सो जाते हैं।

पर जब कन्दर्पकेतु की आँख खुलती है तो वह देखता है कि वासवदत्ता तो वहाँ नहीं है। वह उसको पागलों की तरह से ढूँढता है पर फिर न मिलने पर आत्महत्या करने की सोचता है।

वह एक नदी में डूबने के लिये कूदने वाला ही होता है कि एक आकाशवाणी होती है कि वह वासवदत्ता से फिर मिलेगा इसलिये उसको अपनी जान गॅवाने की कोई जरूरत नहीं है।

वह आत्महत्या का इरादा छोड़ देता है और जंगलों में महीनों प्यार का मारा दुखी हो कर भटकता रहता है। आखीर में उसको वासवदत्ता की एक पत्थर की मूर्ति मिलती है। वह उस मूर्ति को हाथ से छूता है और तभी उसमें जान पड़ जाती है।

ज़िन्दा होने के बाद वासवदत्ता उसको अपनी वे सारी घटनाऐं सुनाती है जो उसके साथ उन लोगों के विन्ध्य पर्वत पर सोने के बाद हुई थीं।

उसने बताया कि जब वह उठी तो उसको भूख लगी थी सो वह जंगल में जंगली फलों की खोज में निकल गयी। तभी उसको आदमियों के दो समूह मिले जिनके सरदारों को उससे देखते ही प्यार हो गया और वे दोनों ही उसको लेने की कोशिश में थे।

जब वे लोग आपस में लड़ रहे थे तो वह किसी तरह से वहॉ से बच कर भाग निकली। वह जंगल में से होती हुई भागी जा रही थी कि अनजाने में ही वह एक ऋषि के आश्रम से हो कर गुजरी।

उसके वहॉ से गुजरने से ऋषि की बरसों की तपस्या भंग हो गयी और वह ऋषि वासवदत्ता की तरफ आकर्षित हो गये। फिर गुस्से में आ कर उन्होंने उसको शाप दिया कि वह एक पत्थर की मूर्ति में बदल जाये।

उन्होंने उससे यह भी कहा कि वह उस पत्थर की मूर्ति से वापस ज़िन्दा तभी होगी जब उसका होने वाला पति जो कि उसकी पिछली ज़िन्दगी से ही निश्चित है उसको छुएगा।

वही उसकी तेज़ आवाज की लहरों को बन्द करेगा जिससे कि वह जहाँ भी जाती वहीं बड़े बड़े प्रकोप ला सकती थी। इस तरह वह उस ऋषि के शाप की वजह से पत्थर की मूर्ति में बदल गयी थी।

अब क्योंकि वासवदत्ता कन्दर्पकेतु के छूने से ज़िन्दा हुई थी इसलिए यह साफ जाहिर था कि वही उसका होने वाला पति था – इस ज़िन्दगी में भी और आगे आने वाली ज़िन्दगियों में भी।

वासवदत्ता का पिता श्रंगार शेखर भी इस बात को मान गया और उसने अपनी बेटी वासवदत्ता की शादी कन्दर्पकेतु से कर दी। कन्दर्पकेतु और वासवदत्ता दोनों कन्दर्पकेतु के घर आ गये जहाँ वे दोनों फिर बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

5 यॉगटिसीकियॉग का एक साधु[26]

यह कहानी हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के चीन देश की ऐतिहासिक कहानियों से ली है। चीन देश में दो नदियाँ बहुत मशहूर हैं – एक तो यॉगटिसीकियॉग नदी और दूसरी ह्वॉग हो या पीली नदी। वहाँ की ये दोनों ही नदियाँ बहुत मशहूर हैं।

दुनियाँ में कई धर्म हैं जैसे हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, बौद्ध, जैन। इनमें से बौद्ध धर्म उत्तरी भारत से शुरू हो कर दक्षिण में लंका तक गया और फिर वहाँ से दुनियाँ के और पूर्वी देशों में चला गया जैसे चीन, कम्बोडिया, जापान आदि।

उस समय में उत्तरी भारत में एक राजकुमार रहता था। जिसने छोटी उम्र में ही दुनियाँ के सारे सुख और अपना घर छोड़ दिया था। सब इच्छाओं को छोड़ कर उसने तप किया ताकि वह दुनियाँ के सारे जीवों को बचा सके। धीरे धीरे उसको बुद्ध का गुप्त ज्ञान आ गया और वह खुद बुद्ध बन गया।

[26] A Monk of Yangtze-Kiyang – a folktale from China, Asia. Adapted from the Web Site : https://www.worldoftales.com/Asian_folktales/Chinese_Folktale_84.html
Taken from the Book "Chinese Fairy Book". Edited by R Wilhelm. NY, Frederick A Stikes Company. 1921. (74 Chinese folktales)

एक बार ईस्टर्न हंस[27] के साम्राज्य में बादशाह मिंग डी[28] के दिनों में पश्चिम की तरफ एक चमक देखी गयी जो बराबर चमकती रहती थी।

एक रात बादशाह ने सपने में एक सुनहरे संत[29] को देखा जो 20 फीट ऊँचा था, नंगे पैर था, इसका सिर मुँडा हुआ था और इसने हिन्दुस्तानी कपड़े पहने हुए थे।

वह उसके कमरे में आया और उससे बोला — "मैं पश्चिम का एक संत हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे उपदेशों को पूर्व में फैलाओ।"

जब बादशाह की आँख खुली तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने तुरन्त ही अपने कुछ लोग यह जानने के लिये पश्चिम की तरफ भेजे कि उसके इस सपने का क्या मतलब था।

इस तरह यह बौद्ध धर्म चीन में फैला और फिर टैंग साम्राज्य[30] के समय तक फैलता ही चला गया। उस समय में बादशाह और राजाओं से ले कर गाँव के किसानों और गरीबों तक और अक्लमन्दों से ले कर गँवारों और बेपढ़े लिखे लोगों तक सभी बुद्ध जी का आदर करते थे।

---

[27] Eastern Hans
[28] Ming Di
[29] Golden Saint
[30] Tang Dynasty

पर आखिरी दो साम्राज्यों के समय में उनके ये उपदेश कुछ कम होते चले गये और लोगों का उन पर ध्यान देना भी कुछ कम होता चला गया।

इन दिनों में बेचारे बौद्ध साधु अमीर लोगों के घर जाते थे और वहाँ जा जा कर बौद्ध सूत्र पढ़ पढ़ कर पैसे माँगते थे। बहुत सारे लोग तो पुराने साधु संतों की बातें में सुनते भी नहीं थे।

टैंग साम्राज्य के बादशाह ताई सुंग[31] के समय में एक बार बहुत ज़ोर का सूखा पड़ा तो बादशाह और उसके औफीसरों ने देश में जगह जगह वेदियाँ बनवा दीं ताकि लोग बारिश के लिये प्रार्थना कर सकें। उस समय बहुत सारे लोगों ने प्रार्थनाऐं कीं।

तब पूर्वीय समुद्र के ड्रैगन राजा[32] ने आकाश गंगा के ड्रैगन राजा[33] से बात की कि "आज नीचे धरती पर वे सब बारिश के लिये प्रार्थना कर रहे हैं। भगवान[34] ने टैंग के राजा की प्रार्थना मान ली है सो कल तुम तीन इंच बारिश कर देना।"

आकाश गंगा का बूढ़ा ड्रैगन बोला — "नहीं मैं केवल दो इंच ही बारिश करूँगा।"

[31] At the time of the Emperor Tai Dsung of Tang Dynasty. Tai Dsung was Li Schi Min. He was the most glorius and splendid of all Chinese rulers.

[32] Dragon King of the Eastern Sea – he has appeared frequently in Chinese fairy tales.

[33] Dragon King of the Milky Way

[34] This word is used to denote Yu Huang, the highest God (the Lord of Jade or of Nephrite)

पूर्वीय समुद्र के ड्रैगन ने कहा — "जब भगवान ने तीन इंच बारिश करने के लिये कहा है तो तुमको तीन इंच बारिश ही करनी पड़ेगी।"

पर आकाशगंगा के ड्रैगन ने कहा — "नहीं मैं केवल दो इंच ही बारिश करूँगा।"

सो दोनों ड्रैगन ने शर्त लगायी कि जो भी हारा वह एक कीचड़ वाले गिरगिट में बदल जायेगा।

अगले दिन भगवान ने आकाश गंगा के ड्रैगन को अचानक हुक्म दिया कि वह अपनी हवा और बादलों की आत्माओं को धरती पर तीन इंच बारिश करने के लिये नीचे भेजे। अब हुक्म न मानने का तो सवाल ही नहीं उठता।

पर उस बूढ़े ड्रैगन ने अपने मन में सोचा — "ऐसा लगता है कि मेरी बजाय ड्रैगन राजा को यह ज़्यादा अच्छी तरह से पता था कि क्या होने वाला था फिर भी कीचड़ वाले गिरगिट में बदलना तो बड़े शर्म की बात है।"

इसलिये उसने केवल दो इंच पानी ही बरसाया और भगवान के दरबार में जा कर कह दिया कि "मैं आपका हुक्म बजा लाया।"

पर उतना ही पानी बरसाने के लिये ही राजा ताई सुंग ने भगवान को धन्यवाद दिया। उस धन्यवाद में उसने कहा — "यह कीमती पानी हमको दो इंच दिया गया। उसके लिये आपका बहुत बहुत धन्यवाद। हम आपसे दीनता से प्रार्थना करते हैं कि हमको

थोड़ा सा पानी और दिया जाये ताकि हमारी सूखी हुई फसलें हरी हो सकें।"

जब भगवान ने राजा की यह प्रार्थना पढ़ी तो वह बहुत गुस्सा हुए। वह बोले — "इस अपराधी आकाश गंगा के ड्रैगन की यह हिम्मत कैसे हुई कि वह उतने पानी से कम पानी बरसाये जितना मैंने उससे बरसाने के लिये कहा था।

वह अपनी इस अपराधी ज़िन्दगी के साथ और नहीं जी सकता इसलिये धरती पर रहने वाले वी डिशौंग[35] जो वहाँ का बड़ा आदमी है उसका सिर काट देगा ताकि सारे जीवों के लिये यह एक मिसाल रहे।"

उस रात बादशाह ताई सुंग ने एक सपना देखा। उसने देखा कि एक बड़े साइज़ का आदमी[36] उसके कमरे में घुसा।

उसने बड़ी मुश्किल से अपने आँसू रोकते हुए बादशाह से प्रार्थना की — "ओ बादशाह, मेरी जान बचाओ। मैंने अपनी मर्जी से कम पानी बरसाया था भगवान की मर्जी से नहीं। इसलिये भगवान ने गुस्सा हो कर यह हुक्म दिया है कि वी डिशौंग कल दोपहर को मेरा सिर काट देगा।

बस अगर तुम वी डिशौंग को किसी तरह उस समय सोने से रोक लो और प्रार्थना करो कि मैं बच जाऊँ तो मैं बच जाऊँगा।"

---

[35] We Dschong – name of a man living on the Earth
[36] Translated for the word "Giant"

बादशाह ने उसको यह करने का वायदा किया और वह बड़े साइज़ का आदमी उसको सिर झुका कर चला गया।

अगले दिन बादशाह ने वी डिशौंग को अपने महल में बुलाया। उन दोनों ने साथ साथ चाय पी और फिर शतरंज खेलने बैठ गये। दोपहर को वी डिशौंग को बहुत थकान महसूस हुई पर वह वहाँ से जाने की हिम्मत नहीं कर सका।

शतरंज में क्योंकि बादशाह का एक प्यादा[37] मारा जा चुका था इसलिये उसकी निगाह शतरंज पर लगी हुई थी और वह अपनी अगली चाल के बारे में सोच रहा था।

इससे पहले कि वह कुछ जान सकता कि वी डिशौंग ने खर्राटे मारना शुरू कर दिया। उसके खर्राटों की आवाज तो ऐसी थी जैसे कहीं बादल गरज रहे हों।

बादशाह तो यह देख कर डर गया। उसने उसको तुरन्त ही पुकारा पर वह तो जाग ही नहीं रहा था। तब उसने दो हिजड़ों को बुलाया और उनसे उसको हिला कर जगाने को कहा। उसके बाद भी वह काफी देर बाद जागा।

बादशाह ने उससे पूछा — "यह तुम अचानक सो कैसे गये?"

वी डिशौंग बोला — "मुझे लगा कि भगवान मुझसे कह रहे हैं कि तुम बूढ़े ड्रैगन का गला काट दो। मैंने अभी अभी उसका गला काटा है और उसके ज़ोर से मेरी बॉह अभी भी दुख रही है।"

---

[37] Translated for the word "Pawn". Pawn is the smallest Goatee in chess.

उसकी बात अभी खत्म ही हुई थी कि एक ड्रैगन का सिर जो एक बुशैल[38] के बराबर बड़ा था ऊपर से हवा में से नीचे आ गिरा।

उसको देख कर बादशाह तो बहुत डर गया और अपनी सीट से उठ गया और बोला — "मैंने इस ड्रैगन के प्रति पाप किया है।"

कह कर वह अपने महल के अन्दर वाले कमरे में चला गया। उसका दिमाग परेशान हो गया था। वह वहाँ जा कर अपने काउच पर आँखें बन्द करके चुपचाप लेट गया और धीमी धीमी साँस लेने लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

अचानक उसने दो लोग देखे जो जामुनी रंग की पोशाक पहने हुए थे और उनके हाथ में एक कागज था। उन्होंने उससे कहा — "आकाश गंगा के ड्रैगन ने धरती के बादशाह के खिलाफ शिकायत की है। उन्होंने हमें तुमको लाने के लिये भेजा है। उठो और हमारे साथ रथ में चलो।"

बिना कुछ सोचे विचारे बादशाह वहाँ से उठा और बाहर आँगन की तरफ चला। वहाँ उसके किले के सामने एक रथ खड़ा हुआ था जो उसका इन्तजार कर रहा था। बादशाह उसमें बैठ गया और वह रथ उसको ले कर हवा में उड़ गया।

---

[38] Bushel is a unit of dry measure containing 4 pecks, equivalent in the US for 35.24 liters and in Great Britain for 36.38 liters (Imperial bushel). See its picture above.

पल भर में ही वह मरे हुओं के शहर[39] में पहुँच गया। जब वह उस शहर में घुसा तो उसने "ऊँचे पहाड़ के स्वामी"[40] को शहर के बीच में बैठे पाया।

वहाँ उसके बाँये और दाँये ओर को पाताल के दस राजकुमार[41] भी बैठे थे। वे सब उठे, उन्होंने उसके सामने सिर झुकाया और उससे बैठने के लिये कहा।

तब उस ऊँचे पहाड़ के स्वामी ने कहा — "आकाश गंगा के बूढ़े ड्रैगन ने सचमुच ही एक ऐसा काम किया था जिसकी सजा उसको मिलनी ही चाहिये थी।"

फिर भी बादशाह ने भगवान से प्रार्थना करने की हिम्मत की कि वह उस ड्रैगन की ज़िन्दगी बख्श दे। पर यह मामला क्योंकि केवल शतरंज खेलने के चक्कर में रह गया बस यही उससे एक बहुत बड़ी गलती हो गयी।

ऊँचे पहाड़ के स्वामी ने आगे कहा — "अब यह बूढ़ा ड्रैगन मुझसे बराबर शिकायत कर रहा है। जब मैं यह सोचता हूँ कि हजार साल से भी पहले से कैसे उसको संत बनने की इच्छा हो रही थी और अब उसको इस रूप बदलने के चक्र में पड़ना पड़ रहा है।

तो मुझे इस बात का बहुत दुख है कि उसके साथ ऐसा हुआ और इसी वजह से इस मुश्किल को सुलझाने के लिये मैंने इन दस

[39] City of the Dead
[40] Translated for the words "Lord of the High Mountain". Bhagavan word is used from him hereafter.
[41] Ten princes of Nether world

राजकुमारों को यहाँ बुलाया है। और इसी लिये मैंने तुमको भी उसके बारे में सलाह लेने के लिये यहाँ बुलाया है।"

फिर भगवान ने बादशाह से कहा — "स्वर्ग में, धरती पर और पाताल में केवल बुद्ध जी का ही उपदेश है जिसकी कोई सीमा नहीं है। इसलिये जब तुम धरती पर लौट जाओ तो वहाँ स्वर्ग के **33** देवताओं के लिये बड़ी बड़ी बलियों का इन्तजाम करना।

बुद्ध के **3600** पवित्र पुजारियों से इस बूढ़े ड्रैगन को आज़ाद कराने के लिये, उसको आसमान में ऊपर उठाने के लिये और उसको अपने पुराने रूप में लाने के लिये उनके सूत्र पढ़वाना।

पर केवल **3600** आदमियों के इस पाठ से ही यह काम नहीं बनेगा। इसके लिये पश्चिम की तरफ भी जाना पड़ेगा और वहाँ से भी सत्य को लाना पड़ेगा।"

बादशाह इस बात पर राजी हो गया तो बड़े पहाड़ के स्वामी और पाताल के उन दस राजकुमारों ने उसके सामने सिर झुकाते हुए कहा — "अब आप धरती पर वापस जा सकते हैं।"

तभी अचानक ताई सुंग ने अपनी आँखें खोलीं तो देखा कि वह तो अपने शाही काउच पर लेटा हुआ था। उसने यह सब बात सबको बतायी कि यह उसकी गलती थी जिसकी वजह से आज वह आकाश गंगा का ड्रैगन इस दशा को पहुँचा है।

उसने फिर बुद्ध जी के सबसे ज़्यादा पवित्र पुजारी को पश्चिम के सूत्रों को लाने के लिये भेज दिया। और वह सबसे ज़्यादा पवित्र

पुजारी यॉगटिसीकियॉग का साधु हुआन डीशुऑग[42] था जो बादशाह का यह हुक्म सुन कर बादशाह के दरबार में हाजिर हुआ।

हुआन डीशुऑग का असली नाम शेन[43] था। उसके पिता ने इस बादशाह से पहले वाले बादशाह के राज्य में बहुत ऊँची शिक्षा पायी थी। इसलिये उसको यॉगटिसीकियॉग के मन्डारिन जिले के दफ्तर में एक औफीसर की नौकरी मिल गयी थी।

वह अपनी पत्नी और छोटे बच्चे शेन के साथ अपनी इस नौकरी की शुरूआत करने के लिये इस नये जिले की तरफ चला पर जब उसका जहाज पीली नदी[44] के पास पहुँचा तो वह कुछ डाकुओं के हाथ पड़ गया।

उन डाकुओं के कप्तान ने जहाज के सारे लोगों को मार डाला, शेन के पिता को समुद्र में फेंक दिया और शेन की माँ और वे कागज जो उसके पिता को मन्डारिन में औफीसर बनने के लिये मिले थे ले कर जिले के दफ्तर पहुँच गया। वहाँ जा कर उसने दफ्तर में बनावटी नाम से अपना काम शुरू कर दिया।

और जो उसके साथ और डाकू लोग थे वे भी उसी के साथ ही वहाँ काम करने लगे। शेन की माँ को उसको छोटे बच्चे के साथ एक मीनार में कैद कर दिया गया। जितने भी नौकर उनकी सेवा में लगाये गये थे वे सब भी उन डाकुओं के ही लोग थे।

[42] Huan Dshuang – was originally known as Tschen

[43] Tschen – name of Huan Dschuang

[44] Hwang Ho or Yellow River – one of the two main rivers of China

उस मीनार के नीचे एक तालाब था जिसमें एक छोटा सा फव्वारा था जो पीली नदी की दीवार तक बहता था। एक दिन पत्नी ने बॉस की एक टोकरी[45] ली, उसकी झिरियों को बन्द किया और उसमें अपने बच्चे को लिटाया।

फिर उसने अपनी उँगली काटी और उसके खून से उसने एक रेशमी कागज के टुकड़े पर बच्चे के जन्म का दिन और समय लिखा। इसके साथ उसने यह भी लिखा कि जब वह बच्चा 12 साल का हो जाये तो वह उसको वहाँ आ कर बचा ले।

यह सब लिख कर उसने उस टुकड़े को बच्चे के पास ही रख दिया। रात को जब वहाँ कोई नहीं था तो उसने उस टोकरी को तालाब में बहा दिया। तालाब के पानी का बहाव उसको यॉगटिसीकियॉग नदी में ले गया।

एक बार वह टोकरी नदी में पहुँची तो नदी का बहाव उसको सुनहरी पहाड़ी पर बनी मोनेस्टरी[46] तक ले गया। यह सुनहरी पहाड़ी नदी के बीच में एक टापू था।

इत्तफाक से उसी समय उस मौनेस्टरी से एक साधु नदी से पानी लेने आया हुआ था। उसको वह टोकरी दिखायी दे गयी तो वह उसे मौनेस्टरी ले गया।

---

[45] Bamboo basket – is the Mose motive which occurs in other Chinese fairy tales.

[46] Monastery on the Golden Hill – an island in the Hwang Ho river

वहाँ जा कर उसने देखा कि उसमें तो एक बच्चा था और उसके साथ खून से लिखा हुआ एक कागज था। उसने अपने पुजारियों से उसके बारे किसी से कुछ न कहने के लिये कहा।

जब वह लड़का पाँच साल का हुआ तो उन्होंने उसको धार्मिक पुस्तकें पढ़ानी शुरू कीं। वह बच्चा अपने साथियों से कहीं ज़्यादा होशियार था। वह उन पुस्तकों का मतलब बहुत अच्छी तरह से और बहुत जल्दी समझ लेता था। धीरे धीरे वह उन पुस्तकों में डूबता चला गया।

यह देख कर उसको बौद्ध बना लिया गया और उसको "यॉगटिसीकियॉग का साधु" का नाम दे दिया गया। जब तक वह बारह साल का हुआ तब तक वह काफी बड़ा और ताकतवर आदमी हो गया था।

तब उस साधु ने जो उसको वहाँ ले कर आया था उसे खून से लिखा वह नोट दिया जो उसको उसकी टोकरी में मिला था। वह नोट पढ़ कर वह बच्चा वहीं जमीन पर बैठ गया और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।

जब वह कुछ सँभला तो उसने अपने लाने वाले साधु को उस सबके लिये धन्यवाद दिया जो उसने उसके लिये किया था। फिर वह उस शहर के लिये चल दिया जिसमें उसकी माँ रहती थी।

उसने मन्डारिन के दफ्तर का एक चक्कर लगाया, लकड़ी की मछली[47] को पीटा और चिल्लाया "हे भगवान दुख से छुटकारा दिलाओ।"

उधर उस डाकू ने जिसने शेन के पिता को मारा था और दफ्तर में उसकी जगह ले ली थी तब तक अपने पैर वहाँ अच्छी तरह जमा चुका था। उसने अपनी जान पहचान बहुत बड़े बड़े लोगों से कर ली थी। उसने पिछले दस सालों से उसकी पत्नी को भी कुछ ज़्यादा आजादी दे दी थी।

उस दिन वह डाकू दफ्तर के किसी काम से बाहर गया हुआ था। पत्नी अपने घर में बैठी हुई थी। जब उसने अपने दरवाजे के आगे लकड़ी की मछली को पीटने की आवाज सुनी और किसी को कहते सुना "हे भगवान दुख से छुटकारा दिलाओ।" तो वह दिल ही दिल में रो पड़ी।

उसने अपनी नौकरानी को उस पुजारी को अन्दर लाने के लिये बाहर भेजा। वह पुजारी यानी उसका बेटा शेन उसके घर के पिछले दरवाजे से अन्दर आया।

जब माँ ने देखा कि उसकी शक्ल तो अपने पिता की शक्ल से कितनी मिलती जुलती थी तो वह अपने आपको रोक न सकी और बहुत ज़ोर से रो पड़ी।

---

[47] Wooden Fish – is a hollow piece of wood in the form of a fish which is beaten by Buddhists as a sign of watchfulness.

तब यॉगटिसीकियॉग के साधु ने समझा कि वही उसकी मॉ थी। उसने खून से लिखा वह नोट निकाला और उसको दिया।

उसने उस नोट पर हाथ फेरा और सुबकियॉ लेते हुए बोली — "मेरे पिता एक बहुत ही ऊॅचे अफसर हैं। अब वह अपने काम से रिटायर हो चुके हैं और राजधानी में रहते हैं।

पर मैं उनको यह सब लिख न सकी क्योंकि इस डाकू ने मेरे ऊपर बहुत कड़ा पहरा लगा रखा था। बस मैं अपने आपको किसी तरह से तुम्हारे यहॉ आने तक ज़िन्दा रख पायी।

अब तुम जल्दी से राजधानी चले जाओ और यह सब मामला साफ कर दो तो फिर में शान्ति से मर सकूॅगी। पर तुमको यह सब बहुत जल्दी और छिप कर करना चाहिये ताकि किसी को पता न चले।"

वह लड़का तुरन्त ही वहॉ से चला गया। पहले वह अपनी मौनेस्टरी गया और वहॉ से विदा ले कर वह सिआनफू राजधानी चल दिया।

जब वह राजधानी पहुॅचा तो उसके नाना की तो मृत्यु हो चुकी थी पर उसका एक मामा था जिसको दरबार में कई लोग जानते थे और वह अभी ज़िन्दा था।

उसने तुरन्त ही कुछ सिपाही भेज कर डाकुओं का अन्त करा दिया। इस बीच उस साधु की मॉ भी मर गयी।

उस दिन के बाद से वह साधु वहीं सिआनफू के एक पगोडा में रहने लगा था। वहाँ वह हुआन डीशुऑग के नाम से मशहूर हो गया।

जब बादशाह ने अपना हुक्म जारी किया था कि उसको पश्चिम भेजने के लिये सबसे अच्छा बौद्ध साधु चाहिये तब वह यॉगटिसीकियॉग का साधु करीब 20 साल का था। वह बादशाह के दरबार में आया तो बादशाह ने उसका बहुत आदर किया और उसने उसको भारत भेज दिया।

वह भारत में 17 साल रहा। जब वह वापस आया तो वहाँ से वह किताबों के तीन संग्रह[48] ले कर आया। हर संग्रह में 540 हस्तलेख थे। ये सब ला कर उसने बादशाह को दे दिये। बादशाह उनको देख कर बहुत खुश हुआ।

उसने अपने हाथ से उनका परिचय लिखा और उसमें उसने वह सब भी लिखा जो कुछ उसके साथ हुआ था। तब उसके बाद बलि दी गयी जिससे आकाशगंगा के ड्रैगन को अपने पुराने रूप की प्राप्ति हुई।

48 Three collections of manuscrpts – means “Tripitaka

6 चाणक्य[49]

बच्चो चाणक्य का नाम तो तुम सबने सुना ही होगा। इनका नाम अक्सर सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के नाम से जुड़ा रहता है क्योंकि इन्होंने ही उसको राजा बनाया था और इसी के बाद मौर्य राज्य की स्थापना हुई। चन्द्रगुप्त के बाद इन्होंने उसके बेटे बिन्दुसार, अशोक के पिता, के दरबार में भी काम किया।

इनका असली नाम विष्णुगुप्त या कौटिल्य था। शायद कौटिल्य इनका गोत्र था। इनका जन्म **370** बीसी में चनक गॉव[50] में हुआ था इसी लिये शायद ये चाणक्य कहलाये। इनकी मृत्यु **283** बीसी में हुई थी यानी ये अपनी मृत्यु के समय लगभग **113** साल के थे।

इनकी मृत्यु के बारे में कुछ का कहना है कि उस समय जैसा कि जैन धर्म में चलन था इन्होंने खाना पीना छोड़ दिया था जबकि दूसरों का कहना है कि इनकी मृत्यु राजा बिन्दुसार के दरबार के षड़यन्त्र की वजह से हुई।

ये ब्राह्मण थे और इनकी चोटी बहुत मशहूर है। ये तीनों वेदों और राजनीति में पारंगत थे। इनके कीले[51] बहुत लम्बे थे जिसको लोग कहते थे कि वे राजा बनने की निशानी थी।

[49] Chanakya – real name is Vishnugupt or Kautilya.
[50] Chanak village is believed to be in Southern India.
[51] Translated for the Canine teeth

उन कीलों को देख कर इनकी माँ को डर लगा कि राजा बनने के बाद तो उसका बेटा उसकी परवाह ही नहीं करेगा। इस पर उन्होंने अपने वे दाँत ही तोड़ दिये थे। पर जब राजा बनने का समय आया तो इन्होंने राजा बनने से इनकार कर दिया और चन्द्रगुप्त को राजा बना दिया।

चाणक्य अपने दाँत तोड़ देने के बाद और अपने टेढ़े पैरों की वजह से काफी बदसूरत थे।

कहते हैं कि राजा नन्द[52] से अपमानित होने के बाद इन्होंने अपनी चोटी खोल दी थी और कसम खायी कि जब तक ये उसको राज गद्दी से हटा नहीं देंगे अपनी चोटी नहीं बाँधेंगे और इन्होंने वैसा ही किया भी।

यह भी कहते हैं कि जब राजा नन्द मरा तो ये अपनी चोटी बाँधने से पहिले खुद राजा नन्द की लाश को देखने गये थे। उन्होंने उसके शरीर को जलाया नहीं बल्कि सड़ने के लिये फेंक दिया।

ये तक्षशिला यूनिवर्सिटी में अर्थशास्त्र और राजनीति के प्राध्यापक थे। आजकल तक्षशिला पाकिस्तान में है।

इनके नाम पर दो पुस्तकें हैं जो अपने समय की बहुत ही मुख्य और मशहूर पुस्तकें तो थीं ही पर आज भी वे बहुत काम की हैं – एक तो इनका अर्थशास्त्र और दूसरी इनकी चाणक्य नीति। इनकी

[52] Raja Nand (or Dhanaanand) was the King of Magadh Kingdom, Bihar, during the 4th century BC and reined between 345-321 BC.

चाणक्य नीति की महाभारत की विदुर नीति से तुलना की जा सकती है।

इनकी रचनाऐं गुप्त साम्राज्य की समाप्ति के आस पास लुप्त हो गयी थीं पर वे केवल **100** साल पहले **1915**[53] में ही मिली हैं। इनकी तुलना यूनान के दार्शनिक अरस्तू से भी की जाती है जो अलैक्ज़ैन्डर[54] के गुरू थे।

इनके बारे में ऐतिहासिक रूप से तो कोई खास बात नहीं मिलती हॉ केवल दूसरे स्रोतों से ही इनके बारे में कुछ बातों का पता चलता है जैसे बौद्ध**,** जैन और काश्मीरी स्रोत।

पर ये सब स्रोत इस बात पर जरूर एकमत हैं कि उस समय के राजा नन्द ने चाणक्य का अपमान किया और उस अपमान का बदला लेने के लिये उन्होंने उसको हटा कर चन्द्रगुप्त को राजा बना दिया।

राजा नन्द उस समय के पाटलिपुत्र यानी आजकल की पटना के राजाओं का एक टाइटिल था। जिस नन्द को हटा कर चन्द्रगुप्त राजा बना था वह नन्द साम्राज्य का नवॉ और आखिरी नन्द था – धनानन्द।

चाणक्य के बारे में तो कई पुस्तकें लिखी जा सकती हैं पर यहॉ उनके बारे में इतना सब लिखना न तो मुमकिन है न ही जरूरी और

---

[53] Some say it was discovered in 1904

[54] Chanakya can be compared to Aristotle, a great philosopher, who was the teacher of Alexander the Great – the King of Greece

न ही हमारा उद्देश्य पर फिर भी उनके बारे में कुछ जरूरी जानकारी तो होनी जरूरी है वरना उनकी महानता का पता लगाना बहुत मुश्किल है।

आज हम यहाँ उनके जीवन की कुछ अजीबो गरीब घटनाऐं दे रहे हैं।

1 चाणक्य और राजा नन्द

एक बार राजा नन्द ने ब्रह्म भोज किया जिसमें उसने बहुत सारे ब्राह्मणों को खाना खिलाया। चाण्क्य भी उस रस्म में गये। उनकी बदसूरत शक्ल देख कर राजा नन्द ने उनको वहाँ से बाहर निकालने का हुक्म दे दिया।

चाणक्य को इस बात पर गुस्सा आ गया और उन्होंने अपना जनेऊ यानी यज्ञोपवीत तोड़ दिया और राजा को शाप दिया। राजा ने उनको बन्दी बनाने का हुक्म भी दिया पर चाणक्य वेश बदल कर वहाँ से बच कर भाग गये।

बाद में उन्होंने राजा नन्द के बेटे पब्बत[55] से दोस्ती कर ली और उसको अपने पिता की राज गद्दी छीनने के लिये उकसाया। राजकुमार पब्बत ने उनको राजा नन्द की सील वाली अँगूठी ला कर दे दी जिसको ले कर चाणक्य महल के गुप्त दरवाजे से भाग गये।

[55] Pabbat – name of the son of King Dhanaa Nand

2 चाणक्य की चन्द्रगुप्त से मुलाकात

चन्द्रगुप्त उनको कैसे मिला इसकी भी एक मजेदार कहानी है। महल से भाग कर उन्होंने काफी पैसे इकट्ठे किये और फिर किसी ऐसे आदमी की तलाश में रहे जिसको वह राजा नन्द की जगह उसकी राज गद्दी पर बिठा सकें।

एक दिन वह कहीं जा रहे थे कि उन्होंने कुछ बच्चों को एक खेल खेलते देखा जिसमें यह बच्चा चन्द्रगुप्त राजा बना हुआ था और दूसरे बच्चे मन्त्री चोर डाकू आदि बने हुए थे।

जिस समय ये वहाँ से गुजर रहे थे उस समय डाकुओं को चन्द्रगुप्त के सामने लाया गया तो उसने उनके हाथ काटने का हुक्म दे दिया। पर उसके बाद जादू के ज़ोर से उनको जोड़ भी दिया।

चन्द्रगुप्त शाही परिवार में पैदा हुआ था पर अपने पिता के मारे जाने पर उसको एक शिकारी ने पाला पोसा। बाद में देवताओं ने उसकी माँ को मजबूर किया कि वह उसको छोड़ दे।

चाणक्य उसकी यह जादुई ताकत को देख कर चकित रह गये। उन्होंने उसको उस शिकारी से **1000** सिक्के दे कर इस बच्चे को खरीद लिया। और इस तरह से चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को पाया।

2 चाणक्य और खिचड़ी

चन्द्रगुप्त को ले कर चाणक्य ने राजा नन्द पर हमला किया भी पर वह हार गये। असल में उन्होंने राजा नन्द को उसके घर में जा कर

हराने की कोशिश की थी पर वहाँ वह खुद ही हार गये। इस असफलता की वजह से वह बहुत परेशान से इधर उधर घूम रहे थे।

कि एक दिन सड़क पर जाते समय उनको एक घर से आवाज आयी। एक बच्चा खिचड़ी खा रहा था तो खिचड़ी खाते खाते उसका हाथ जल गया। वह रोने लगा कि उसका हाथ जल गया।

उसकी माँ ने उसको डाँटा — "तू इतना बड़ा हो गया तुझे खिचड़ी खानी नहीं आती तू तो विष्णुगुप्त की तरह से खिचड़ी खाना चाहता है जैसे उसने बिना चारों तरफ के राज्य जीते राजा नन्द को जीतने की कोशिश की थी ऐसे ही तू भी बीच में से खिचड़ी खाना चाहता है। तेरा हाथ नहीं जलेगा तो और क्या होगा।

अरे बेवकूफ खिचड़ी को पहले बाहर के किनारे से खाया जाता है फिर वहाँ से खाते खाते बीच तक आते हैं। बाहर के किनारे की खिचड़ी जल्दी ठंडी होती है सो पहले वहीं से खाना शुरू कर।

अन्दर की खिचड़ी तो बहुत गर्म होती है तू एकदम से सबसे पहले वहाँ से खिचड़ी कैसे खा सकता है। वहाँ से खायेगा तो तेरा हाथ तो जलेगा ही।"

चाण्क्य ने बाहर से ही यह सुना तो उनको अपनी गलती समझ में आ गयी। उन्होंने भी वही गलती की थी जो वह बच्चा खिचड़ी खाने में कर रहा था।

उन्होंने राजा नन्द के चारों ओर के राज्यों को बिना दोस्त बनाये बिना ही राजा नन्द पर चढ़ाई कर दी थी जिससे वे राजा नन्द की सहायता के लिये आ गये और चाणक्य हार गये।

इस डॉट से उन्होंने सीख ली और फिर पहले राजा नन्द के चारों ओर के राजाओं को अपना दोस्त बनाया और फिर राजा नन्द के ऊपर चढ़ाई की तभी वह उसको जीत सके।

3 चाणक्य और पेड़ की जड़

एक बार चाणक्य कहीं जा रहे थे तो उनके पैर के नीचे एक कॉटेदार पौधा आ गया जिससे उनका पैर छलनी हो गया और उनके खून निकल आया।

गुस्से के मारे उन्होंने न केवल उस पौधे को ही तोड़ा बल्कि उसको जड़ सहित ही उखाड़ कर फेंक दिया और इतना ही नहीं उसके गड्ढे में जहर डाल दिया। न रहेगा बॉस न बजेगी बॉसुरी। इस तरह चाणक्य किसी भी बुराई को आधा मिटाने में विश्वास नहीं करते थे बल्कि उसको जड़ से ही नष्ट करने में विश्वास करते थे।

4 चाणक्य और चींटियॉ

जब राजा नन्द हार गया और चन्द्रगुप्त राजा बन गया तो एक दिन इन्होंने महल में कुछ चींटियॉ देखीं जो महल की झिरी में से अन्न के दाने बाहर ले जा रही थीं।

चाणक्य ने उस झिरी को देखा तो पाया कि वहॉ तो राजा नन्द के सिपाही छिपे हुए थे और वे अचानक हमले की तैयारी में थे। चाणक्य ने राजा नन्द के सिपाहियों को वहीं बन्द करके तुरन्त ही वह इमारत छोड़ दी। फिर उन्होंने उस महल में आग लगा दी और उसको नीचे तक जला दिया।

तो ऐसा था चाण्क्य का व्यक्तित्व।

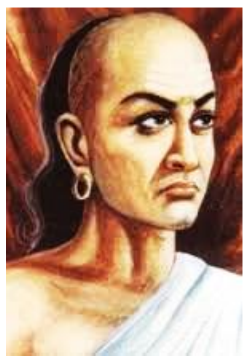

7 अलैक्ज़ैन्डर दी ग्रेट[56]

अलैक्ज़ैन्डर, हिन्दी में सिकन्दर, की ऐतिहासिक कहानियाँ हमने तुम्हारे लिये यूरोप के यूनान देश के इतिहास से ली है। अलैक्ज़ैन्डर यूनान देश का राजा था और **356** बीसी में पैदा हुआ था। **343** बीसी से यानी जब यह **13** साल का था तबसे ही यह वहाँ के मशहूर दार्शनिक अरस्तू[57] का शिष्य था।

कहते हैं कि जिस दिन यह अपनी माँ के गर्भ में आया उसी दिन इसकी माँ ने सपना देखा कि उसके गर्भ पर एक बिजली गिरी जिससे एक आग जली जिसकी रोशनी चारों तरफ दूर दूर तक फैल गयी।

शादी के कुछ दिन बाद इसके पिता फिलिप द्वितीय[58] ने भी एक सपना देखा था कि उसने अपनी पत्नी के गर्भ को शेर की शक्ल वाली एक सील से बन्द कर दिया है।

यह बहुत छोटी उम्र में ही मर गया था – जून **323** बीसी में, यानी केवल **33** साल की उम्र में। पर अपनी इतनी छोटी सी उम्र में ही इसने अपना राज्य बहुत बढ़ा लिया था।

[56] Alexander the Great

[57] Aristotle – the great thinker and philosopher of Greece

[58] Philip II – name of the father of Alexander

1 अलैक्ज़ैन्डर और घोड़ा

जब अलैक्ज़ैन्डर केवल 10 साल का था तो एक व्यापारी उसके पिता फिलिप के पास एक घोड़ा बेचने के लिये ले कर आया। वह उसको 13 टेलैन्ट[59] में बेचना चाह रहा था पर जब लोग उस पर सवारी करना चाह रहे थे तो वह किसी को बैठने ही नहीं दे रहा था।

यह देख कर अलैक्ज़ैन्डर के पिता ने वह घोड़ा वापस कर दिया कि जब वह किसी को सवारी ही नहीं करने दे रहा तो वह घोड़ा किस काम का। अलैक्ज़ैन्डर ने उसको देखा और अपने पिता से उस पर सवारी करने की इजाज़त माँगी।

पिता ने सोचा कि जब इतने बड़े बड़े घुड़सवार उस पर सवारी नहीं कर सके तो यह 10 साल का बच्चा कैसे उस पर काबू पायेगा तो पहले तो उसने ना कर दी पर अलैक्ज़ैन्डर की जिद देख कर उसको इजाज़त दे दी।

अलैक्ज़ैन्डर ने देखा कि घोड़ा अपनी परछाई से डर गया था सो उसने उसका मुँह मोड़ दिया जिससे उसको अपनी परछाई न दिखायी दे और उस पर बैठ गया।

घोड़े ने भी उसको बिठा लिया और अलैक्ज़ैन्डर उसको ले कर उस पर सवारी कर के उसको वापस ले आया।

[59] Talent was the then currency coin in several European countries – in Greece, Italy etc.

यह देख कर उसके पिता ने खुशी से उसको चूम लिया और कहा — "भगवान करे बेटे तुम अपनी ऊँची इच्छाओं के अनुसार ही बड़ा राज्य पाओ। यह मैसीडोनिया[60] तो तुम्हारे लिये बहुत छोटा है।" और उसने वह घोड़ा उसके लिये खरीद दिया।[61]

2 अलैक्ज़ैन्डर–गुलामों का गुलाम

अलैक्ज़ैन्डर की यह कहानी बड़ी मजेदार है। अलैक्ज़ैन्डर जब हिन्दुस्तान पर हमला करने आया तो उसने देखा कि हिन्दुस्तानी तो बड़े वीर और निडर लोग हैं तो उनमें से कुछ को उसने अपना दोस्त भी बना लिया।

जब वह अपने देश से चला था तो उसने अपने लोगों से पूछा कि वह हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने जा रहा है वह उनके लिये वहाँ से क्या ले कर आये। तो लोगों न कहा अगर तुम ला सकते हो तो वहाँ से एक हिन्दुस्तानी योगी ले आना। हम लोगों ने कोई योगी नहीं देखा हम लोगों की योगी देखने की बहुत इच्छा है।

जब वह हिन्दुस्तान से वापस जाने लगा तो उसे याद आया कि उसके लोगों ने तो उससे एक योगी मँगवाया था। असल में वहाँ के लोगों ने हिन्दुस्तानी योगी के बारे में बहुत कुछ सुन तो रखा था पर उसको देखा कभी नहीं था सो वह उसे देखना चाहते थे।

[60] Macedonia – a part of Greece

[61] The same incident has been shown in Mahabharat Serial with Bheeshm also. Who had copied whom?

जब उसने उसके बारे में मालूम किया तो उसे पता चला कि वह तो किसी जंगल में मिलेगा। सो वह उसे ढूँढने के लिये जंगल चला गया। वहाँ उसे एक योगी एक पेड़ के नीचे बैठा मिल गया। उस समय वह गहरे ध्यान में लगा हुआ था।

सो अलैक्ज़ैन्डर उसके पास ही बैठ गया और तब तक चुपचाप बैठा रहा जब तक उसने अपनी आँखें नहीं खोलीं। जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो उसने देखा कि योगी की आखें तो एक अजीब सी रोशनी से चमक रही थीं।

बड़े आदरपूर्वक अलैक्ज़ैन्डर ने उसको नमस्ते की और उससे अपने साथ यूनान चलने की प्रार्थना की।

उसने कहा — "आप जो भी चाहेंगे मैं आपको वह दूँगा पर मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे साथ चलें। मेरे लोग आपसे मिल कर बहुत खुश होंगे।"

योगी बड़ी शान्ति से बोला — "मुझे कुछ नहीं चाहिये। मैं जहाँ हूँ वहीं खुश हूँ।"

यह पहली बार था कि अलैक्ज़ैन्डर की प्रार्थना किसी ने ठुकरायी थी। वह अपने आप पर काबू नहीं रख सका।

वह गुस्से में भर कर उठा, उसने अपनी तलवार म्यान में से निकाली और चीख कर बोला — "क्या तुम जानते हो कि तुमसे कौन बात कर रहा है? मैं बादशाह अलैक्ज़ैन्डर हूँ। अगर तुम मेरी

बात नही सुनोगे तो मैं तुमको मार कर तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर दूँगा।"

अलैक्ज़ैन्डर यह देख कर चकित रह गया कि उस योगी पर उसकी इस बात का कोई असर नहीं पड़ा। वह बिना परेशान हुए बोला — "तुम केवल मेरे शरीर को मार सकते हो मुझे नहीं।

और यह शरीर तो कुछ नहीं यह तो केवल एक कपड़ा है जो मैंने पहना हुआ है। मैं शरीर नहीं हूँ। मैं तो वह हूँ जो इस शरीर के अन्दर है। मैं "देह" नहीं हूँ मैं तो "देहिन" हूँ जो इसके अन्दर रहता है।"

योगी आगे बोला — "तुम कहते हो कि तुम राजा हो। क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि तुम कौन हो? तुम राजा नहीं हो, तुम तो मेरे गुलाम के भी गुलाम हो।"

यह सुन कर अलैक्ज़ैन्डर तो और भी ज़्यादा भौंचक्का हो गया। वह उस योगी से पूछे बिना न रह सका — "मैं तुम्हारे गुलाम का भी गुलाम कैसे हूँ ज़रा बताओ तो?"

योगी बड़ी सहानुभूति के साथ उससे बड़ी कोमल आवाज में बोला — "मैंने अपने गुस्से को जीत लिया है इसी लिये मुझे तुम्हारी बात पर गुस्सा नहीं आया क्योंकि गुस्सा मेरा गुलाम है। पर तुम अपने आपको देखो कि तुमको कितनी जल्दी गुस्सा आ गया।

तुम अपने गुस्से को नहीं रोक सके क्योंकि गुस्सा तुम्हारा गुलाम नहीं है बल्कि तुम गुस्से के गुलाम हो। तुम अपने गुस्से पर काबू नहीं

रख सके और वह तुम पर हावी हो गया। और इसी लिये मैंने तुमसे कहा कि तुम तो मेरे गुलाम के भी गुलाम हो।"

अलैक्ज़ैन्डर यह सुन कर चुप रह गया और सोचने लगा कि क्या वह योगी ठीक कह रहा था?

3 अलैक्ज़ैन्डर और उसका गुरू

अलैक्ज़ैन्डर के बारे में ऐसी ही एक कहानी और भी मशहूर है। कहते हैं कि जब अलैक्ज़ैन्डर हिन्दुस्तान आ रहा था तो उसने अपने गुरू अरस्तू से पूछा कि वह वहाँ से उसके लिये क्या ले कर आये।

अरस्तू के दिल में हिन्दुस्तान के लिये बहुत इज़्ज़त थी इसलिये उसने कहा — "पहली बात तो यह कि तुम वहाँ जाना जरूर पर वहाँ जा कर उनसे लड़ना नहीं। मैं हिन्दुस्तान की बहुत इज़्ज़त करता हूँ तुम भी करना।

और अगर तुम वहाँ से मेरे लिये कुछ लाना ही चाहते हो तो एक गीता लाना, थोड़ा सा गंगाजल लाना, एक सन्यासी लाना और वहाँ की मिट्टी लाना।"

अलैक्ज़ैन्डर ने एक अच्छे शिष्य की तरह से वहाँ से सब कुछ लाना चाहा पर वह वहाँ से दो चीज़ें नहीं ला सका – एक तो गंगाजल क्योंकि वह गंगा नदी तक पहुँच ही नहीं पाया और दूसरे सन्यासी क्योंकि वह उसको ले जा ही नहीं सका।

एक बार अलैक्ज़ैन्डर ने अपने गुरू से पूछा — "गुरू जी पसन्द करने और प्यार करने में क्या अन्तर है?"

गुरू जी ने बड़ा सादा सा जवाब दिया — "जब तुम किसी फूल को पसन्द करते हो तो तुम उसे तोड़ लेते हो, पर जब तुम उसी फूल को प्यार करते हो तो तुम उसको रोज पानी देते हो।"

इसी तरह से जब तुम किसी आदमी को पसन्द करते हो तो तुम उसको इस्तेमाल करते हो पर जब तुम उसको प्यार करते हो तब तुम उसकी ठीक से देख भाल करते हो।

4 अलैक्ज़ैन्डर दी ग्रेट

अलैक्ज़ैन्डर को अलैक्ज़ैन्डर दी ग्रेट कहा जाता है। वह केवल नाम का ही ग्रेट नहीं था बल्कि वह सचमुच का ग्रेट था।

एक बार एक चोर को अलैक्ज़ैन्डर के दरबार में चोरी के इलजाम में गिरफ्तार कर के लाया गया।

तो चोर ने अलैक्ज़ैन्डर पर इलजाम लगाया — "तुममें और मुझमें अन्तर ही क्या है? बस इतना ही न कि मैं एक छोटा चोर हॅू और तुम एक बड़े चोर हो। तुम बहुत सारा चुराते हो और मैं बहुत थोड़ा चुराता हॅू।"

अलैक्ज़ैन्डर दी ग्रेट सचमुच का ग्रेट था। वह एक बादशाह था और एक मामूली सा चोर उसको इतनी बड़ी चोरी के लिये इलजाम

लगा रहा था। वह बोला — "हॉ तुम ठीक कहते हो मैं चोर हूॅ।" सो चोर को छोड़ दिया गया।

क्योंकि उसने इस बात को माना कि वह चोर था इसलिये वह ग्रेट था। अगर वह ग्रेट न होता तो उसने उस चोर को यह कहने पर फॉसी लगवा दी होती कि बादशाह अलैक्ज़ैन्डर भी चोर था। या फिर यह कहते हुए कोई और सजा दे दी होती कि "तुम मुझे चोर कह रहे हो? अलैक्ज़ैन्डर दी ग्रेट बादशाह को चोर कह रहे हो?"

पर उसने ऐसा नहीं किया। उसने मान लिया कि वह चोर है और चोर को छोड़ दिया। यही उसका बड़प्पन था।

5 अलैक्ज़ैन्डर की अजीब इच्छाऐं

एक बार अलैक्ज़ैन्डर जब बहुत सारे राजाओं को जीत कर घर वापस लौट रहा था तो रास्ते में बेबीलौन, ईराक[62] में वह इतना बीमार पड़ गया कि कई महीने तक भी वह बिस्तर से नहीं उठ सका।

उसको लगा कि अब वह ज़िन्दा नही बचेगा। उसको यह भी पता था कि उसकी जीतें, उसकी बड़ी सेना, उसकी तेज़ धार वाली तलवार और उसकी सारी सम्पत्ति अब किसी काम की नहीं।

सो उसने अपनी सेना के जनरलों को बुलाया और उनसे कहा — "अब मैं इस दुनियॉ में बस कुछ दिन का ही मेहमान और हूॅ।

[62] In Babylon in Iraq

मेरी तीन इच्छाऐं हैं अगर हो सके तो उनको किसी तरह से पूरा कर देना। मैं चाहता हूँ कि यह दुनियाँ भी अपने जीवन में वे तीन बातें सीखे जो मैंने अपने जीवन में सीखी हैं।"

और इतना कह कर वह रो पड़ा।

जनरलों ने उसको विश्वास दिलाया कि वह उसकी इच्छाओं को अवश्य ही पूरा करेंगे वह उन्हें बताये तो सही। तब वह बोला — "मेरी पहली इच्छा तो यह है कि मेरा डाक्टर अकेला ही मेरे ताबूत को ले कर कब्रिस्तान जाये ताकि लोग यह जाने कि हमको हमारी

मौत से कोई नहीं बचा सकता, यहाँ तक कि हमारा डाक्टर भी नहीं। ज़िन्दगी हमेशा के लिये नहीं है।

मेरी दूसरी इच्छा यह कि जब मेरा ताबूत कब्रिस्तान ले जाया जा रहा हो तो उस रास्ते पर वे सोने चाँदी के टुकड़े और हीरे जवाहरात बिखेर देना जो मैंने ज़िन्दगी भर अपने खजाने में इकट्ठे किये हैं।

यह उनको यह बतायेगा कि मरने के बाद कोई एक छोटा सा टुकड़ा भी हम अपने साथ नहीं ले जा सकते इसलिये ज़िन्दगी भर पैसे के पीछे भागना बेकार है।

और मेरी तीसरी इच्छा यह है कि जब तुम मुझे ताबूत में रख दो तो मेरे दोनों हाथ मेरे ताबूत से बाहर लटका देना। यह जनता को यह बतायेगा कि इन्सान दुनियाँ में खाली हाथ आता है और खाली हाथ ही जाता है।"

उस समय जो लोग वहाँ मौजूद थे इस तरह की इच्छाऐं सुन कर बहुत आश्चर्यचकित हुए और उनकी आँखों में आँसू आ गये। पर उनमें से किसी की भी उससे कोई सवाल पूछने की हिम्मत नहीं हुई। अलैक्ज़ैन्डर के प्रिय जनरल ने उसका एक हाथ उठा कर अपने सीने से लगा लिया।

अन्त में वह बोला — "मेरे शरीर को तुम गाड़ जरूर देना पर उसके ऊपर कोई स्मारक मत बनवाना। इसके अलावा वहाँ भी मेरी कब्र से मेरे हाथ बाहर निकाल देना ताकि लोगों को यह पता चले कि जिस आदमी ने दुनियाँ जीत ली थी वह जब दुनियाँ छोड़ कर गया तो उसके अपने हाथ भी खाली थे।"[63]

[63] All this might be true, but lately it has been found that he was without money and his General had poisoned him.

8 जूलियस सीज़र[64]

यह ऐतिहासिक कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप के इटली देश के इतिहास से ली है। पुराने समय में रोमन साम्राज्य यूरोप का एक बहुत बड़ा साम्राज्य था।

बच्चो तुमने जूलियस सीज़र[65] का नाम तो सुना ही होगा। जूलियस सीज़र इटली का एक बहुत बड़ा बादशाह हो गया है। इसी ने रोम देश को रोमन साम्राज्य में बदल दिया था।

जूलियस सीज़र ट्रोजन के राजकुमार ऐनियास के बेटे लुलुस[66] के खानदान में पैदा हुआ कहा जाता है और ऐनियास देवी वीनस का बेटा माना जाता है। रोमुलस और रेमस[67] जिन्होंने रोम शहर बसाया वे भी ऐनियास के परिवार में ही पैदा हुए थे इस तरह सीज़र एक दैवीय सन्तान था।

यह **13** जुलाई **100** बीसी को पैदा हुआ था और इसकी मृत्यु **15** मार्च **44** बीसी को हुई थी। यानी यह केवल **55** साल ही ज़िन्दा रहा। इसकी तीन शादियाँ हुई थीं और एक इसकी रखैल थी।

---

[64] Julius Caesar – King of Rome

[65] Julius Caesar - "Veni, vidi, vici"; ("I came, I saw, I conquered.") is a Latin phrase popularly attributed to Julius Caesar, who used the phrase in a letter to the Roman Senate around 46 BC after he had achieved a quick victory in his short war against Pharnaces II of Pontus at the Battle of Zela.

[66] Ceasar was born in the family of Lulus, the son of Prince Aeneas (supposedly the son of Venus)

[67] Romulus and Remus – who established Rome

इसके एक बेटी थी, एक बेटा था और एक बेटा इसने गोद रखा हुआ था।

जब यह केवल 16 साल का था तभी इसके पिता की मृत्यु हो गयी थी। उसके बाद यह पादरी बन गया पर बाद में यह मिलिटरी में चला गया।

एक बार यह स्पेन गया तो वहाँ इसने अलैक्ज़ैन्डर[68] की मूर्ति देखी तो वहीं से इसको प्रेरणा मिली कि इसको भी दुनियाँ जीतनी चाहिये।

1 जूलियस सीज़र और समुद्री डाकू

एक बार यह एक समुद्र पार कर रहा था कि इसको समुद्री डाकुओं ने पकड़ लिया और इसको छोड़ने के लिये 20 चाँदी के टैलैन्ट[69] माँगे। सीज़र ने उनसे कहा कि वे उसको छोड़ने के 20 नहीं बल्कि 50 टैलैन्ट माँगें।

उन्होंने 50 टैलैन्ट माँगे और पैसे मिलने के बाद उन्होंने सीज़र को छोड़ दिया। उसके बाद सीज़र ने अपनी कुछ सेना इकट्ठी की और उन सब समुदी डाकुओं को पकड़ कर उन्हें अपने आप ही फाँसी पर चढ़ा दिया।

[68] Alexander the Great (21 July 356 BC – 11 June 323 BC) – a Greek king of Mecedonia

[69] Talent was the then currency coin in use in several European countries

जब उन्होंने उसको पकड़ कर रखा हुआ था उसने उनसे तभी कहा था कि वह उनको फॉसी पर चढ़ा देगा पर उस समय उनको इस बात का विश्वास ही नहीं हुआ कि वह ऐसा करेगा। वे इसको केवल मजाक ही समझते रहे।

2 जूलियस सीज़र कर्ज में

इसके जीवन की दूसरी खास बात यह भी है कि बहुत साल तक इसके ऊपर बहुत सारा कर्जा रहा।

3 जूलियस सीज़र और उसका कैलेन्डर

इसके जीवन की तीसरी खास बात यह कि उस समय रोम में चॉद की चाल का कैलेन्डर चल रहा था। इसने उसको बदल कर वहॉ मिश्र का कैलेन्डर शुरू कर दिया जो सूरज की चाल से चलता था।

इसमें उसने **365.25** दिन का एक साल बनाया और हर चौथे साल में फरवरी के महीने में एक दिन जोड़ कर उसको लौंद का महीना बनाया।[70]

मौसमों से मिलाने के लिये **46** बीसी वाले साल में इसने उस समय के कैलेन्डर में तीन और महीने मिलाये – एक महीना फरवरी के बाद – मार्च और दो महीने नवम्बर के बाद – दिसम्बर और जनवरी।

---

[70] Every 4th year became Leap Year with 29 days in the month of February.

इस तरह से जूलियन कैलेन्डर[71] पहली जनवरी **45** बीसी को शुरू हुआ और यह कैलेन्डर बिल्कुल वैसा ही कैलेन्डर था जैसा कि हम लोग आजकल इस्तेमाल करते हैं। तभी से यह इस्तेमाल में है।

4 जूलियस सीज़र का कत्ल

44 बीसी की **15** मार्च को सीज़र को सीनेट के सेशन में आना था। उसी समय उसको मारने का प्लौट बनाया गया था। मार्क ऐन्टोनी[72] को इस प्लौट का पता **14** मार्च की रात को ही चल गया था।

जिन लोगों को उसको मारना था उनको भी कुछ अन्दाज था कि मार्क ऐन्टोनी सीज़र की सहायता के लिये जरूर आयेगा। सीनेट की यह मीटिंग पौम्पई के थियेटर[73] में थी।

सो उन्होंने उसका पहले से ही इन्तजाम कर के रखा हुआ था कि मार्क ऐन्टोनी को उस थियेटर के बाहर ही रोक लिया जाये ताकि वह सीज़र की सहायता न कर सके। उसको रोकने का यह काम ब्रूटस[74] को दिया गया।

सो जब सीज़र वहॉ थियेटर में आया तो ब्रूटस ने उसके कपड़े पकड़ कर उसको नीचे गिरा दिया। सीज़र ने पूछा भी कि "यह

---

[71] Julian Calendar started from 1st January 45 BC.

[72] Mark Antony, a Roman politician and general, was an ally of Julius Caesar and the main rival of his successor Octavian (later Augustus). The passing of power between the three men led to Rome's transition from a republic to an empire.

[73] Theatre of Pompey – Pompey is a sea port in South-Western coast of Italy

[74] Brutus Albinus – a distant cousin of Caesar

हिंसा क्यों?" पर किसी ने सुना नहीं और लोगों ने उसको अपने अपने खंजर निकाल कर उसे वहीं मार दिया।

कहते हैं कि **60** से ज़्यादा आदमियों ने उसको मारने में हिस्सा लिया और मरने के बाद उसके शरीर पर खंजर के **23** घाव थे।

जब सीज़र मर गया तो ब्रूटस शहर में यह कहते हुए भागा "आखिर हम लोग आजाद हो गये।" "आखिर हम लोग आजाद हो गये।" पर यह सुन कर सब लोग अपने अपने घरों में घुस गये। सीज़र की लाश उस थियेटर के बाहर तीन घंटे तक पड़ी रही।

कुछ साल बाद जहाँ सीज़र को जलाया गया[75] था वहाँ रोमन फ़ोरम[76] के पास सीज़र का एक मन्दिर बनवा दिया गया।

कहते हैं कि किसी ज्योतिषी ने सीज़र को इस विषय में सावधान भी किया था कि **15** मार्च तक उसको कुछ नुकसान होगा। **15** मार्च को आइडिस औफ मार्च[77] भी कहते हैं।

[75] Translated for the word "Cremation"
[76] Roman Forum is an important historical place in Rome, Italy. See its picture above.
[77] Ides of March

5 जूलियस सीज़र और क्लियोपैट्रा 7

क्लियोपैट्रा दुनियाँ का एक बहुत ही महत्वपूर्ण और मशहूर चरित्र है और जूलियस सीज़र से बहुत नजदीक से सम्बन्धित है फिर भी हम इसके बारे में अलग से ही लिखेंगे।

सीज़र के जीवन की राजनीतिक और दूसरी घटनाओं को छोड़ कर इसके जीवन की सबसे अधिक लोकप्रिय घटना मिश्र की रानी क्लियोपैट्रा की घटना है जिसे हमने इससे आगे वाले अध्याय क्लियोपैट्रा में दिया है।

साहित्यिक रचनाऐं

"सीज़र" और "सीज़र और क्लियोपैट्रा 7" के ऊपर बहुत कुछ लिखा गया है। इसके ऊपर दो फिल्में भी बनी हैं।

George Bernard Shaw's play – "Caeser and Cleopatra"
William Shakespeare's play – "Julius Caesar"
Two Films - Cleopatra, in 1934 and 1963

9 क्लियोपैट्रा 7[78]

हालाँकि क्लियोपैट्रा मिश्र की रानी जरूर थी पर कहते हैं कि क्लियोपैट्रा मिश्र की रहने वाली नहीं थी बल्कि यूनान देश[79] की रहने वाली थी। हाँ वह मिश्र देश में पैदा जरूर हुई थी। वह **69** बीसी में पैदा हुई थी और **30** बीसी में मर गयी थी।

वह टोलेमी **1** सोटर[80] के वंश से आती थी जो अलैक्ज़ैन्डर दी ग्रेट का जनरल था और उसने अलैक्ज़ैन्डर के मरने के बाद **323** बीसी में मिश्र पर अधिकार कर लिया था।

इस तरह से इसका वंश **323** बीसी से मिश्र पर राज कर रहा था और **100** साल से भी ज़्यादा सालों तक राज करता रहा।

उन दिनों मिश्र में अपने खून को साफ रखने के लिये लोग अपने ही भाई बहिनों और सम्बन्धियों में शादियाँ कर लेते थे। सो हो सकता है कि क्लियोपैट्रा के माता पिता ने भी यही किया हो सो क्लियोपैट्रा ने भी यही किया और उसने अपने दोनों भाइयों से शादी कर ली।

क्लियोपैट्रा ने पहले अपने दो भाइयों के साथ फिर अपने बेटे के साथ मिश्र पर लगभग **30** वर्ष तक राज किया।

---

[78] Cleopatra VII – the Queen of Egypt

[79] Greece country in Europe

[80] Ptolemy I Soter – he was the General of Julius Caesar. He took over Egypt as its ruler and his family ruled there for about 300 years. Cleopatra was the daughter of Ptolemy VII who died in 51 BC leaving 18 year old Cleopatra and his 10 year old son Ptolemy XIII.

क्लियोपैट्रा बहुत सुन्दर तो थी ही पर वह सुन्दर से ज़्यादा अक्लमन्द थी। पर वह इतनी सुन्दर भी नहीं थी जितना कि रोम के लोगों ने उसको बता रखा है पर वह अपनी अक्लमन्दी के लिये अपनी सुन्दरता से ज़्यादा प्रसिद्ध थी।

मिश्र के स्रोतों से पता चलता है कि वह वहाँ की रानी थी और उसने अपने दरबार में अक्लमन्दों और विद्वानों को ऊँची ऊँची पदवियाँ दे कर उनके ज्ञान का फायदा भी उठाया।

एक दूसरे से ताकत छीन लेना शाही परिवारों में कोई नयी बात नहीं है पर क्लियोपैट्रा के परिवार में तो यह एक परम्परा लगती है।

जब उसने अपने भाई–पति टोलेमी **13** से मिश्र के पूरे अधिकार लेने की कोशिश की तो उसने क्लियोपैट्रा को मिश्र के बाहर खदेड़ दिया। वह मिश्र के बाहर जा कर अलैक्ज़ैन्डर के साथ वापस लौटी और कई साल के खूनी गृह युद्ध के बाद उन दोनों ने टोलेमी **13** को हरा दिया।

उसके बाद उसने अपने छोटे भाई से शादी कर ली। बाद में उसने उसको भी मार दिया ताकि वह अपने बेटे को वहाँ का राजा बना सके।

उसके बाद उसने अपनी बहिन आरसोनो[81] को भी मरवा डाला क्योंकि उसको शक हो गया था कि वह उसकी गद्दी छीनने का प्लान बना रही थी।

[81] Arsonoe – name of the sister of Cleopatra

क्लियोपैट्रा एक अच्छी नाटककार थी। वह अपने आपको देवी समझती थी और इस बात को साबित करने के लिये समय समय पर कुछ कुछ जादू करती रहती थी जिससे वह जिन राजाओं को अपने आधीन बनाना चाहती थी वे उसके देवी होने का सिक्का मान सकें।[82]

इस बात का सबूत यह कहानी है जो अभी हम तुमको बताने जा रहे हैं और यह उसकी सबसे ज़्यादा मशहूर कहानी है।

यह उस समय की बात है जब जूलियस सीज़र मिश्र की घरेलू लड़ाई में पड़ गया था जो उस समय एक बच्चा फैरो और उसकी बहिन–पत्नी और रानी क्लियोपैट्रा के बीच छिड़ी हुई थी। क्योंकि शायद पौम्पई[83] को मारने में फैरो का हाथ था तो सीज़र इस बात से बहुत नाराज था।

क्लियोपैट्रा **7** ने इस बात का फायदा उठाना चाहा। वह सीज़र से मिलना चाहती थी। पर वह सीज़र से मिले कैसे। क्योंकि टोलेमी **13**[84] ने किसी के लिये भी अलैक्ज़ैन्ड्रिया[85] से बाहर जाने के सारे दरवाजे बन्द कर रखे थे। वहाँ से बाहर निकलना बहुत मुश्किल था।

---

[82] All these facts are not unknown – they are historical facts. But they are given here as her introduction and have been taken from the Web Site : http://defeaty.com/6-unbelievable-facts-about-cleopatra-you-probably-didnt-know/?utm_source=Internal&utm_campaign=internalca

[83] Pompey the Great – a king of Roman Republic which was replced by Roman Empire by Julius Caeser

[84] Ptolemy XIII was Cleopatra’s younger brother and later husband, the King of the then Egypt

[85] Alexandria was the capital and the important port town of Egypt on the coast of Mediterranean Sea

पर फिर भी वह सीज़र से मिली, कैसे? यह इसी की एक बहुत ही मज़ेदार कहानी कही सुनी जाती है। उसने सीज़र से मिलने के लिये अपने आपको टोलेमी के महल से चोरी से निकाल लिया था।

एक आदमी सीज़र के लिये एक कालीन की भेंट ले कर रोम जा रहा था। सो उसने अपने आपको उस कालीन में लपेटा और अलैक्ज़ैन्ड्रिया से बाहर निकल कर रोम चली गयी।

उस आदमी ने जब उस कालीन को सीज़र के दरबार में खोल कर दिखाया तो उसमें से तो एक लड़की निकली। सीज़र तो उस कालीन में एक इतनी सुन्दर लड़की को देख कर आश्चर्यचकित रह गया।

असल में तो वह आदमी खुद भी एक इतनी सुन्दर लड़की को उस कालीन में से निकलता देख कर आश्चर्यचकित रह गया था क्योंकि उसको भी यह पता नहीं था कि वह उसमें छिपी हुई थी।

बस उसके बाद से वह सीज़र की रखैल बन गयी और नौ महीने बाद उसने सीज़र के बेटे को जन्म दिया। उसका यह बेटा टोलेमी **15** बना और क्लियोपैट्रा **7** के बाद मिश्र का फैरो बना।

इसी लिये फैरो के साथ लड़ाई में सीज़र ने क्लियोपैट्रा का साथ देना निश्चय किया। **47** बीसी की नील नदी की लड़ाई में उसने फैरो टोलेमी **13** को हरा दिया। फैरो टोलेमी **13** नील नदी में डूब गया और सीज़र ने फिर क्लियोपैट्रा **7** को वहॉ की रानी बना दिया।

दोनों ने अपनी जीत की खुशियाँ नील नदी में जहाज़ पर मनायीं। उनके शाही जहाज़ के साथ 400 जहाज़ और मौजूद थे।

बाद में सीज़र को मिश्र के फैरो के ढंग से रहना सिखाया गया। सीज़र और क्लियोपैट्रा 7 की शादी नहीं हुई थी पर उससे उसके एक बेटा था – टोलेमी 15।

क्लियोपैट्रा 7 भी रोम के सीज़र विला में कई बार गयी जो रोम के बाहर टाइबर नदी[86] के उस पार था। क्लियोपैट्रा का रोम आना जाना सीज़र के दरबारियों को पसन्द नहीं था जबकि सीज़र को इस बात का बड़ा गर्व था कि क्लियोपैट्रा उसकी रखैल थी।

वह अक्सर उसको और उसके और अपने प्यार से पैदा हुए बेटे को ले कर शहर में घूमा करता था। उसके बच्चे का नाम सीज़ेरियन[87] था।

यहाँ तक कि उसने क्लियोपैट्रा की एक मूर्ति वीनस जैनेट्रिक्स[88] में भी बनवा दी थी जो रोम के अधिकारियों को बिल्कुल पसन्द नहीं थी। इसके तीन साल बाद ही 44 बीसी में सीज़र को मार दिया गया।

जिस समय जूलियस सीज़र को मारा गया था क्लियोपैट्रा वहीं रोम में थी। पर सीज़र की मौत के बाद क्लियोपैट्रा को जबरदस्ती रोम से बाहर निकाल दिया गया था।

[86] Tiber River is the main river of Italy.

[87] Caesarion – name of the son of Julius Caesar and Cleopatra 7. Later he was known as Ptolemy XV

[88] Venus Genetrix

10 अकबर दी ग्रेट[89]

यह ऐतिहासिक कहानी हमने तुम्हारे लिये एशिया के भारत देश के इतिहास से ली है। अकबर मुगल साम्राज्य के नम्बर में तो तीसरे राजा थे – पहला बाबर दूसरा हुमायूँ और तीसरा अकबर। पर बाबर और हुमायूँ ने तो केवल कुछ ही साल राज किया। असली मुगल साम्राज्य तो अकबर से ही शुरू होता है।

ये बहुत बड़े राजा थे और सम्राट अकबर या बादशाह अकबर के नाम से मशहूर हैं। अंग्रेजी में इनको "अकबर दी ग्रेट" कहते हैं।

इनका पूरा नाम जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर था पर यह खुद केवल अकबर के नाम से ही मशहूर हैं। क्योंकि यह सब धर्मों की इज़्ज़त करते था इसलिये इन्होंने कई हिन्दू लड़कियों से शादियाँ की जिनमें रानी जोधाबाई का नाम बहुत मशहूर है।

भारत में मुगल साम्राज्य की नींव बाबर ने **1526** में डाली थी। बाबर का बेटा हुमायूँ था और हुमायूँ का बेटा अकबर था। बाबर ने यहाँ **1526** एडी से **1530** एडी तक राज्य किया। फिर उसके बेटे हुमायूँ ने **1531** एडी से **1540** एडी तक राज्य किया।

1540 एडी में बाबर के लैफ्टीनैन्ट शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को हटा दिया तो हुमायूँ सिन्ध भाग गया। वहाँ जा कर उसने शादी कर

[89] Akbar the Great – the third ruler of Mugal Dynasty, after Babar and Humayun

ली और उसके अगले साल **15** अक्टूबर **1542** एडी को उमरकोट, सिन्ध, में अकबर का जन्म हुआ।

अकबर का पालन पोषण काबुल में उसके चाचा ताऊ आदि ने किया। वहाँ इनका समय एक अच्छा शिकारी और योद्धा बनने में गुजरा पर यह वहाँ पढ़ना लिखना नहीं सीख पाये। इसी वजह से यह अपनी सेना के किसी भी सिपाही से अच्छा घुड़सवार तो थे पर खुद बेपढ़े लिखे ही रह गये।

पर बेपढ़े लिखे होने की वजह से उसकी ज्ञान पाने की इच्छा कम नहीं थी। काम से छुट्टी पाने के बाद शाम को वह बहुत कुछ सुना करते थे। इनकी याद बहुत अच्छी थी।

1555 एडी में हुमायूँ फिर से हिन्दुस्तान आ गया पर कुछ महीने बाद ही उसकी मृत्यु हो गयी। अकबर तब तक बहुत छोटे थे तो बहराम खान उनकी तरफ से हिन्दुस्तान का राज्य सँभालता रहा।

हुमायँ की मृत्यु के बाद **1556** एडी में **13** साल की उम्र में अकबर को राजा घोषित कर दिया गया पर **1560** एडी तक जब तक वह **18** साल के हुए बहराम खान बराबर उनके साथ रहा।

अपने जीवन काल में इन्होंने एक धर्म चलाया – दीन इलाही। इन्होंने राजा विक्रमदित्य के दरबार की परम्परा नवरत्न को भी कायम रखा।

इनके दरबार में भी नवरत्न थे जिनमें गायक तानसेन, मन्त्री टोडरमल, राजा मानसिंह और हँसोड़ और मन्त्री बीरबल के नाम

बहुत मशहूर हैं। अकबर की बीरबल के साथ की तो बहुत सारी कहानियाँ मशहूर हैं[90] पर उनके अपने जीवन की कहानियाँ सुनने में कम आती हैं। यहाँ हम उनके जीवन की ऐसी ही कुछ कहानियाँ दे रहे हैं जो शायद तुम्हारे लिये नयी हों।

1 अकबर और चीता

बादशाह अकबर चीतों को प्रशिक्षण देने में बहुत होशियार थे। उनके पास बहुत सारे प्रशिक्षित चीते थे। एक बार जब वह 19 साल के थे तो वह मालवा से आगरा आ रहे थे। उनके साथ के आदमी उनसे काफी पीछे रह गये थे और वह आगे निकल आये थे।

रास्ते में उनको एक मादा चीता मिली तो उसने उनके ऊपर हमला करने की कोशिश की पर उन्होंने अपनी तलवार के एक ही वार से उसको मार दिया। जब उनके साथी वहाँ आये तो उन्होंने देखा कि राजा सुरक्षित रूप से उस मरे हुए जानवर के पास खड़े थे।

[90] You may read “Akbar Birbal Stories” in English on the Web Site : http://sushmajee.com/shishusansar/stories-birbal/index-birbal.htm or obtain it in Hindi from hindifolktales@gmail.com

2 अकबर और गायत्री मन्त्र

बादशाह अकबर के दरबार में उनके एक प्रिय मन्त्री थे बीरबल। ये दोनों अपनी प्रजा के बारे में जानने के लिये अक्सर अपने राज्य में वेश बदल कर घूमा करते थे।

एक दिन जब वे इस तरह से घूम रहे थे तो बादशाह ने एक ब्राह्मण को घर घर घर भीख माँगते देखा तो उन्होंने उसे बीरबल को भी दिखाया। बीरबल ने उसे देखा पर वह चुप रहे।

घर पहुँच कर बीरबल ने उस ब्राह्मण को अपने घर बुलाया और कहा — "तुम अपने खाने के लिये रोज केवल मुझसे भीख माँगा करो और इधर उधर भीख माँगने की बजाय तुम रोज तीन सन्ध्या[91] के समय **108** बार गायत्री मन्त्र का जाप किया करो।"

"ठीक है" कह कर वह ब्राह्मण अपने घर चला गया और अगले दिन से वह अपने रोज के खर्चे के लिये बीरबल से पैसे ले जाता था और रोज तीन सन्ध्या समय **108** बार गायत्री मन्त्र का जाप करता था।

कुछ दिन ऐसा करने के बाद उस ब्राह्मण को लगा कि क्यों न मन्त्र की गिनती **108** से बढ़ा कर **1008** कर दी जाये क्योंकि अब वह घर घर भीख माँगने तो जाता नहीं था तो उसके पास बहुत समय था। और उसके घर का खर्चा तो बीरबल के दिये हुए पैसे से चल ही रहा था।

---

[91] Three Sandhyaa times are – morning when the Sun rises, noon, and evening when the Sun sets.

उसके इस पूजा में लगे रहने से उसके पड़ोसियों में उसकी कद्र बढ़ गयी और लोग उसको खाना और पैसे देने के लिये उसके घर आने लगे। इससे उसका बीरबल के घर जाना कम होता गया और एक दिन बिल्कुल बन्द हो गया।

इसके अलावा उसके रोज के इस ध्यान से उसकी शक्तियाँ बढ़ती गयीं, उसका ज्ञान बढ़ता गया और उसकी शारीरिक सुन्दरता भी बढ़ती गयी। अब उसके पास और ज़्यादा लोग आने लगे और वह मशहूर भी होने लग गया।

बीरबल ने भी उसका नाम सुना तो वह उसके घर गये और उससे पूछा कि उसने उसके घर आना बन्द क्यों कर दिया। तो ब्रह्मण ने उनको सब बताया और बीरबल को सही समय पर सही रास्ता दिखाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

एक दिन बीरबल बादशाह अकबर से बोले कि एक बहुत बड़े संत शहर में आये हैं। अब बादशाह अकबर तो हर योग्य आदमी की इज़्ज़त करते थे सो उन्होंने उस योग्य आदमी को अपने दरबार में बुलवाया और उसको मान दिया।

बीरबल ने पूछा — "बादशाह सलामत क्या आपको इस संत की याद है?" पर अकबर को कुछ याद नहीं आया।

तब बीरबल ने उनको उस ब्राह्मण भिखारी की याद दिलायी जो कुछ समय पहले उनको घर घर भीख माँगता मिला था। बादशाह अकबर के मुँह से निकला — "अरे यह तो कितना बदल गया।"

2 अकबर और एक लड़की – कौन ध्यान में था?

बादशाह अकबर एक बहुत ही धार्मिक राजा थे। सच्चे मुसलमान होने के नाते वह रोज पाँच बार नमाज़ पढ़ते थे।

एक बार जब वह कहीं जा रहे थे तो उनके प्रार्थना करने का समय आया सो उन्होंने सड़क के किनारे अपना कपड़ा बिछाया और उस पर बैठ कर अपनी नमाज पढ़ने लगे।

अब हुआ यों कि एक लड़की ने एक खास समय पर अपने प्रेमी से मिलने का वायदा किया हुआ था। क्योंकि उसके प्रेमी ने उससे कहा था कि अगर वह उस समय तक नहीं आयी तो वह चला जायेगा क्योंकि उसको कहीं और भी जाना था।

लडकी को थोड़ी देर हो गयी थी सो वह दौड़ी दौड़ी चली जा रही थी। जब वह अपने प्रेमी से मिलने जा रही थी तो उसका पैर अकबर के उस कपड़े पर पड़ गया जिसके ऊपर बैठ कर वह अपनी नमाज पढ़ रहे थे।

अकबर को यह देख कर बहुत गुस्सा आया कि एक लड़की भागी भागी आयी और उनके पूजा के कपड़े के ऊपर से हो कर चली गयी। वह तो उसको देखते ही रह गये।

कुछ देर बाद जब वह लौटी तो उन्होंने उससे गुस्से में भर कर उससे कहा — "क्या तुमको दिखायी नहीं दे रहा था कि मैं यहाँ इस कपड़े पर बैठा हुआ अपनी पूजा कर रहा था? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि तुम मेरे इस कपड़े पर पैर रखो?"

लड़की कुछ अफसोस करती हुई बोली — "मुझे बहुत अफसोस है कि मैंने आपके कपड़े पर पैर रखा। असल में मुझे अपने प्रेमी से मिलना था। अगर मैं उससे मिलने के लिये समय पर नहीं पहुँचती तो वह चला जाता।

मुझे थोड़ी देर हो गयी थी सो मैं भागी भागी जा रही थी। भागते समय क्योंकि मैं अपने प्रेमी के ध्यान में इतनी मग्न थी कि मुझे आपकी यह चादर दिखायी ही नहीं दी।

हो सकता है कि मैं जल्दी में अपकी पूजा की चादर पर पैर रख कर चली गयी होऊँ पर ऐसा इसलिये हुआ कि मैं अपने प्रेमी को खोना नहीं चाहती थी। मेहरबानी कर के आप मुझे माफ कर दें। पर वैसे आप यहाँ सड़क के किनारे इस चादर पर बैठे कर क्या रहे थे?"

अकबर बोले — "मैं यहाँ अपनी पूजा कर रहा था।"

लड़की बोली — "अगर आप अपनी पूजा कर रहे थे तब आपको कैसे पता चला कि आपकी चादर पर किसी ने पैर रखा और वह भी मैंने ही आपकी चादर पर पैर रखा?

इससे ऐसा लगता है कि आप पूजा नहीं कर रहे थे। क्योंकि अगर आप अपनी पूजा कर रहे थे तो आपको कैसे पता चला कि आपके कपड़े पर कोई पैर रख कर चला गया और वह भी मैं ही आपके कपड़े पर पैर रख कर चली गयी। आप अपनी पूजा कर रहे थे या आप आने जाने वालों को देख रहे थे?"

उस छोटी सी लड़की के मुँह से यह सुन कर अकबर तो आश्चर्यचकित रह गये। वह जान गये कि उस लड़की का अपने प्रेमी के प्रति ध्यान उनकी अपनी पूजा के ध्यान से कहीं ज़्यादा भक्ति वाला था।

बादशाह अकबर के जीवन की यह घटना बताती है कि उस लड़की की अपने प्रेमी में ज़्यादा भक्ति थी बजाय अकबर के अपने अल्लाह की पूजा करने में।

क्योंकि उस लड़की को तो पता ही नहीं चला कि उसने अकबर की चादर पर अपना पॉव रखा भी या नहीं और बादशाह अकबर उस लड़की के इन्तजार में वहॉ बैठे रहे कि कब वह लड़की आये और कब वह उसको डॉटें।

ध्यान का मतलब है कि सब कुछ भूल कर केवल अपने इष्टदेव के बारे में सोचना। इधर उधर नहीं देखना।

3 अकबर और सूरदास जी

भारत के महाकवि सूरदास बादशाह अकबर के समय के हैं। उनकी शोहरत उस समय चारों तरफ फैली हुई थी। बादशाह अकबर ने भी उनकी शोहरत सुनी।

सूरदास जी अपने पद खुद ही लिखते थे और खुद ही गाते थे। क्योंकि वह अपने इष्टदेव के बारे में अपने आप ही पद लिखते थे इसलिये उनको वह बहुत ही मीठा गाते थे।

एक दिन तानसेन जो बादशाह अकबर के दरबार के बहुत ही अच्छे गवैये थे उन्होंने दरबार में सूरदास का लिखा हुआ एक पद गाया।

बादशाह अकबर को वह पद बहुत अच्छा लगा तो उन्होंने तानसेन से उस पद के बारे में पूछा। तानसेन ने बताया कि वह सूरदास जी का लिखा हुआ पद था और उसकी धुन भी उन्हीं की बनायी हुई थी।

अब जैसा कि तुम्हें मालूम है कि बादशाह अकबर तो सब धर्मों का आदर करते थे यह सुन कर उन्होंने सूरदास को अपने दरबार में बुलाया पर सूरदास ने उनका यह बुलावा नम्रतापूर्वक मना कर दिया। उन्होंने कहा कि मैं केवल अपने प्रिय कृष्ण के दरबार में ही गाता हूँ।

जब बादशाह अकबर ने यह सुना तो वह बिल्कुल भी नाराज नहीं हुए बल्कि उनका गाना सुनने के लिये मन्दिर में ही चले गये। वहाँ उनका गाना सुन कर वह इतने खुश हुए कि उन्होंने उनसे कहा कि जब भी उनको किसी चीज़ जरूरत हो तो वह उनसे माँग लें।

सूरदास जी बोले — "बस आप मुझसे अपने दरबार में आने के लिये न कहें बाकी सब ठीक है।"

बादशाह अकबर मुस्कुराकर बोले — "ठीक है।"

4 अकबर और तानसेन

बादशाह अकबर और तानसेन की यह कहानी बहुत मशहूर है। पता नहीं तुमने सुनी है या नहीं। अगर सुनी है तो इसकी याद ताजा करो और अगर नहीं सुनी तो पढ़ कर अपना ज्ञान बढ़ाओ। तानसेन बादशाह अकबर के दरबार में बहुत बड़े गवैये थे। वह उनके नवरत्नों में से एक थे।

तानसेन इतना बढ़िया गाते थे कि उनके गाने से आग लग जाती थी पानी बरस जाता था आदि आदि।

एक बार बादशाह अकबर ने तानसेन से जिद की कि वह उनको दीपक राग सुनायें जिससे आग लग जाती थी। असल में वह खुद अपनी ऑखों से तानसेन के गाने का असर देखना चाहते थे।

तानसेन ने उनको बहुत मना किया कि वह उनसे यह राग गाने की जिद न करें पर बादशाह अपने मूड में थे सो उन्होंने तानसेन की एक न सुनी और उनको दीपक राग गाने पर मजबूर कर दिया।

तानसेन उस राग को गाने के लिये इस शर्त पर तैयार हो गये कि उस राग को गाने के बाद जो कुछ भी होगा उसके लिये वह खुद जिम्मेदार नहीं होंगे। बादशाह तैयार हो गये और तानसेन ने गाना शुरू कर दिया।

तानसेन बड़े अच्छे मूड में गा रहे थे। गाना सुरीला था, स्वर मीठे थे, बादशाह भी उनके गाने को बड़ा आनन्द ले कर सुन रहे थे, दरबारी झूम रहे थे।

इतना मीठा गाना सुन कर बादशाह ने सोचा कि यह तानसेन हमको बेकार में ही डरा रहा था। कुछ तो हो नहीं रहा हम लोग तो इस गाने को कितने आनन्द से सुन रहे हैं।

कि कुछ ही देर में सब दरबारियों को गर्मी लगने लगी पर उन्होंने उस तरफ कुछ ध्यान नहीं दिया और गाना सुनने में ही तल्लीन रहे।

कुछ ही देर में यह गर्मी बढ़ गयी और उनको और ज़्यादा गर्म लगने लगा फिर भी सब तानसेन का गाना सुनते रहे। धीरे धीरे यह गर्मी बढ़ती रही। कुछ दरबारियों को तो यह गर्मी इतनी ज़्यादा लगी कि उन्होंने तो अपने कपड़े भी उतारने शुरू कर दिये। बादशाह भी कुछ बेचैन होने लगे।

तानसेन अभी भी मस्त हो कर गा रहे थे। गर्मी और बढ़ी तो दरबार में रखे लैम्प जलने शुरू हो गये। धीरे धीरे सारे लैम्प जल उठे। बादशाह अभी भी तानसेन के गाने के असर को पहचान नहीं पा रहे थे सो वह अभी भी तानसेन के गाने का आनन्द ले रहे थे।

बल्कि वह तो तानसेन के गाने के इस आश्चर्य को देख कर बहुत खुश थे कि तानसेन के गाने ने दरबार के लैम्प जला दिये थे। गर्मी बढ़ती रही और अब लैम्प के बाद उनके दरबार के दरवाजों पर लगे हुए परदे भी जलने लगे थे।

तानसेन को इस बात का बिल्कुल भी पता नहीं था वह तो बस अपनी धुन में गाये ही जा रहे थे।

जब दरबार के परदे जलने लगे तब बादशाह को कुछ होश आया और सबने एक दूसरे की तरफ देखना शुरू किया कि इस तरह से तो यह सारा दरबार ही जल जायेगा अब इसको कैसे बचाया जाये।

एक बहुत ही अक्लमन्द दरबारी ने बादशाह को सलाह दी — "हुजूर, तानसेन की बेटी भी इतना ही अच्छा गाती है। आप उसको यहाँ बुला लीजिये। अपने पिता की लगायी आग को केवल वही बुझा सकती है।"

बादशाह अकबर ने तुरन्त ही तानसेन की बेटी को बुलवा भेजा। उसने आ कर दरबार की जो हालत देखी तो तुरन्त ही उसने मेघ मल्हार राग गाना शुरू किया जिससे आग की गर्मी कम होने लगी, ठंडक बढ़ने लगी और कुछ ही देर में बादल आ कर बरसने लगे जिससे आग बुझ गयी।

उसके बाद बादशाह अकबर ने तानसेन को फिर कभी उनकी मर्जी के खिलाफ गाने के लिये नहीं कहा।

5 अकबर और हरिदास जी

तानसेन के साथ हुई इस घटना के बाद तो बादशाह तानसेन का सिक्का मान गये। उन्होंने तानसेन से पूछा कि तुम इतना अच्छा गाना कैसे गाते हो। तुमने इतना अच्छा गाना कहाँ से सीखा।

तानसेन बोले — "हुजूर अपने गुरू हरिदास जी से।"

बादशाह अकबर बोले — "तो चलो मुझे उनके पास ले चलो। मैं उनका गाना सुनना चाहता हूँ।"

सो तानसेन बादशाह को अपने गुरू हरिदास जी के पास ले गये। वहाँ जा कर बादशाह ने उनसे कुछ गाने की प्रार्थना की तो हरिदास जी ने उनको एक भक्ति गीत सुनाया। बादशाह उस गीत को सुन कर बहुत खुश हुए और वापस आ गये।

वापस आ कर उन्होंने तानसेन से कहा — "क्या बात है तानसेन तुम उतना अच्छा क्यों नहीं गाते जितना अच्छा वह गाते हैं?"

तानसेन बोले — "हुजूर, वह मेरे गुरू हैं और मैं उनका शिष्य हूँ।"

बादशाह बोले — "फिर भी। अगर तुमने उनसे सीखा है तो तुम भी तो उनके जैसा गा सकते हो।"

तानसेन बोले — "जरूर हुजूर, आप ठीक कहते हैं। मैं उनके जैसा गा तो सकता हूँ पर फिर भी मैं नहीं गा सकता। क्योंकि मैं आपको खुश करने के लिये गाता हूँ जो केवल एक बादशाह है जबकि मेरे गुरू भगवान को खुश करने के लिये गाते हैं जो बादशाहों के भी बादशाह हैं।

इन तरह हम दोनों के गाने में बहुत अन्तर है – मैं एक दुनियाँ के आदमी के लिये गाता हूँ जबकि वह एक अमर आदमी के लिये गाते हैं।" बादशाह यह सुन कर चुप रह गये।

6 अकबर और उसका बेटा

बादशाह अकबर के बहुत दिनों तक कोई सन्तान नहीं हुई थी। उन्होंने बहुत प्रार्थनाऐं कीं, बहुत सन्तों का आदर किया, बहुत पीरों की मन्नत मॉगी।

बहुत सारे पीरों में से एक पीर साहब थे सलीम चिश्ती। उन्होंने अकबर को आशीर्वाद दिया कि उनको बेटा जरूर होगा। सो जब अकबर की रानी को बच्चे की आशा हुई तो बादशाह अकबर फूले न समाये।

पर दुर्भाग्य से बच्चे के जन्म से कुछ दिन पहले ही उनको दक्षिण की ओर कोई युद्ध लड़ने के लिये जाना पड़ा। इस युद्ध को वह किसी भी तरह से रोक नहीं सकते थे और उनको अपने बच्चे के जन्म के बारे में जानना भी जरूरी था।

अब दोनों काम कैसे हों? उस समय में चिट्ठियॉ भी बहुत दिनों में पहुॅचती थीं। तार टेलीफोन तो थे ही नहीं। बादशाह अकबर क्या करें कैसे अपने बच्चे के जन्म की खबर पायें?

इसके लिये उन्होंने एक काम किया कि जिस रास्ते से वह दक्षिण गये थे उस रास्ते पर उन्होंने थोड़ी थोड़ी दूर पर एक एक नगाड़े वाला खड़ा करवा दिया।

उन्होंने हुक्म दिया कि जैसे ही लड़का हो तो उस रास्ते पर खड़ा हुआ पहला नगाड़े वाला नगाड़ा पीटेगा। उसको सुन कर दूसरा

नगाड़े वाला नगाड़ा पीटेगा और फिर दूसरे नगाड़े वाले की आवाज सुन कर तीसरा नगाड़े वाला नगाड़ा पीटेगा।

इस तरह वह आवाज आगे तक चलती चली जायेगी और बादशाह सलामत जहॉ भी होंगे उनको अपने बच्चे के जन्म की खबर वहीं मिल जायेगी। ऐसा ही हुआ और इसी तरह से बादशाह अकबर ने अपने बेटे जहॉगीर के जन्म की खबर पायी।

बादशाह अकबर ने अपने बेटे का नाम उस पीर के नाम पर सलीम रखा और उन पीर साहब के लिये अपने किले के पास दरगाह बनवा दी। आज भी आगरे के पास फतेहपुर सीकरी में सलीम चिश्ती की दरगाह है। बहुत सारे लोग तो वहॉ केवल बेटा पाने की मन्नत मॉगने जाते हैं।

यही सलीम बाद में जहॉगीर के नाम से मशहूर हुए।

7 अकबर और एक राजपूतनी

बादशाह अकबर हर साल दिल्ली में नौरोज़ का मेला लगवाते थे। उस मेले में कोई भी आदमी नहीं जा सकता था उसमें केवल स्त्रियॉ को ही जाने की इजाज़त थी।

पर बादशाह अकबर खुद उस मेले में जरूर जाते थे। अब क्योंकि आदमियों को उस मेले में जाने की इजाज़त नहीं थी इसलिये वह उसमें वेश बदल कर जाते थे यानी एक स्त्री के रूप में। जो स्त्री

उनको मुग्ध कर लेती उसे उनकी दासियॉ छल कपट से बादशाह की सेवा में ले आतीं।

एक बार उस नौरोज़ के मेले में महाराणा प्रताप की भतीजी यानी उनके छोटे भाई महाराजा शक्ति सिंह की बेटी भी आयी। उसका नाम बाई सा किरन देवी था। उसकी शादी बीकानेर के राजा महाराज पृथ्वीराज से हुई थी।

बाई सा किरन देवी बहुत सुन्दर थी सो अकबर ने जब उसको देखा तो वह अपने आप पर काबू नहीं रख सका। उसने अपनी दासियों से कहा कि वह उसको पकड़ कर उसके पास ले आयें। वे ले आयीं।

जैसे ही अकबर ने उसको छूने की कोशिश की कि किरन देवी ने अपनी कमर से कटार निकाली और अकबर को नीचे पटक कर उसकी छाती पर पैर रख कर कटार उसकी गरदन पर लगा दी और बोली — "अरे नीच तुझे मालूम नहीं है कि मैं कौन हूॅ। मैं उन महाराणा प्रताप की भतीजी हूॅ जिनके नाम से ही तेरी नींद उड़ जाती है। बोल तेरी आखिरी इच्छा क्या है।"

यह सुनते ही बादशाह अकबर का तो खून सूख गया। उन्होंने यानी हिन्दुस्तान के बादशाह ने तो यह कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि किसी दिन उनको किसी स्त्री के पैरों में पड़ कर अपनी जान की भीख मॉगनी पड़ेगी।

बादशाह अकबर तुरन्त बोले — “मुझे माफ कीजिये। मुझे आपको पहचानने में भूल हो गयी देवी।”

इस पर किरन देवी ने कहा — “आज के बाद दिल्ली में नौरोज़ का मेला नहीं लगेगा और तू कभी किसी स्त्री को परेशान नहीं करेगा।”

बादशाह अकबर ने हाथ जोड़ कर कहा — “आप जैसा कहती हैं वैसा ही होगा। आज के बाद फिर यह मेला कभी नहीं लगेगा।”

और उस दिन के बाद से नौरोज़ का मेला फिर कभी नहीं लगा। इस घटना का वर्णन गिरधर आसिया के लिखे हुए “सगत रासो” के पन्ना नम्बर **632** पर दिया हुआ है। बीकानेर के म्यूज़ियम में लगी एक पेंटिंग में भी इस घटना को एक दोहे के रूप में लिखा गया है —

किरन सिंहणी सी चढ़ी उर पर खींच कटार
भीख मॉगता प्राण की अकबर हाथ पसार

अकबर की छाती पर पैर रख कर खड़ी वीर बाला किरन की तस्वीर आज भी जयपुर के म्यूज़ियम में रखी हुई है।

इनकी मृत्यु **1605** में हुई थी।

11 बादशाह जहाँगीर[92]

इससे पहले तुमने बादशाह अकबर की कहानियाँ पढ़ीं। यह ऐतिहासिक कहानी भी भारत की ही है और उसी बादशाह अकबर के बेटे जहाँगीर की है। जहाँगीर का असली नाम सलीम था। जब वह राजा बना तब उसको जहाँगीर का नाम दे दिया गया था। यह **1569** में पैदा हुआ था और **1627** में इसकी मृत्यु हो गयी।

जहाँगीर की शादी नूरजहाँ से हुई थी। नूरजहाँ एक बहुत ही सुन्दर पढ़ी लिखी और होशियार लड़की थी। उसका असली नाम मेहरुन्निसा था। तुमको यह जान कर आश्चर्य होगा कि नूरजहाँ जहाँगीर की **20**वीं पत्नी थी पर वह उसको सबसे ज़्यादा प्यारी थी।

वह अपने पढ़े लिखे और होशियार होने के साथ साथ सब पर हुक्म चलाने में भी तेज़ थी। सारे मुगल साम्राज्य की रानियों में वह सबसे ज़्यादा होशियार और ताकतवर रानी थी।

उसके बारे में दो बातें बहुत मशहूर हैं। एक तो यह कि वह जहाँगीर के साथ बराबर दरबार में बैठती थी और उसके राजकाज में उसे सलाह देती थी।

और केवल सलाह ही नहीं देती थी बल्कि राज दरबार में फैसले भी अपने आप ही करती थी। खास कर के जब जबकि राजा कभी बीमार होते थे या दरबार में नहीं आते थे।

---

[92] Emperor Jehangir

और दूसरी यह कि उसने गुलाब के इत्र की खोज की थी। वह रोज एक ऐसे तालाब में नहाती थी जिसमें बहुत सारे गुलाब के फूल पड़े रहते थे।

एक बार उसने देखा कि उस तालाब के पानी में किसी तेल की बूँदें तैर रही हैं। उसने उन बूँदों को सूँघा तो उनमें से उसको गुलाब की खुशबू आयी। तो उसको लगा कि यह तो गुलाब का तेल है और उसने गुलाबों का तेल निकलवाया और उसको गुलाब के इत्र का नाम दिया।

यह भारत की अकेली रानी थी जिसके नाम के सिक्के चलाये गये थे।

1 जहाँगीर और नूरजहाँ

पर जहाँगीर ने नूरजहाँ से शादी कैसे की इसकी भी एक मजेदार कहानी है। नूरजहाँ अकबर की सेना के एक जनरल की बेटी थी।

उसकी शादी **17** साल की उम्र में **1594** में शेर अफ़गन से हो गयी थी जो उस समय बिहार का गवर्नर था। उसी समय जहाँगीर ने उसको देखा और उसके प्रेम में पड़ गया।

उसके **11** साल बाद **1605** में जब अकबर मर गया तो जहाँगीर राजा बन गया। और उसके दो साल बाद **1607** में शेर अफ़गन भी एक लड़ाई में मारा गया तो जहाँगीर ने नूरजहाँ से शादी का प्रस्ताव

रखा। चार साल के बाद **1611** में नूरजहॉ जहॉगीर से शादी करने के लिये राजी हुई।

कहते हैं कि जहॉगीर नूरजहॉ से उसकी पहली शादी से भी पहले से ही प्यार करता था पर अकबर उसकी शादी नूरजहॉ से नहीं करना चाहता था।

शेर अफ़गन की मौत के बाद जहॉगीर ने जूरजहॉ को अपनी मॉ की सेवा के लिये बुला लिया। वहॉ नूरजहॉ की मुलाकात जहॉगीर से महल के मीना बाजार में हुई और वहीं जहॉगीर ने उससे शादी का प्रस्ताव रखा और तभी दोनों की शादी हो गयी। नूरजहॉ तब **34** साल की थी।

नूरजहॉ से जहॉगीर के प्यार की पहली मुलाकात की कहानी कुछ इस तरह कही सुनी जाती है कि एक बार जहॉगीर अपने दोनों हाथों में दो कबूतर लिये जल्दी जल्दी कहीं जा रहा था।

बीच में उसको नूरजहॉ दिखायी दी तो उसने उन दोनों कबूतरों को नूरजहॉ को पकड़ाते हुए कहा — "ज़रा इन्हें पकड़ कर रखो मैं अभी आया।"

नूरजहॉ ने वे दोनों कबूतर पकड़ लिये और जहॉगीर उसको वे दोनों कबूतर दे कर चला गया। जब वह लौट कर आया तो उसने नूरजहॉ के हाथ में केवल एक ही कबूतर देखा।

उसने उससे पूछा — "अरे तुम्हारे हाथ में तो एक ही कबूतर है दूसरा कहॉ है? मैं तो तुमको दो कबूतर दे कर गया था।"

नूरजहॉ ने कहा — "वह तो उड़ गया।"

जहॉगीर के मुँह से निकला — "कैसे?"

नूरजहॉ ने तुरन्त ही दूसरा कबूतर उड़ा कर कहा — "ऐसे।"

बस जहॉगीर उसकी इसी भोलीभाली अदा पर फिदा हो गया था।

2 जहॉगीर और अनारकली

जहॉगीर और अनारकली के किस्से तो बहुत मशहूर हैं। इस पर कई फिल्में भी बन चुकी हैं पर इनमें कितनी सच्चाई है इसका पता नहीं हैं इसलिये इसकी कोई कहानी यहॉ नहीं दी जा रही है।

3 जहॉगीर और तुलसी दास जी

तुमने अकबर की कहानियों में पढ़ा था कि सूरदास जी अकबर के समय में थे। तुलसी दास जी भी उन्हीं के समय में थे। उसमें हमने अकबर और सूरदास जी की एक घटना दी थी यहॉ हम जहॉगीर और तुलसी दास जी की एक घटना दे रहे हैं।

तुलसी दास जी न केवल हिन्दुओं में ही मशहूर और लोकप्रिय थे बल्कि मुसलमानों में भी बहुत मशहूर और लोकप्रिय थे। जहॉगीर के कानों में भी उनकी शोहरत पड़ी तो उसने भी उनसे मिलना चाहा।

तुलसी दास जी उनसे मिलने के लिये आगरा गये तो बादशाह ने उनका बड़ा आदर किया और कहा — "मैंने सुना है कि आप चमत्कार करते हैं। आप हमें भी अपना कोई चमत्कार दिखाइये न।"

तुलसी दास जी बोले — "मैं कोई चमत्कार नहीं करता। सारी शक्तियॉ तो भगवान राम के पास हैं।"

पर बादशाह उनको वहॉ से जाने नहीं दे रहे थे जब तक कि वह उनको कोई चमत्कार नहीं दिखा देते।

अब तुलसी दास जी चमत्कार तो करते नहीं थे सो वह बेचारे चुपचाप बैठे रहे। यह देख कर बादशाह बहुत नाराज हो गये और उन्होंने तुलसी दास जी को सलीम गढ़, यानी ग्वालियर, की जेल में डलवा दिया।

तुलसी दास जी ने सोचा कि "अब तो सब कुछ आंजनेय यानी हनुमान जी के हाथ है। वही मुझे यहॉ से निकाल सकते हैं।"

बस उनका इतना सोचना था कि इतने में ही कहीं से बहुत सारे बन्दर महल में आ कर रानी के महल में जा कर शोर मचाने लगे और सबको तंग करने लगे। जब तक बादशाह ने तुलसी दास जी को उस जेल से नहीं छोड़ा तब तक उनको उन बन्दरों से छुटकारा नहीं मिल पाया।

इस तरह हनुमान जी ने तुलसी दास जी की रक्षा की। पता नहीं जहाँगीर को इस बात का पता चला या नहीं कि यह तो अपने में खुद ही एक बहुत बड़ा चमत्कार था।

12 महारानी अहिल्या बाई[93]

महारानी अहिल्या बाई भारत के मालवा राज्य की महारानी थीं। मालवा राज्य मध्य प्रदेश में आता है। इनका जन्म **1725** में हुआ था इनकी शादी खॉडेराव होलकर से **1733** में हुई थी। सन् **1795** में इनकी मृत्यु हो गयी थी।

खॉडेराव होलकर जी एक युद्ध में **1754** में मारे गये थे। इस प्रकार यह बहुत जल्दी ही विधवा हो गयी थीं यानी **21** साल की उम्र में ही। खॉडेराव की मृत्यु के **12** साल बाद खॉडेराव के पिता की भी मृत्यु हो गयी। उनकी मृत्यु के एक साल बाद इनको मालवा राज्य की महारानी बना दिया गया।

यह एक किसान की बेटी थीं और बेपढ़ी लिखी थीं। उस समय में लड़कियों को पढ़ाने लिखाने का प्रचलन नहीं था सो इनके पिता ने इनको पढ़ना लिखना सिखाया ही नहीं था।

एक बार खॉडेराव के पिता मल्हारराव होलकर जो बाजीराव पेशवा के यहॉ काम करते थे अहिल्या बाई के गॉव से गुजर रहे थे तो उन्होंने आठ साल की अहिल्या को एक रस्सी घुमा कर एक पत्थर फेंकते हुए देखा। उन्होंने देखा कि उनके उस पत्थर के मारने से तो एक शेर मर गया।

[93] Queen Ahilya Bai – the Queen of Malwa

यह देख कर मल्हारराव होलकर इनसे बहुत प्रभावित हुए और वे उसको अपने बेटे की बहू बना कर मालवा ले आये। **1733** में आठ साल की उम्र में उनकी शादी खॉडेराव होलकर से हो गयी थी।

अहिल्या बाई का एक बेटा था उसकी भी मृत्यु हो गयी थी सो पति, ससुर और पुत्र की मृत्यु के बाद महारानी अहिल्या बाई ही राज्य की रानी बनीं।

अहिल्या बाई के जीवन की एक घटना बहुत ही मजेदार है।

अहिल्या बाई खुद तो पढ़ी लिखी थीं नहीं पर एक बार उनके मन में गीता पढ़ने का विचार आया तो क्योंकि खुद तो वह पढ़ी लिखी थीं नहीं तो उन्होंने पंडितों से कहा कि वे उनको गीता पढ़ कर सुनायें।

पंडितों ने सोचा कि रानी जी तो बेपढ़ी लिखी हैं इनको गीता हम कैसे पढ़ कर सुनायेंगे और ये उसे क्या समझेंगी। ऐसा करते हैं कि इनको बहुत साधारण शब्दों में उसे समझा देते हैं।

सो उन्होंने गीता का पहला श्लोक पढ़ा और उसका अर्थ समझाया —

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेतः युयुत्सवः मामकाः पाण्डवैश्चैवः किम कुर्वत संजयः

पंडित बोले — "इस श्लोक का अर्थ है "धृतराष्ट्र बोले युद्ध की इच्छा रखने वाले मेरे और पांडु के पुत्रों ने धर्म के क्षेत्र कुरु क्षेत्र में क्या किया। हे संजय यह तुम मुझे बताओ।"

अहिल्या बाई ने उनको यह कह कर वहीं रोक दिया कि बस गीता खत्म हो गयी।

पंडितों को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि अभी तो धृतराष्ट्र ने केवल यही पूछा है कि "हे संजय मुझे बताओ कि युद्ध की इच्छा रखने वाले मेरे और पांडु के पुत्रों ने धर्म के क्षेत्र कुरु क्षेत्र में क्या किया।" और रानी जी कह रही हैं कि गीता खत्म हो गयी। अभी तो गीता शुरू भी नहीं हुई।

उनसे रानी जी से यह पूछे बिना नहीं रहा गया कि "रानी जी गीता तो अभी शुरू भी नहीं हुई और आप कह रही हैं कि गीता खत्म भी हो गयी। इस एक श्लोक से आपने क्या समझा?"

अहिल्या बाई बोलीं "इसी एक श्लोक में ही तो गीता का सार है

क्षेत्रे क्षेत्रे धर्मम् कुरु

इसका अर्थ है कि जीवन के जिस जिस क्षेत्र में भी मनुष्य हो उसको अपने उसी क्षेत्र के कर्म को करने का नाम धर्म है। यही गीता का सार है। पंडित लोग उनका यह जवाब सुन कर चकित रह गये।

अहिल्या बाई ने समाज के कई क्षेत्रों में सुधार किया – विधवा विवाह, स्त्रियों का घर से बाहर निकाल कर काम करवाना, कपड़ा गृह उद्योग विकास, संचार सेवा, गृहस्थी में हिंसा रोकना आदि।

X X X X X X X

गीता में जो चार लोग भाग ले रहे हैं उनमें दो रथी हैं और दो सारथी हैं — एक रथी और सारथी हैं धृतराष्ट्र और संजय जो महल में बैठे हैं और दूसरे रथी और सारथी हैं अर्जुन और श्री कृष्ण जो रणभूमि में खड़े हैं।

इन चार लोगों में भी जो रथी और सारथी महल में बैठे हुए हैं उनमें एक ऑख का अन्धा है और प्यार से अन्धा है जबकि दूसरे को दिव्य दृष्टि मिली हुई है।

उधर रणभूमि में जो रथी और सारथी खड़े हुए हैं उनमें से एक की सक्षम और सीमित दृष्टि है और दूसरे भगवान हैं जिनके पास सम्पूर्ण दृष्टि है।

गीता में परमात्मा का आत्मा से संवाद है। श्री कृष्ण परमात्मा हैं और अर्जुन आत्मा।

सारी आत्माऐं भगवान के संसार में हर समय मौजूद रहती हैं और हर समय उनके जीवन में किसी न किसी प्रकार का युद्ध चलता रहता है तो भगवान ने अर्जुन के द्वारा उन सबको यह सन्देश प्रेषित

किया है जिससे वे अपने जीवन की किसी भी गुत्थी को सुलझा सकें।

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी बाल गंगाधर तिलक ने भी यही कहा है कि जब जब मुझे अपने जीवन में कोई भी समस्या आती है तो मैं गीता खोल कर पढ़ लेता हूँ मुझे अपनी समस्या का समाधान मिल जाता है।

13 जौर्ज वाशिंगटन[94]

यह आज से करीब **230** साल पहले की बात है कि एक बहुत ठंडी कोहरे भरी सुबह को लड़ाई से परेशान सिपाहियों का एक झुंड सड़क के आर पार पड़े एक पेड़ को सड़क पर से हटाने की कोशिश कर रहा था।

वे सिपाही उसको खींचने और धक्का देने में लगे हुए थे ताकि वे उसे रास्ते से हटा सकें जबकि उनका औफीसर घोड़े पर बैठा देख रहा था। वह अपने घोड़े पर बैठा बैठा कभी उन पर चिल्ला भी रहा था और कभी उनको डॉट भी रहा था। पर वे बेचारे कितनी भी कोशिश कर रहे थे पर उस पेड़ को हटा नहीं पा रहे थे।

उसी जगह के पास एक और घुड़सवार खड़ा खड़ा यह सब देख रहा था। उसके बाल सफेद थे पर वह बहुत मजबूत दिखायी देता था। वह अपना घोड़ा सड़क के पास ले आया।

उसने औफीसर से पूछा — “औफीसर क्या बात है। क्या मामला है?”

औफीसर बोला “हमको अपनी कैनन इस सड़क से ले कर जानी है ओर तुम देख रहे हो कि इस पेड़ ने हमारा रास्ता रोका हुआ है। कैनन को सड़क के किसी भी तरफ से ले कर नहीं जाया जा

[94] A Leader Lends a Hand – a story about the 1st President of the USA, George Washington, 1789-1797, who is known as the “Father of the Nation” too. Taken from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=177

सकता क्योंकि उसके जाने के लिये सड़क के दोनों तरफ की जमीन बहुत मुलायम है और ये लोग यह पेड़ ही नहीं हटा पा रहे हैं।"

अजनबी ने पूछा — "तुम इनकी सहायता क्यों नहीं कर देते?"

"मैं इनकी सहायता क्यों नहीं कर सकता? तुम देख नहीं रहे कि मैं एक औफीसर हूँ यह काम तो इन्हीं का है मेरा नहीं।"

उस अजनबी ने जब यह सुना तो वह कुछ नाराज सा हुआ। पर फिर वह अपने घोड़े से उतरा और उन सिपाहियों में जा कर मिल गया। उसने उनकी सहायता की और वह पेड़ सड़क से एक तरफ को हटा दिया।

एक बार जब वह पेड़ सड़क से हट गया तो उस अजनबी ने अपने हाथ झाड़े अपने शाल से अपनी धूल साफ की और अपने घोड़े पर चढ़ गया।

घोड़े पर चढ़ने से पहले उसने औफीसर से कहा — "सर अगर आपके आदमियों को फिर से सहायता की जरूरत हो तो मुझे बुला लेना। मेरा नाम वाशिंगटन है – जनरल जौर्ज वाशिंगटन।"

औफीसर तो यह सुन कर हक्का बक्का रह गया। उसने तुरन्त उनको सैल्यूट मारा।

जौर्ज वाशिंगटन अमेरिका के पहले प्रेसीडैन्ट थे और अमेरिका के राष्ट्र पिता माने जाते हैं। इनका जन्म **1732** में हुआ था और ये **67** साल की उम्र में, **1799** में, दुनियाँ छोड़ गये। ये आठ साल तक अमेरिका के प्रेसीडैन्ट रहे – **1789** से **1797** तक।

नियमितता[95]

इनके जीवन की एक और घटना। यह घटना यह साबित करती है कि आदमी को अपने जीवन में कितना नियमित होना चाहिये। नियमितता जीवन में कितनी महत्वपूर्ण है।

इससे बहुत फायदे होते हैं। केवल अपना जीवन ही नियमित नहीं होता और केवल उसमें ही परेशानियाँ कम नहीं होतीं बल्कि उससे दूसरों को भी फायदा होता है।

एक बार जौर्ज वाशिंगटन ने अपने कुछ दोस्तों को तीन बजे खाना खाने के लिये बुलाया। साढ़े तीन बजे उनको आर्मी कमान्डरों की एक जरूरी मीटिंग में जाना था।

उनका नौकर जानता था कि वाशिंगटन साहब समय के कितने पाबन्द हैं। सो ठीक तीन बजे उसने खाना मेज पर लगा दिया और वाशिंगटन को बता दिया कि खाना मेज पर लग गया है। पर मेहमानों का कहीं पता नहीं था।

एक बार तो वाशिंगटन ने सोचा भी कि "अगर मेहमानों का इन्तजार न किया गया तो वे नाखुश हो जायेंगे पर अगर उनका इन्तजार किया गया तो वे अपनी आर्मी कमान्डरों की मीटिंग में नहीं जा पायेंगे।

"तो फिर अब मैं क्या करूँ? क्या मैं अपनी मीटिंग कैन्सिल करूँ? पर यह मीटिंग तो पूरे देश से सम्बन्धित है ऐसा में कैसे कर

---

[95] Taken from the Web Site : http://awgpskj.blogspot.ca/2017/02/blog-post_36.html

सकता हूँ? केवल अपने दो चार दोस्तों की खुशी पर मैं देश की भलाई को कुर्बान नहीं कर सकता।"

उनको लगा कि जब भगवान अपने कामों में कोई देर सबेर नहीं करता तो मुझे भी ऐसा नहीं करना चाहिये। सूरज रोज अपने समय पर ही निकलता है चाहे सर्दी हो या गर्मी या बारिश हो रही हो या बर्फ पड़ रही हो तो मुझे भी अपना काम समय पर ही करना चाहिये।

यही सोच कर उन्होंने मेहमानों का इन्तजार किये बिना ही यानी अकेले ही खाना खाना शुरू कर दिया। जब उनका आधा खाना खत्म हो गया तब उनके मेहमान आये।

मेहमानों को देर से आने का दुख भी हुआ और वे अपने आने से पहले वाशिंगटन के खाना खाना शुरू करने से नाखुश भी हुए पर क्या करते।

वाशिंगटन ने भी अपना खाना खाना जारी रखा और खाना खा कर अपनी मीटिंग में हिस्सा लेने चले गये। मेहमान भी किसी तरह मेजबान के बिना ही खाना खा कर अपने अपने घर चले गये।

जब वाशिंगटन साहब कमान्डरों की मीटिंग में पहुँचे तो उनको पता चला कि अगर वह समय पर नहीं पहुँचते तो अमेरिका के एक हिस्से में विद्रोह हो जाता। उन्होंने समय पर पहुँचने से देश को इस भयानक घटना के होने से बचा लिया गया।

बाद में जब मेहमानों को इस बात का पता चला तब तो उनके मन में वाशिंगटन के लिये जो नाराजगी थी वह सब धुल गयी। वे भी सोचने लगे कि सब काम अपने समय पर ही करने चाहिये। गलती उन्हीं की है जो वे समय पर नहीं पहुँचे। समय पर काम करने से बहुत से नुकसानों को रोका जा सकता है।

तो बच्चों ऐसे थे अमेरिका के पहले प्रेसीडैन्ट जौर्ज वाशिंगटन।

इनके बारे में एक बात और और वह यह कि ये अमेरिका के प्रेसीडैन्ट होते हुए भी कभी व्हाइट हाउस में नहीं रहे। व्हाइट हाउस यू ऐस ए के प्रेसीडैन्ट के रहने की जगह है। ऐसा कैसे हुआ?

ऐसा ऐसे हुआ कि जब ये प्रेसीडैन्ट बने तब तक यू ऐस ए के प्रेसीडैन्ट के रहने के लिये कोई जगह ही नहीं बनी थी। है न मजेदार बात।

14 अब्राहम लिंकन[96]

यह करीब 200 साल पहले की बात है कि एक लड़का अपने पिता और सौतेली मॉ की छाया में बड़ा हुआ। वे लोग लट्ठे के बने एक कमरे के घर[97] में जंगल के पीछे रहते थे।

इस लड़के को शहर में रहने का तो कभी मौका ही नहीं मिला था। इसके माता पिता भी बहुत गरीब थे सो इसको कपड़े भी बहुत अच्छे पहनने को नहीं मिलते थे।

यह लड़का अपनी सौतेली मॉ के हाथ के बनाये घर के बुने भूरे रंग के कपड़े पहना करता था और बजाय बढ़िया पाजामे के हिरन की खाल का बना पाजामा पहनता था।

इसको मौकेज़िन के जूते[98] पहनने को मिलते थे। जब वे फट जाते थे तो यह नंगे पैर घूमता रहता था। यह जिस तरीके से रहता था उस सबसे सबको ऐसा लगता था कि ये लोग बहुत गरीब हैं पर यह लड़का खुद अपने आपको बहुत अमीर समझता था।

---

[96] The Boy and the Book – a story of the 16th President of the USA – Abraham Lincoln (1809-1865) Taken from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=235

[97] Translated for the words "Log House"

[98] Moccasin shoes are considered very cheap shoes in US and are made of deer skin.

इसको बचपन से ही शारीरिक काम करने में अच्छा नहीं लगता था पर इसको पढ़ना लिखना कविता करना बहुत अच्छा लगता था।

एक बार इसके एक पड़ोसी ने इसको एक किताब पढ़ने के लिये दी। आज के समय में तो अगर तुम्हारे पास दसियों किताबें भी हैं तो शायद तुम अपने आपको अमीर न समझो या शायद उनको पढ़ो भी नहीं पर उस समय में अगर किसी के पास एक किताब भी होती थी तो लोग समझते थे कि वे कितने अमीर हैं। क्योंकि उस समय किताबें बहुत मँहगी हुआ करती थीं और उनका मिलना भी बहुत मुश्किल होता था।

इस लड़के को पढ़ने का बहुत शौक था और जब भी इसको मौका मिलता तो वह अवश्य पढ़ता। इसके पिता के पास न तो कोई किताब ही थी और न वह पढ़ता ही था।

हॉ इस लड़के की मॉ के पास कुछ किताबें थीं जो इसने पढ़ी थीं। वे किताबें इसने इतनी बार पढ़ीं कि वे इसको जबानी याद हो गयी थीं। इसका स्कूल वहॉ से किताब लेने के लिये बहुत दूर था इसलिये वहॉ से यह किताब ला कर पढ़ नहीं सकता था।

सो जब इसके पड़ोसी ने इसको एक किताब पढ़ने के लिये दी जो इसने पहले कभी पढ़ी नहीं थी तो इसको लगा कि यह तो बहुत अमीर हो गया है।

वह उस किताब को अपना दिन भर का काम खत्म कर के आग की रोशनी में पढ़ता था। उस किताब को यह कई रातों तक पढ़ता रहा और बार बार पढ़ता रहा।

एक रात उसने सोने से पहले वह किताब पढ़ कर अपने घर की दीवार में दो लट्ठों के बीच में बने एक छेद में रख दी और सोने चला गया।

पर इत्तफाक से उस रात बहुत बुरा बर्फ का तूफान आया। ठंडी हवा उन लट्ठों के बीच से हो कर बह रही थी सो वह किताब उससे खराब हो गयी।

कुछ लोग दूसरे की कोई चीज़ अगर खराब हो जाये तो चिन्ता नहीं भी करते हैं या फिर जब उसको लौटाते हैं तो उसके खराब होने कोई भी वजह बता देते है पर यह लड़का वैसा नहीं था।

यह लड़का उस किताब को अपने उस पड़ोसी के पास ले गया और उसे सब बताया कि क्या हुआ था।

फिर उसने उस किताब की कीमत चुकाने के लिये तीन पूरे दिन काम किया क्योंकि उन दिनों किताबें बहुत मँहगी हुआ करती थीं और मुश्किल से मिला करती थीं।

तीन दिन के बाद पड़ोसी ने वह किताब उसको रखने के लिये वापस दे दी। अब वह किताब उसकी थी। उसने उसको अपनी मेहनत की कमाई से खरीदा था। यह लड़का बाद में एक बहुत ही जिम्मेदार आदमी और दूसरों का विश्वासपात्र बन गया।

क्या तुम जानना चाहोगे कि वह किताब जो उसने इतनी मेहनत कर के खरीदी थी वह कौन सी किताब थी? वह अमेरिका के पहले प्रैसीडैन्ट जौर्ज वाशिंगटन[99] के बारे में एक किताब थी। वैसी किताब पढ़ कर वह खुद भी अमेरिका का प्रेसीडैन्ट बन गया था।

और यह लड़का कौन था? यह लड़का अब्राहम लिंकन था।

बड़ा हो कर पहले तो यह अमेरिका का एक बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ और वकील बना और फिर प्रेसीडैन्ट। यह अमेरिका का **16**वॉ प्रेसीडैन्ट था – **1861** से **1865** तक। इसका जन्म **12** फरवरी **1809** में अमेरिका के कैनटकी प्रान्त में हुआ था और इसको **14** अप्रैल **1865** में गुड फ्राइडे के दिन कत्ल कर दिया गया था।

इसके समय में देश में गुलामी की प्रथा अपने पूरे ज़ोर शोर पर थी सिवाय कुछ उत्तरी प्रान्तों के। और यह गुलामी की प्रथा के बहुत खिलाफ था। इसी आधार पर इसको अमेरिका का प्रेसीडैन्ट चुन लिया गया था।

[99] George Washington was the first President of USA from 1789 to 1797 – 8 years. In the US a President term is four years. He served as President for two terms – that is the maximum limit for a President. This book was “The Life of Washington” written by Weems.

15 ईश्वर चन्द्र विद्यासागर[100]

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर भारत में बंगाल के रहने वाले थे। इनका जन्म **1820** में हुआ था। इकहत्तर साल की उम्र में **1891** में इनकी मृत्यु हो गयी थी।

ये बंगाल की क्रान्ति के एक बहुत बड़े नेता थे। ये नेता होने के साथ साथ एक दार्शनिक, अध्यापक, लेखक, अनुवादक आदि और भी बहुत कुछ थे।

इनका अपना नाम ईश्वर चन्द्र बन्ध्योपाध्याय था और विद्यासागर इनको संस्कृत कौलिज से मिली उपाधि थी। ये बहुत सादा ढंग से रहते थे। इनके जीवन की एक घटना बहुत मशहूर है। यह घटना उनके बड़प्पन और नम्रता को बताती है।

एक बार ये रेलगाड़ी से कहीं से आ रहे थे तो रेलगाड़ी रुकने पर प्लेटफार्म पर उतरे। इनको लेने के लिये कुछ लोग आने वाले थे उनको आने में कुछ देर हो गयी सो ये उनका इन्तजार करने लगे।

और सवारियॉ भी उतर रही थीं। तभी एक आदमी एक डिब्बे से उतरा तो उसने एक सादा से आदमी को खड़े देखा तो उसने इनको कुली समझा और आवाज़ लगायी — "ए कुली इधर आओ।"

[100] Ishwar Chandra VIdyasagar

उन दिनों कुलियों की कोई यूनीफौर्म नहीं होती थी जिससे उनको पहचाना जा सकता। ईश्वर चन्द्र सादा से कपड़े पहने खड़े थे सो उस आदमी ने सोचा कि वह शायद कुली हों।

इसके अलावा उस आदमी ने ईश्वर चन्द्र विद्यासागर का नाम तो बहुत सुना था पर कभी उनको देखा नहीं था सो वह उनको पहचानता भी नहीं था। ये इतने सादा से रहते थे कि डिब्बे में से उतरती हुई सवारी ने उनको पहचाना नहीं और कुली समझ कर बुला लिया।

अब क्योंकि ये कुली तो थे नहीं सो इन्होंने उसकी आवाज़ की तरफ ध्यान भी नहीं दिया। जब इन्होंने एक बार में नहीं सुना तो उस सवारी ने इनको फिर बुलाया — "ए कुली इधर आओ।"

अबकी बार इनको लगा कि कोई इनको बुला रहा था सो ये उसके पास गये "जी आपने मुझे बुलाया?"

"हॉ भाई तुम्हीं को बुलाया। तुमको सुनायी नहीं पड़ता क्या? लो ज़रा मेरा यह सामान बाहर ले चलो।"

एक पल को तो ईश्वर चन्द्र सकपकाये पर फिर "जी" कह कर उन्होंने उसका सामान उठाया और स्टेशन से बाहर ले गये। बाहर ले जा कर उन्होंने उसका सामान गाड़ी में रख दिया और चलने लगे।

वह सवारी बोली — "अरे अपने पैसे नहीं लोगे क्या?" कह कर उसने उनके हाथ पर दो आने रख दिये।

ईश्वर चन्द्र ने दो आने के उस सिक्के को पहले तो अपने हाथ में उलटा पलटा फिर कुछ सोच कर उसे जेब में रख लिया।

तभी उनको लेने वाले लोग आ गये और बोले — "अरे हम आपको इतनी देर से ढूँढ रहे हैं आप कहाँ थे?"

"मैं ज़रा एक साहब का सामान रखवाने चला गया था।"

तब तक वह आदमी भी वहाँ से गया नहीं था। एक भीड़ को उस कुली के चारों तरफ इकट्ठा देख कर उसने अपनी गाड़ी वाले से पूछा "यह कौन है?"

"ये ईश्वर चन्द्र विद्यासागर हैं।"

"क्या? और मैंने इनसे अपना सामान उठवाया और दो आने दिये और ये उसे ले कर चल भी दिये? कितनी बड़ी गलती हो गयी मुझसे।" कह कर वह तुरन्त ही गाड़ी से नीचे उतरा और उनके पैरों पर गिर गया और उनसे माफी माँगने लगा।

उसने पूछा — "जब आप कुली नहीं थे तो आपने मेरा सामान उठाया ही क्यों और अगर उठाया तो फिर आपने पैसे क्यों लिये?"

ईश्वर चन्द्र बोले — "आप तो मुझे जानते नहीं थे। आपको अपना सामान उठवाने के लिये एक आदमी की जरूरत थी सो मैंने आपका सामान उठा दिया।

जहाँ तक पैसे लेने का सवाल है वह मेरी मजदूरी थी सो मैंने ले ली। अगर मैं नहीं लेता तो आप जिद करते। बात बढ़ती। लोग इकट्ठा हो जाते तो आप मुझे पहचान जाते। आपको शर्मिन्दगी

उठानी पड़ती। इस सबसे बचने के लिये मैंने पैसे रख लिये और चुपचाप चल दिया। अगर ये लोग समय पर न आ जाते तो शायद आपको कभी यह पता ही न चलता कि मैं कौन था।"

वह आदमी यह सुन कर बहुत शर्मिन्दा हुआ।

तो ऐसे थे ईश्वर चन्द्र विद्यासागर।

16 पंडित मोतीलाल नेहरू[101]

पंडित मोतीलाल नेहरू अंग्रेजों के जमाने के एक बहुत बड़े वकील थे और स्वतंत्रता सेनानी थे। ये सात पीढ़ियों से देहली में रहते चले आ रहे थे। इनके पिता देहली के आखिरी कोतवाल थे।

ये बहुत अच्छे वकील थे और अपना मुकदमा बहुत अच्छे से पेश करते थे। इनकी आवाज बहुत अच्छी थी और जिस ढंग से ये बोलते थे वह हर एक के मन को मोह लेता था। ये पढ़ते बहुत थे। ये जहाँ भी बैठ जाते थे वहीं सबके आकर्षण का केन्द्र बन जाते थे। ये आजाद भारत के पहले प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के पिता थे।

इनके जीवन की एक घटना हम यहाँ तुम्हें बताते हैं।

एक बार पंडित मोतीलाल नेहरू को कचहरी में एक जज ने "तू" कह कर सम्बोधित कर दिया जो मोतीलाल जी को बहुत बुरा लगा तो उन्होंने इस बात की जज से शिकायत की कि उनको मोतीलाल से इस तरह बात नहीं करनी चाहिये थी।

जज को कुछ समझ में तो आया कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये था पर फिर भी उसको यह भी याद आया कि हिन्दुओं में भगवान और माँ को भी तू कह कर सम्बोधित किया जाता है।

---

[101] Pandit Motilal Nehru (1861-1931) – father of Pandit Jawaharlal Nehru.

जब यह बात उसने मोतीलाल से कही कि "तुम्हारे यहॉ तो भगवान और मॉ को भी तू कह कर सम्बोधित किया जाता है तो अगर मैंने तुम्हें तू कह दिया तो इसमें मुझसे कौन सी बड़ी भारी गलती हो गयी।"

मोतीलाल जी विनम्र शब्दों में बोले — "आप ठीक कह रहे हैं माई लौर्ड पर हमारा आपका ऐसा कोई रिश्ता नहीं है।"

जज बेचारे को स्वीकार करना पड़ा कि उससे वाकई गलती हो गयी थी।

17 जौर्ज बर्नार्ड शा[102]

इनका पूरा नाम जौर्ज बर्नार्ड शा था मगर ये बर्नार्ड शा के नाम से ही जाने जाते हैं। इनका जन्म आयरलैंड के डबलिन शहर[103] में **1856** में हुआ था। बीस साल की उम्र में, **1876** में, ये लन्दन, इंगलैंड चले गये थे।

ये इंगलैंड के बहुत जाने माने नाटक लिखने वालों में से थे। इन्होंने **60** से भी ज़्यादा नाटक लिखे हैं। **1925** में इनको साहित्य में नोबिल प्राइज़ भी मिला था।

इनके जीवन की एक बहुत ही सुन्दर घटना यहाँ प्रस्तुत है —

एक बार इनके घर कोई इनसे मिलने आया। उसको बाहर के कमरे में बिठाया गया। वह आदमी पहली बार इनके घर आया था तो उस कमरे को चारों तरफ से देखने लगा।

इतने में बर्नार्ड शा आ गये। दुआ सलाम के बाद बातें हुईं। बातों बातों में उस आदमी ने कहा — "मैंने सुना था कि आपको फूल बहुत पसन्द हैं पर मुझे यहाँ आपके कमरे में कोई फूल या फूलों का गुलदस्ता दिखायी नहीं दे रहा।"

बर्नार्ड शा बोले — "मुझे तो बच्चे भी बहुत पसन्द हैं पर मैं उनके सिर काट कर तो नहीं सजा लेता।"

[102] George Bernard Shaw – born in Dublin, Ireland, in 1856 and died in 1950.

[103] Dublin City of Ireland country

18 पंडित मदन मोहन मालवीय[104]

पंडित मदन मोहन मालवीय जी का जन्म उत्तर प्रदेश के अलाहाबाद शहर में **1861** में हुआ था। ये मूल रूप से मालवा प्रदेश[105] के रहने वाले थे इसी लिये ये मालवीय कहलाये। इनका पूरा नाम महामना पंडित मदन मोहन मालवीय था। ये एक बहुत बड़े स्वतंत्रता सेनानी थे।

इनके जीवन की सबसे मुख्य घटना **1916** में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना है। यह एशिया की सबसे बड़ी रेसीडैन्शियल यूनिवर्सिटी है।

इनकी मृत्यु **1946** में हुई थी और इनको इनकी मृत्यु के बाद **2014** में भारत रत्न की उपाधि मिली थी जो भारत में किसी भी नागरिक के लिये सबसे बड़ी उपाधि है।

शिक्षा से ये एक वकील थे पर **1913** में इन्होंने देश की सेवा के लिये अपनी हाईकोर्ट की वकालत छोड़ दी थी।

वह मालवीय जी ही थे जिन्होंने "सत्यमेव जयते" के नारे को लोकप्रिय बनाया। ये शब्द उन्होंने उपनिषद से लिये थे।

---

[104] Mahaamanaa Pandit Madan Mohan Malviya

[105] Present Madhya Pradesh (MP)

कहते है कि जब मालवीय जी बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी की स्थापना कर रहे थे तो इन्होंने त्रिवेणी के संगम पर इसकी घोषणा की थी और सबसे चन्दा माँगा था।

इनका कहना था कि इसके लिये कोई भी रकम कम नहीं थी। कोई भी कितना भी कम धन या चीज़ दान में दे सकता था। तो उस समय वहाँ खड़ी एक बुढ़िया ने इनको सबसे पहला चन्दा एक पैसा दिया था जिसको इन्होंने सिर माथे लगा कर स्वीकार किया था।

चन्दा माँगते माँगते ये हैदराबाद के निज़ाम के पास पहुँचे और वहाँ जा कर यूनिवर्सिटी के लिये चन्दा माँगा पर निज़ाम ने इनको कुछ भी देने से साफ मना कर दिया और इनकी तरफ गुस्से से अपना एक जूता फेंक कर मारा।

मालवीय जी उनके इस व्यवहार पर बिल्कुल गुस्सा नहीं हुए और वह जूता ले कर बाहर चले गये।

उन्होंने उस जूते को बाजार में बेचने की कोशिश की ताकि उससे मिले पैसे को वे यूनिवर्सिटी में लगा सकें पर निज़ाम के जूते को खरीदने की हिम्मत किसमें थी सो अन्त में निजाम ने खुद ने अपने ही जूते को भारी मूल्य दे कर उनसे खरीद लिया। और फिर वह पैसा मालवीय जी ने यूनिवर्सिटी में लगा दिया था।[106]

[106] Taken from the Web Site : http://indiatoday.intoday.in/story/bharat-ratna-awardee-madan-mohan-malaviya-5-unknown-facts/1/408614.html

कुछ का कहना है कि जब ये हैदराबाद के निजाम से चन्दा मॉगने गये थे और उन्होंने इनको चन्दा देने से इनकार कर दिया तो इत्तफाक से उसी समय एक सेठ की मृत्यु हो गयी थी। उसकी शव यात्रा में उसके घर वाले उसके शव के पीछे पीछे पैसों की बौछार करते हुए चल रहे थे।

तभी मालवीय जी के दिमाग में कुछ आया तो वे भी उस शव यात्रा में शामिल हो गये और लोगों के फेंके हुए पैसे बटोरने लगे। उनको ऐसा करते देख कर लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ तो उन्होंने उनसे पूछा कि वे ऐसा क्यों कर रहे थे।

वे बोले "क्या करूँ। मैं तो तुम्हारे निज़ाम से चन्दा मॉगने गया था पर उन्होंने मुझे कुछ भी देने से मना कर दिया। अब अगर मैं खाली हाथ बनारस लौटूँगा और वे लोग मुझसे पूछेंगे कि हैदराबाद से क्या लाये हो तो मैं क्या जवाब दूँगा। निज़ाम का दान न सही शव यात्रा का दान ही सही।"

तो ऐसे थे मालवीय जी।

19 स्वामी विवेकानन्द[107]

स्वामी विवेकानन्द जी का जन्म **12** जनवरी **1863** एडी को भारतवर्ष के बंगाल प्रान्त के कलकत्ता शहर में हुआ था। इनका जन्म दिन भारत में "राष्ट्रीय युवा दिन"[108] के रूप में मनाया जाता है।

इनकी मृत्यु बहुत छोटी उम्र में ही हो गयी थी, **1902** में जब ये केवल **39** साल के थे। इन्होंने पहले से ही अपने बारे में यह कह रखा था कि ये **40** साल तक भी ज़िन्दा नहीं रहेंगे।

इनका असली नाम नरेन्द्रनाथ दत्ता था और ये रामकृष्ण परमहंस जी के मुख्य शिष्यों में से एक थे। इनकी शिक्षा दीक्षा ईश्वर चन्द्र विद्यासागर इन्स्टीट्यूट में हुई थी। इन्होंने भारत में रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। पश्चिमी दुनियाँ में वेदान्त दर्शन और योग फैलाया।

ये अपनी एक स्पीच जो इन्होंने अमेरिका में शिकागो में **11** सितम्बर **1893** को दी थी "अमेरिकन बहिनों और भाइयो..." के लिये सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध हैं। यह दिन "वर्ल्ड ब्रदरहुड डे"[109] के नाम से मनाया जाता है।

---

[107] Swami Vivekanand. Although it was not required to write so much about his life which is available at other places too, but without it his true nature could not be revealed. So please excuse me for that.

[108] National Youth Day

[109] World Brotherhood Day

इसके बाद तो इन्होंने जनता में और प्राइवेट में सैंकड़ों लेक्चर दिये। ये बहुत ही विद्वान थे और इनकी याद बहुत अच्छी थी।

एक बार इन्होंने रामकृष्ण से अपने गरीब परिवार के लिये आर्थिक सहायता की प्रार्थना की तो रामकृष्ण परमहंस ने कहा "तुम खुद ही जा कर काली माँ से प्रार्थना करो।" ये वहाँ तीन बार गये पर धन के लिये प्रार्थना नहीं कर सके।

अन्त में ये वहाँ से केवल ज्ञान और भक्ति माँग कर ही लौट आये। उसके बाद इन्होंने दुनियाँ छोड़ दी और रामकृष्ण परमहंस के शिष्य बन गये। **1885** में रामकृष्ण परमहंस को गले का कैंसर हो गया और **1886** में उनकी मृत्यु हो गयी।

इसके बाद विवेकानन्द जी एक घूमते हुए साधु की ज़िन्दगी गुजारने लगे। वह या तो पैदल घूमते थे या फिर दूसरों द्वारा खरीदे हुए टिकिट से रेल से। पाँच साल तक वह भारत में खूब घूमे।

ये जब **1893** में शिकागो गये थे तब केवल विवेकानन्द के नाम से ही गये थे। स्वामी का नाम उनको खेतरी के अजीत सिंह[110] ने दिया था।

पहले तो इनको वहाँ उस मीटिंग में जाने की इजाज़त ही नहीं मिली बड़ी मुश्किल से इनको वहाँ "मिशनरी" के नाम से सम्मिलित

[110] Ajit Singh of Khetari, Rajasthan

किया गया। मगर वहाॅ जा कर ये "गेरुआ साधु"[111] के नाम से मशहूर हो गये।

इस पर वहाॅ के अखबारों ने लिखा कि "कैसे एक मिशनरी को इतनी बड़ी धार्मिक कौनफ़ैरेन्स में शामिल होने की इजाज़त दी गयी?"

पर इसके बाद तो उन्होंने दो साल तक अमेरिका और यूके के विभिन्न हिस्सों में बहुत सारे लैक्चर दिये। इस व्यस्तता ने उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर डाला।

इसी बीच उनको आयरलैंड की एक स्त्री मिल गयी – मारगरेट ऐलिज़ाबैथ नोबिल[112]। वह सिस्टर निवेदिता के नाम से इनकी शिष्या बन गयी। और भी बहुत सारे विदेशी इनके शिष्य बन गये। जब विदेश से ये भारत लौटे तो सिस्टर निवेदिता इनके साथ भारत आ गयी।

संसार के बहुत बड़े बड़े लोगों ने इनकी बहुत तारीफ की है। इनका एक स्मारक कन्या कुमारी के पास हिन्द महासागर के बीच में एक छोटी सी पहाड़ी पर बनाया गया है जहाॅ लोग नाव से आते जाते हैं।

तो ऐसे थे स्वामी विवेकानन्द जी। आज हम इन्हीं के जीवन की कुछ अजीबोगरीब घटनाऐं तुमको बताने जा रहे हैं। उनके

[111] Translated for the words "Orange Monk"

[112] Margaret Elizabeth Noble – his disciple Sister Nivedita's former name

जीवन की तो बहुत सारी घटनाऐं हैं पर यहाँ हम केवल कुछ घटनाऐं ही दे रहे हैं जो हमने तुम्हारे लिये कई जगहों से इकट्ठी की हैं।

1 बहादुर और निडर विवेकानन्द

यह तब की बात है जब नरेन आठ साल के थे। वह अपने एक दोस्त के घर जाया करते थे। उसके घर में एक चम्पा का पेड़ लगा हुआ था। चम्पा के फूल शिव जी को बहुत पसन्द हैं। इत्तफाक से चम्पा के फूल नरेन को भी बहुत पसन्द थे।

उनको उस चम्पा के पेड़ से उलटे लटकने में बहुत अच्छा लगता था सो वह अक्सर उस पेड़ से उलटे लटक जाया करते थे।

उस दोस्त के घर में एक बूढ़ा था जिसको कम दिखायी देता था और वह उनके दादा के बराबर की उम्र का था। एक दिन जब नरेन उस पेड़ से उलटे लटके हुए थे तो उस बूढ़े ने उनकी आवाज पहचान ली।

इस डर से कि कहीं बच्चा पेड़ से गिर न जाये उन्होंने नरेन से कहा कि वह उस पेड़ पर न चढ़ा करे।

नरेन ने पूछा — “क्यों?”

उन्होंने जवाब दिया — “इस पेड़ पर एक ब्रह्म राक्षस[113] रहता है जो रात को सफेद कपड़े पहन कर बाहर घूमता है।”

[113] Brahm Raakshas is a spirit of a Brahman who has done some evil thing in his life or has misused his knowledge

नरेन ने पूछा — "और वह करता क्या है?"

"वह उन लोगों की गर्दन तोड़ देता है जो पेड़ पर चढ़ते हैं।"

नरेन ने हॉ में सिर हिलाया और मुस्कुराये। बूढ़ा भी मुस्कुराता हुआ वहॉ से चला गया। उसके जाते ही नरेन फिर से उस पेड़ पर चढ़ गये और उलटे लटक गये।

नरेन का दोस्त भी वहीं खड़ा था वह चिल्लाया — "नरेन उतरो वहॉ से। दादा जी कह रहे थे कि अगर तुम इस पेड़ पर इस तरह से चढ़ोगे तो वह ब्रह्म राक्षस तुम्हारी गर्दन तोड़ देगा।"

नरेन ज़ोर से हॅसे और बोले — "तुम बहुत ही बेवकूफ हो। जो कोई कुछ कहता है तुम सबकी बातों पर विश्वास कर लेते हो। अगर मैं इसी तरह से सबकी बातों पर विश्वास करने लगता तो मेरी गर्दन तो कभी की टूट गयी होती।"

2 विवेकानन्द और एक व्यापारी

विवेकानन्द रेल से तभी सफर करते थे जब इनको कोई टिकिट खरीदवा देता था नहीं तो ये पैदल ही चलते थे। अक्सर ये भूखे भी रह जाते थे क्योंकि इनके पास खाने के लिये भी पैसे नहीं होते थे।

एक बार ये रेल से जा रहे थे कि एक व्यापारी भी इनके साथ यात्रा कर रहा था। उसने अपने खाने के लिये कई अच्छी अच्छी चीज़ें मॅगवायीं। स्वामी जी को भी भूख लगी थी और वे थके हुए भी थे पर उन्होंने उससे खाना नहीं मॉगा।

यह देख कर व्यापारी ने उनका मजाक उड़ाते हुए उनसे कहा "तुम तो बहुत ही आलसी हो। तुम ये गेरुआ कपड़े इसलिये पहनते हो क्योंकि तुम काम नहीं करना चाहते। तुम्हें कौन खाना खिलायेगा। किसी को क्या पड़ी हो अगर तुम मर भी जाओ तो।"

उसी समय इत्तफाक से एक मिठाई बेचने वाला उधर आ निकला। उसने स्वामी जी को देखते ही उनको कुछ मिठाई दी और बोला "आज सुबह ही मैंने आपको सपने में देखा। भगवान राम उसमें खुद आपको मुझसे मिलवा रहे थे।"

यह सुन कर वह व्यापारी शर्म से पानी पानी हो गया।

3 विवेकानन्द की रेल की एक और घटना

एक बार विवेकानन्द रेल में सफर कर रहे थे। उनके हाथ में एक घड़ी थी जो उनको किसी राजा ने भेंट में दी थी।

उसी डिब्बे में कुछ लड़कियाँ भी सफर कर रही थीं। विवेकानन्द के पहनावे को देख कर उनको हँसी आ रही थी सो उन्होंने उनके साथ कुछ शरारत करने की सोची।

उन्होंने विवेकानन्द से कहा — "हमें अपनी घड़ी दे दो नहीं तो हम पुलिस को बुलायेंगे और कहेंगे कि तुमने हमें छेड़ा है।"

विवेकानन्द ने यह सुन कर बहाना बनाया कि वह सुन नहीं सकते और जो कुछ उनको कहना है वह किसी कागज पर लिख कर दे दें। सो उन्होंने वह सब एक कागज पर लिख कर दे दिया।

कागज ले कर विवेकानन्द बोले — “अब तुम किसी भी पुलिस को बुला सकती हो क्योंकि अब शिकायत मुझे करनी है।”

यह सुन कर तो वे लड़कियाँ बहुत ही शर्मिन्दा हुईं और उनसे माफी माँगने लगीं।

4 विवेकानन्द और एक प्रोफेसर

एक बार विवेकानन्द और एक गोरा प्रोफेसर दोनों एक मेज पर बैठ कर खाना खा रहे थे कि गोरा प्रोफेसर विवेकानन्द से बोला — “एक सूअर और एक चिड़िया दोनों एक मेज पर बैठ कर खाना नहीं खा सकते।”

विवेकानन्द जी ने बड़ी शान्ति से कहा — “यह तो आप ठीक कह रहे हैं। मैं ही गलती पर था। मैं यहाँ से उठ जाता हूँ।” और यह कह कर वह एक दूसरी मेज पर जा कर बैठ गये।

उस गोरे प्रोफेसर का मतलब था कि विवेकानन्द जी सूअर थे और वह चिड़िया पर विवेकानन्द जी ने इसे दूसरे रूप से साबित कर दिया। वह वहाँ से उठ कर चले गये यानी कि वह चिड़िया थे सो तुरन्त ही उड़ गये। अब केवल सूअर ही वहाँ बैठा रह गया।

यह देख कर प्रोफेसर बहुत गुस्सा हुआ। उसने सोचा कि वह उसे कक्षा में देख लेगा। कुछ दिन बाद कक्षा में एक टैस्ट हुआ तो उस प्रोफेसर ने विवेकानन्द जी की कापी पर “ईडियट” लिख कर उनकी कापी उन्हें वापस कर दी।

विवेकानन्द जी ने उसे देखा तो वे प्रोफेसर के पास पहुँचे और सरलता से प्रोफेसर से कहा — "सर। आपने इस पर अपने हस्ताक्षर तो कर दिये पर आपने ग्रेड तो दिये ही नहीं।" प्रोफेसर ने गुस्से में भर कर झटके से विवेकानन्द के हाथों से उनकी कापी छीन ली।

अब तो प्रोफेसर का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच चुका था। उसने कक्षा में सब विद्यार्थियों से पूछा — "अगर तुम सब लोग कहीं जा रहे हो और रास्ते में तुम्हें दो थैले पड़े मिल जायें जिनमें से एक में ज्ञान भरा हो और दूसरे में पैसा तो तुम कौन सा थैला उठाओगे?"

सब विद्यार्थियों ने प्रोफेसर की आशा के अनुकूल एक ही जवाब दिया कि वे ज्ञान से भरा थैला उठायेंगे। प्रोफेसर उनके जवाब सुन सुन कर बहुत खुश था क्योंकि उसे लग रहा था कि उसका पढ़ाना सफल रहा कि तभी विवेकानन्द जी बोले — "मैं तो पैसे का थैला उठाऊँगा।"

यह सुन कर प्रोफेसर को फिर से बहुत गुस्सा आ गया। उन्होंने गुस्से में पूछा — "तुम ऐसा क्यों करोगे विवेकानन्द मैं तो ज्ञान वाला थैला उठाऊँगा।"

विवेकानन्द फिर सरलता से बोले — "सर। जिसके पास जो चीज़ नहीं होती वह वही चीज़ उठाता है। मेरे पास ज्ञान तो है पर पैसा नहीं है सो मैं तो पैसे वाला थैला ही उठाऊँगा न।"

जिसका दूसरा मतलब था कि "तुम्हारे पास ज्ञान नहीं है इसलिये तुम ज्ञान का थैला उठाओगे।"

विवेकानन्द का यह जवाब प्रोफेसर को पगला देने के लिये काफी था।

5 विवेकानन्द का इम्तिहान

जब विवेकानन्द पहली बार देश से बाहर जा रहे थे – शिकागो, तो उनकी माँ ने उनका इम्तिहान लेने की सोची कि वह वहाँ जाने के लिये तैयार थे या नहीं। सो उन्होंने उनको घर बुलाया।

वहाँ उन्होंने माँ के हाथ का स्वादिष्ट खाना खाया। माँ ने उनको खाना खाने के बाद फल खाने को दिये तो उन्होंने चाकू से काट कर फल खाये। फल खाने के बाद माँ ने उनसे चाकू वापस माँगा तो विवेकानन्द ने उनको नम्रता से चाकू वापस दे दिया।

विवेकानद की माँ बोली — "बेटा तुम इम्तिहान में पास हो गये। मैं तुमको दिल से आशीर्वाद देती हूँ कि तुम अपनी विदेश यात्रा में सफल हो।"

विवेकानन्द को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा "पर आपने मेरा इम्तिहान कैसे लिया माँ। मेरी तो समझ में ही नहीं आया?"

माँ ने कहा "बेटे जब मैंने तुमसे चाकू माँगा तो मैंने देखा कि तुमने मुझे चाकू कैसे दिया। तुमने उसका फल अपने हाथ में पकड़ कर उसका हैन्डिल मुझे दिया जिससे मुझे उसको अपने हाथ में लेते समय कोई नुकसान न पहुँचे।

इसका मतलब यह है कि तुमने मेरा कितना ख्याल रखा कि उस चाकू का फल कहीं मेरे हाथ में न लग जाये इसलिये तुमने उसका फल अपने हाथ में पकड़ कर मुझे उसका हैन्डिल दिया।

और इसका यह मतलब भी है कि तुम अपने से ज़्यादा दूसरों का ख्याल रखते हो क्योंकि इस तरह से वह फल तुम्हारे हाथ में भी लग सकता था। पर तुमने अपने हाथ की बजाय मेरे हाथ का ख्याल रखना ज़्यादा ठीक समझा।

आदमी को ऐसा ही होना चाहिये कि वह अपने मुकाबले में दूसरे का ख्याल ज़्यादा रखे तभी वह सफल हो सकता है।"[114]

6 विवेकानन्द भारतीय स्त्रियों के हाथ मिलाने पर

जब विवेकानन्द जी अमेरिका और इंगलैंड में लैक्चर देने के सिलसिले में चक्कर लगा रहे थे तो एक आदमी ने उनसे पूछा कि "भारत की स्त्रियाँ पुरुषों से हाथ क्यों नहीं मिलातीं?"

विवेकानन्द जी ने जवाब दिया — "हम अपनी स्त्रियों की बहुत इज़्ज़त करते हैं जैसे कि आप लोग अपने राजा रानी की करते हैं। वे हमारे घर की रानियाँ होती हैं। जैसे आपके यहाँ की रानियाँ दूसरे पुरुषों से हाथ नहीं मिलातीं ऐसे ही हमारे घरों की रानियाँ भी दूसरे पुरुषों से हाथ नहीं मिलातीं।"

[114] Some people attribute this incident to his Guru's wife Sharda Devi not to his own mother. That seems logical too.

7 विवेकानन्द शिकागो में

विवेकानन्द की याद का एक उदाहरण। विवेकानन्द जब शिकागो में रह रहे थे तो अक्सर वे लाइब्रेरी जाया करते थे और वहाँ से बहुत सारी किताबें ले आया करते थे फिर उनको अगले दिन वापस कर दिया करते थे।

एक दिन वहाँ की लाइब्रेरियन ने उनसे कहा — "जब आप इतनी सारी किताबें एक दिन में पढ़ नहीं सकते तो फिर आप इतनी सारी किताबें ले कर ही क्यों जाते हैं?"

विवेकानन्द बोले — "मैं हर किताब का हर पन्ना पढ़ता हूँ। ऐसा आपको कैसे लगा कि मैं इतनी सारी किताबें नहीं पढ़ सकता?"

लाइब्रेरियन बोली — "बस ऐसे ही। मुझे विश्वास नहीं हुआ।" तो उन्होंने उससे कहा कि अगर वह चाहे तो उनका इम्तिहान ले ले।

लाइब्रेरियन ने एक किताब उठायी उसका एक पन्ना खोला और उसमें से एक जगह से कुछ पढ़ कर उनसे पूछा कि वहाँ उसके आगे और क्या लिखा था। विवेकानन्द ने वह वाक्य ठीक वैसे ही दोहरा कर उसको बता दिया कि वहाँ क्या लिखा था।

बाद में लाइब्रेरियन को समझ में आया कि विवेकानन्द की याद बहुत अच्छी थी।

8 विवेकानन्द जापान में

एक बार स्वामी विवेकानन्द जापान गये। वहाँ उनको कोई एक खास फल खाना था। उन्होंने उसको वहाँ बहुत ढूँढा पर ढूँढने पर भी उनको वह कहीं दिखायी नहीं दिया। उन्होंने कहा कि शायद यह फल यहाँ होता ही नहीं होगा।

एक लड़के ने यह सुन लिया तो वह दौड़ा दौड़ा गया और एक बालटी भर कर वह फल ले आया जिसको वह ढूँढ रहे थे और उनसे कहा — "अब यह कभी नहीं कहना कि यह फल जापान में नहीं मिलता।[115]

9 विवेकानन्द और अलवर के महाराजा

एक बार विवेकानन्द राजस्थान में अलवर के महाराजा के पास देश की कुछ समस्याओं पर बात करने गये। इत्तफाक से अलवर के महाराजा मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी थे।

सो जब वह उनसे धर्म और विश्वासों पर बात कर रहे थे तो महाराजा ने मूर्ति पूजा के बारे में कुछ शक जाहिर किया और उसके बारे में कुछ व्यंग्य भी किया।

विवेकानन्द ने महाराजा के मन्त्री को महाराजा की एक तस्वीर दी और पूछा कि — "क्या तुम ऐसा कर सकते हो?"

---

[115] Taken from the Web Site : https://www.quora.com/What-are-some-famous-stories-about-Swami-Vivekananda

और फिर कहा कि वह उस पर थूके।

पूरे कमरे में चुप्पी छा गयी किसी को यही समझ में नहीं आया कि वह इस बात पर क्या करे।

तब स्वामी जी ने कहा "हालाँकि वह तुम्हारे पास ही खड़े हैं और तुम उनके ऊपर नहीं थूक रहे हो फिर भी तुम्हारे हृदय में उनके लिये एक भावना है एक इज़्ज़त है कि क्योंकि महाराज खुद उस तस्वीर में खड़े हैं इसलिये तुम उनके ऊपर नहीं थूक सकते।

इसी तरह से जब एक हिन्दू किसी मूर्ति की पूजा करता है तो वह यह नहीं कहता कि — "ओ मूर्ति मैं तुम्हारी पूजा कर रहा हूँ।"

वह तो बस उसमें बसे हुए भगवान की पूजा करता है और उसका किसी भी प्रकार से अनादर न तो खुद कर सकता है और न ही किसी और को करने दे सकता है।"

20 महात्मा गॉधी[116]

महात्मा गॉधी का जन्म भारत देश के गुजरात प्रान्त में काठियावाड़ में **1869** में हुआ था और **30** जनवरी **1948** को **79** साल की उम्र में नाथूराम गोडसे ने इनको तीन गोली मार कर इनकी हत्या कर दी थी। ये स्वतंत्रता सेनानी थे और इनको भारत का राष्ट्र पिता भी कहा जाता है।

ये गीता के मानने वाले थे और सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त पर चलने वाले थे। इसी अहिंसा के बल पर इन्होंने अंग्रेजों से भारत को उनकी गुलामी से आजाद कराया था।

महात्मा नाम इनको दक्षिण अफ्रीका में **1914** में दिया गया था। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गॉधी था।

इनके पास एक बकरी थी ये उसी का दूध पीते थे और बहुत सादा सा शाकाहारी खाना खाते थे। इनकी बकरी का नाम निर्मला था। ये हाथ के कते धागे के बुने कपड़े की धोती पहनते थे और ऊपर से एक चादर ओढ़ते थे।

स्वतंत्रता के सम्बन्ध में ये कई बार जेल गये। ऐसे तो इनके जीवन की कई घटनाऐं हैं पर नीचे लिखी हुई घटना बहुत ही नीतिवान और असामान्य है।

---

116 Mahatma Gandhi

एक बार जब ये जेल में थे तो वहॉ इनको अखबार पढ़ने के लिये मना कर दिया था ताकि बाहर की खबर पढ़ कर ये भड़कें नहीं।

इनके किसी साथी ने बाहर से किसी तरह इनको कोई बहुत ही मुख्य खबर बताने के लिये एक अखबार का टुकड़ा इनके खाने के साथ इनके पढ़ने के लिये भेजा।

वह आदमी जेल में आया और उस अखबार के टुकड़े में लिपटा हुआ खाना उनको दे कर चला गया। गांधी जी ने खाना खा लिया और अखबार का टुकड़ा फेंक दिया।

बाद में पूछने पर पता चला कि गांधी जी ने अपने सत्य का पालन करने के लिये उस अखबार के टुकड़े को तो देखा भी नहीं था पढ़ना तो दूर।

उन्होंने कहा — "जब मुझे अखबार पढ़ने को मना है तो मैं अखबार कैसे पढ़ सकता हूँ?"

इसे कहते हैं अनुशासन। अनुशासन न तो दूसरों के कहने से आता है और न ही दूसरों के अपने ऊपर नजर रखने से होता है। उसको अपने मन से ही आना चाहिये।

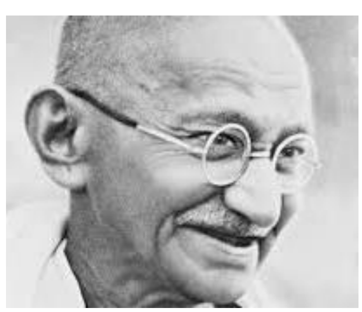

21 कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी[117]

कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी के ऐम मुंशी के नाम से ज़्यादा मशहूर हैं। इनका जन्म **1888** में भारत के गुजरात प्रान्त में हुआ था। तिरासी साल की उम्र में**, 1971** में**,** इनकी मृत्यु हो गयी।

ये शिक्षा से वकील थे और स्वतंत्रता सेनानी थे। बाद में इनका रुझान साहित्य की तरफ हो गया तो इन्होंने गुजराती और अंग्रेजी में कई रचनाऐं कीं। **1952–1957** तक ये उत्तर प्रदेश के राज्यपाल भी रहे।

इनके जीवन की एक घटना मिलती है जिससे लगता है कि ये बहुत गरीब थे और इनको पढ़ने में बहुत मुश्किलें आयीं पर फिर भी इन्होंने अपनी पढ़ाई नहीं छोड़ी।

मुंशी जी को पढ़ने की बहुत इच्छा थी पर इनका परिवार बहुत गरीब था। तो इन्होंने सोचा कि कहीं बाहर जा कर ही कुछ पैसा कमाया जाये और पढाई भी की जाये। सो किसी तरह इन्होंने अपने परिवार से उस समय **20** रुपये लिये और किराये का इन्तजाम कर के बम्बई आ गये।

---

117 Kanhaiyalal Maniklal Munshi – taken from the Web Site : http://awgpskj.blogspot.ca/2017/03/blog-post_84.html

उन दिनों बम्बई में रहने की जगह के पॉच रुपया महीना लगते थे। यह तो इनको लिये बहुत ज़्यादा थे सो इन्होंने कुछ और गरीब छात्र ढूँढ लिये और चार लोगों ने मिल कर एक कमरा ले लिया।

इसी तरह से खाने का भी इन्तजाम कर लिया गया। अकेले आदमी के लिये खाना पकाना तो बहुत मँहगा पड़ता सो इन्होंने एक ढाबा ढूँढ लिया जिसमें कई लोगों का खाना पकता था। ये भी उसी में खाना खाने लगे जो इनको बहुत सस्ता पड़ता था।

लेकिन स्कूल में तो दाखिला लेना ही था उसमें तो कोई बचत हो नहीं सकती थी पर इनको एक लाइब्रेरी मिल गयी जहॉ से इनको किताबें लेने की बहुत आसानी हो गयी। इस लाइब्रेरी का सदस्य बनने के लिये भी इनको केवल एक रुपया ही देना पड़ता था।

इस तरह से किसी तरह से इन्होंने अपनी पढ़ाई आगे बढ़ायी। अपनी इसी मेहनत और लगन से ये आगे चल कर उत्तर प्रदेश के राज्यपाल तक बन गये।

22 आचार्य विनोबा भावे[118]

विनोबा भावे का जन्म भारत के गुजरात प्रान्त में **1895** में हुआ था और **1982** में इन्होंने दुनियाँ छोड़ दी। ये महात्मा गांधी की तरह अहिंसा के पुजारी थे और अपने भूदान आन्दोलन[119] के लिये बहुत मशहूर हैं।

इनके जीवन की एक साधारण सी पर एक महत्वपूर्ण घटना हम यहाँ दे रहे हैं।

इनके परिवार के साथ कोई न कोई बड़ा या रिश्तेदार या फिर कोई बालक हमेशा ही रहता था। और उसको घर के सदस्य की तरह से ही समझा जाता था।

घरों में कई बार खाना बच जाता है और विनोबा की माँ खाना फेंकने के बिल्कुल खिलाफ थीं तो उस बचे हुए खाने को घर के लोग मिल जुल कर बाँट कर खा लिया करते थे।

पर अक्सर ही विनोबा की माँ विनोबा को वह बासी खाना दे देती थीं और उस साथ में रहने वाले को ताजा खाना देती थीं।

विनोबा जी ने यह देखा तो एक दिन उनसे कहा — “माँ तुम कहती हो कि तुम सबको एक सा देखती हो पर ऐसा नहीं है। तुम

---

[118] Aachaarya Vinoba Bhave – an incident of his life adapted from the Web Site : http://awgpskj.blogspot.in/2017/02/blog-post_98.html

[119] Supporter of Non-violence and Bhoo-Daan (donation of land) movement

सबको एक सा नहीं देखतीं। तुम उसको तो हमेशा ताजा खाना ही देती हो और मुझे बासी खाना देती हो।”

मॉ बोली — “हॉ बेटा ऐसा ही कुछ है। तू मुझे अपना लगता है और वह मुझे मेहमान जैसा लगता है तो उसको मैं बासी खाना कैसे दे सकती हूॅ। मेहमान को तो हमेशा अच्छे तरीके से ही रखना चाहिये न।

कष्ट या तकलीफ तो हम अपने आपको या अपनों को ही दे सकते हैं सो वह मैं या तो अपने आपको देती हूॅ या फिर तुझे दे देती हूॅ। जिस दिन मेरा यह भेदभाव छूट जायेगा उस दिन मैं उसको भी बासी खाना देने लायक हो जाऊॅगी।”

विनोबा जी की समझ में आ गया और फिर उन्होंने इस बात को अपने जीवन का एक अंग बना लिया।

Books in History Series

1. **Lone Country of Thirteen Months. 12 articles. 168 p.**
   तेरह महीनों का अकेला देश

2. **Our Great People. 22 people. 164 p.**
   हमारे महान लोग

3. **Beginnings of the Books. 12 books. 148 p.**
   पुस्तकों के आरम्भ की कहानियॉ

4. **Our Great Scientists. 12 scientists. 64 p**
   हमारे महान वैज्ञानिक

5. **One Event Changed the Life. 9 people. 64 p.**
   जिनके एक घटना ने जीवन बदले

6. **Lobo's Ethiopia of 1625.**
   1625 का लोबो का इथियोपिया

7. **Birth of Proverbs. 23 proverbs. 134 p**
   कहावतों का जन्म

8. **Stories of Birbal. 25 stories. 80 p.**
   बीरबल की कहानियॉ

9. **Raja Rasalu.**
   राजा रसालू

शीवा की रानी मकेडा, देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
राजा सोलोमन, देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ

Updated in 2022

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022